गौरव घोष

संगठन में ही शक्ति है।

Gaurav Ghosh

भारत में रामराज्य क्यों और कैसे?

-प्रो. श्रीधर पंत

जलस्रोतों की मौत

-पंकज शर्मा

प्राचीन देवी मंदिर में डकैती

महाभारत के बाद भारत के विभिन्न राजवंशों के राजागण

क्या सर्वोच्च न्यायालय की टिप्पणी प्रामाणिक है?

आरक्षण का नया पिटारा

-संजय गुप्त

धर्म परिवर्तन के बाद पति की जायदाद में पत्नी का हक नहीं

हिन्दू-मुस्लिम रिश्तों की महागाथा

-संतोष तिवारी

बाबरी विध्वंस कोई बड़ी घटना नहीं

-वहीदुद्दीन

सल्तनत काल में प्रशासनिक सेवाओं में हिन्दुओं की नियुक्ति

-पूजा सिंह

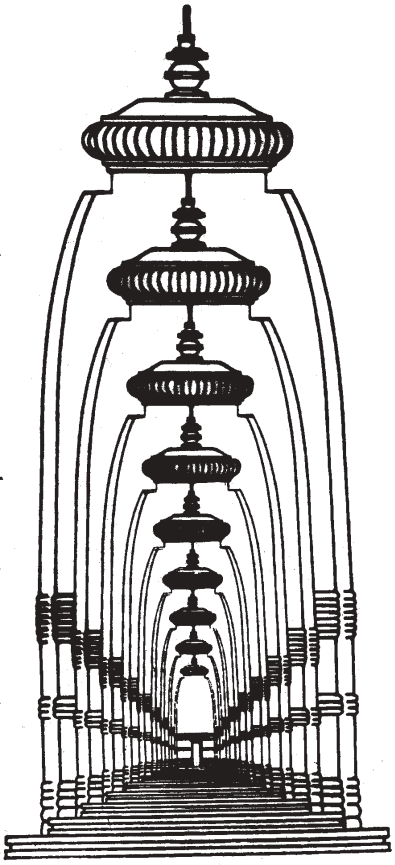

Bowled over by Jamaat

-Nadeem F. Paracha

Building Pakistan

-Nadeem F. Paracha

Hussain must not get away

-A Surya Prakash

Indian calendar more accurate

-Rakesh Ranjan

Beyond a two-notions theory

-Mubarak Ali

Hindu and Greek civilisations

-MSN Menon

Sino Indian Eco Balance Sheet

-Ashwani Mahajan

Holy Cow

Diary of Events, Select Articles Book Reviews and Political Notes

आषाढ़ 2067 वि. युगाब्द 5112 जून 2010	द्विमासिक **सांस्कृतिक गौरव संस्थान पत्रिका**	**वर्ष 12** **अंक 2**

संरक्षक

श्री श्रीश चन्द्र दीक्षित
मुख्य परामर्शदाता
पूर्व सांसद् व पूर्व पुलिस महानिदेशक

श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल
राष्ट्रीय प्रधान
पूर्व सांसद (राज्यसभा), पूर्व पुलिस महानिदेशक

मे.ज.(से.नि.) विश्वास स. जोगलेकर
राष्ट्रीय कार्यकारी प्रधान

संपादक

प्रो० सतीश चन्द्र

संपादक मंडल

डॉ. महेश चन्द्र
देवेन्द्र मित्तल, रामाश्रय उपाध्याय, प्रो० श्रीधर पन्त, डॉ. रामशरण गौड़

प्रकाशक व मुद्रक

देवेन्द्र मित्तल *(उपप्रधान)*

प्रकाशन स्थान
3308, सेक्टर-डी-3 वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

SUBSCRIPTION RATE

Inland	:	Life Rs. 1000/-
		Annual 125/-
Overseas	:	Life US$ 100
		Annual US$ 10
Per copy	:	£1 $1.50, IRs 20

ADVERTISEMENT TARIFF

Outer Cover	**:**	**Rs.**	**15000/-**
Inner Cover	**:**	**Rs.**	**12,000/-**
Full Page	**:**	**Rs.**	**10,000/-**
Half Page	**:**	**Rs.**	**5,000/-**

Payable by MO/Bank Draft/Crossed Cheque in the name of
Sanskritik Gaurav Sansthan
3308- Sector-D, Vasant Kunj,
New Delhi-110070

मुद्रण स्थान
एक्सेलप्रिन्ट, सी-36, फ्लैटिड फैक्टरीज़ कॉम्पलैक्स, झण्डेवालान्, नई दिल्ली-110 055

गौरव घोष
GAURAV GHOSH

द्विमासिक
BI-MONTHLY

वर्ष 12 अंक 2 **विषय सूची** **ज्येष्ठ-आषाढ़ 2067 वि. जून 2010**

संपादकीय – आवरण 2
भारत में रामराज्य क्यों और कैसे? *-प्रो. श्रीधर पंत* 2
जलस्रोतों की मौत *-पंकज शर्मा* 4
मंदिरों पर कब्ज़े से रोष 5
प्राचीन देवी मंदिर में डकैती 5
महाभारत के बाद भारत के विभिन्न राजवंशों के राजागण 6
संस्थान के नवीनतम प्रकाशन - पुस्तक समीक्षा 7
क्या सर्वोच्च न्यायालय की टिप्पणी प्रामाणिक है ? 8
आरक्षण का नया पिटारा *-संजय गुप्त* 9
मुसलमानों के लिए एनसीएम ने मांगा आरक्षण 10
कुछ तड़प-कुछ झड़प *-राजेन्द्र जिज्ञासु* 10
धर्म परिवर्तन के बाद पति की जायदाद में पत्नी का हक नहीं 11
पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 13 लोगों पर राष्ट्रद्रोह का मामला 11
सिकुड़ती सरकार लुटती जनता *-मुद्राराक्षस* 12
हिन्दू-मुस्लिम रिश्तों की महागाथा *-संतोष तिवारी* 13
बाबरी विध्वंस कोई बड़ी घटना नहीं : वहीदुद्दीन 14
सल्तनत काल में प्रशासनिक सेवाओं में हिन्दुओं की नियुक्ति 15
पाठकों के पत्र, प्रधानमंत्री के नाम खुला पत्र, शोक संदेश 16

Bowled over by Jamaat ***-Nadeem F. Paracha*** 17
Building Pakistan ***-Nadeem F. Paracha*** 18
Hussain must not get away ***-A Surya Prakash*** 19
Indian calendar more accurate, say experts ***-Rakesh Ranjan*** 20
Holy Cow 21
Beyond a two-notions theory ***-Mubarak Ali*** 22
Hindu and Greek civilisations -A comparative study ***-M.S.N.Menon*** 23
A Strand in Sino Indian Eco Balance Sheet ***-Ashwani Mahajan*** 23
Diary of Events, Select Articles, Book Reviews and Political Notes 24-37

लेखों आदि में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं, सम्पादक मण्डल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है

OWNER : SANSKRITIK GAURAV SANSTHAN
Phone : 26195368, 26181315 E-mail <sgsdelhi05@gmail.com>
संस्थान की वेबसाइट देखें :- <www.hindusthangaurav.com>

अगर हिन्दू 'आतंकवादी' होता ....

हिन्दुओं का चिंतन दुनियाभर में सर्वश्रेष्ठ है। हिन्दुओं में सहनशीलता तो कूट-कूट कर भरी है। सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना के चलते भोजन से पूर्व गाय, कुत्ते और कौवे के लिए अंश निकाला जाता है। अपनी रोटी दूसरों को खिला देना ही इनकी संस्कृति है। अपनी दया और सहिष्णुता के कारण हिन्दुओं को कई बार कमज़ोर भी समझ लिया जाता है। अहिंसा में विश्वास रखने वाले हिन्दुओं पर हज़ारों वर्षों से अत्याचार हो रहे हैं। पाकिस्तान में हिन्दू और सिख अल्पसंख्यकों पर अमानवीय अत्याचार हो रहे हैं। बंगलादेश और कुछ अन्य देशों में तो हिन्दुओं पर अत्याचार की कहानी पुरानी है।

(x x x x x छोड़ दिया गया भाग)

न तो भारत के हिन्दू संगठन पाक में हिन्दू-सिखों पर अत्याचार के खिलाफ आवाज़ बुलंद करते हैं और न ही तथाकथित धर्मनिरपेक्ष सरकार। **कांग्रेस सरकार ने हमेशा बहुसंख्यक हिन्दुओं को बदनाम करने का षड्यंत्र रचा और वोटों की खातिर दूसरों को गले लगाया।** कांग्रेस के सिपहसलार वोट बैंक के लिए ही हिन्दू संगठनों से जुड़े चंद सिरफिरे लोगों की करतूतों के कारण इसे 'हिन्दू आतंकवाद' करार दे रहे हैं। **ऐसा करके कांग्रेस पूरे हिन्दू समाज को अपमानित कर रही है** जबकि कांग्रेस नेता ऐसे बयान देते नहीं थकते कि आतंकवादी केवल आतंकवादी होता है, उसका कोई धर्म नहीं होता। मुस्लिम आतंकवादियों के कारण पूरे समाज को कठघरे में खड़ा नहीं किया जा सकता तो फिर कुछ कट्टरपंथियों की कारगुजारी के कारण हिन्दू आतंकवाद का दुष्प्रचार क्यों?

पाकिस्तान कश्मीरी अवाम के मानवाधिकारों का मुद्दा बार-बार उठाता है, जबकि पाक अधिकृत कश्मीर में रह रहे कश्मीरियों का कितना बुरा हाल है, वहाँ किस प्रकार अत्याचार ढहाये जा रहे हैं, इस पर भारत सरकार मौन क्यों है? **भारत सरकार और भाजपा से देश के हिन्दुओं को कोई उम्मीद नहीं। आडवाणी, जसवंत ने जिन्ना का गुणगान तो किया लेकिन पाकिस्तान के हिन्दुओं की बात कभी नहीं की।**

इस राष्ट्र को जितना नुक्सान कांग्रेस और भाजपा ने पहुँचाया है, उतना किसी ने नहीं पहुँचाया। बची-खुची कसर कम्युनिस्टों ने पूरी कर दी। अपने हितों के लिए हिन्दुओं को खुद एकजुट होना होगा।

'पंजाब केसरी' दिल्ली, दिनांक 18 जुलाई 2010 से साभार

अगर हिन्दू आतंकवादी होता तो - पंजाब केसरी, दिल्ली के संपादक श्री अश्विनी कुमार के अनुसार आज पाकिस्तान का नामोनिशान मिट गया होता।

भारत में पाकिस्तान से अधिक मुसलमान नहीं रह रहे होते।

देश में मुसलमान और ईसाई कभी उच्च पदों पर नहीं बैठे होते।

(पंजाब केसरी, दिल्ली, दिनांक 18 जुलाई 2010)

हमारे अनुसार :-

क्या हिन्दुस्थान के तीन टुकड़े यानी हिन्दुस्थान, पाकिस्तान, बंगलादेश हुए होते?

क्या हिन्दुस्थान, पाकिस्तान और बंगलादेश में यानी अविभाजित हिन्दुस्थान में मुसलमानों की इतनी संख्या होती ?

क्या इण्डोनेशिया मुस्लिम बहुल देश बना होता ?

क्या मलयेशिया मुस्लिम बहुल देश हुआ होता ?

क्या नेपाल हिन्दू राष्ट्र ही न रहता और वहाँ माओवादियों (ईसाई मत में मतान्तरित) द्वारा लगभग 13 हज़ार हिन्दू नागरिक मारे गए होते और प्रचण्ड नाम का एक माओवादी प्रधानमंत्री बना होता ?

क्या विभाजित हिन्दुस्थान यानी भारत पंथनिरपेक्ष होता और यह एक अपने नाम के अनुसार हिन्दू राष्ट्र नहीं होता, और इसका राजधर्म हिन्दू नहीं होता ?

क्या विभाजित हिन्दुस्थान में चार लाख कश्मीरी हिन्दुओं (पंडित) को कश्मीर से बाहर निकाले जाकर शरणार्थी बन कर रहना पड़ता ?

क्या लगभग 300 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष की हज सब्सिडी मुसलमानों को हज करने के लिए सउदी अरब जाने के लिए दी जाती और हिन्दू तीर्थयात्रियों पर जो अमरनाथ जी की और वैष्णोदवी की यात्रा पर जाते हैं टैक्स लगाने का दुस्साहस किया जाता ?

क्या गोधरा रेल स्टेशन पर हिन्दू रामभक्त तीर्थ यात्रियों को जीवित जलाया जाने की हिम्मत होती?

पंथनिरपेक्ष घोषित हो जाने के बाद भी जिस प्रकार देश में मुसलमानों को मज़हबी आधार पर आरक्षण देने की पुरज़ोर कोशिश कांग्रेस पार्टी की तरफ से हो रही है, **क्या** ऐसा करने का उनका साहस होता ?

क्या हिन्दुस्थान के प्रधानमंत्री यह कह सकते कि देश के संसाधनों पर पहला अधिकार मुसलमानों का है ?

क्या हिन्दुओं को दूसरे नम्बर का नागरिक बना दिया जा सकता था?

क्या सत्ता में जमीं कांग्रेस पार्टी, इसको समय-समय पर सहभागी/समर्थन देने वाली पार्टियां जैसे मुलायम सिंह यादव की समाजवादी पार्टी, रामविलास पासवान, कम्युनिस्ट पार्टियां तथा दूसरी छुटभैया पार्टियां आदि हिन्दुओं को आतंकवादी घोषित करने का दुष्चक्र चलाने की हिम्मत कर सकतीं?

क्या देशभक्तों, देशप्रेमियों तथा निष्ठावान् पार्टियों को देशद्रोही घोषित करने की हिम्मत होती?

संपादक

भारत में रामराज्य क्यों और कैसे?

*प्रो. श्रीधर पंत**

हिन्दू सनातन धर्मानुसार सत् युग में न राज्य था न राष्ट्र।

नैव राज्यं न राजाऽऽ सीत् न दण्डो न च दाण्डिकः।
धर्मेणैव प्रजाः सर्वा रक्षन्ति च परस्परम्॥

(12-51-15, महाभारत, शांतिपर्व)

अर्थात् न तो राज्य था न राजा, न दंड था न दंड देनेवाला था, सभी लोग धर्म के द्वारा परस्पर एक-दूसरे की रक्षा करते थे। किन्तु त्रेता युग के समाप्ति काल में नारी पर हिंसा, विद्वान् ऋषियों पर आक्रमण और हवन नष्ट करना, क्षात्रत्व की हानि (सीता स्वयंवर में जनक वाणी), और शूद्र वर्ण को हेय (केवट, निषाद), मानने की दुष्प्रवृत्ति प्रकट होने लगी थी। ऐसे समय में श्रीराम का पदार्पण हुआ। प्रत्येक हिन्दू का विश्वास है कि अधर्म पर धर्म की विजय हेतु भगवान् अवतरित होते हैं। (यदा-यदा हि धर्मस्य-युगे-युगे। गीता 4) आज कलियुग उत्कर्ष पर है। नारी हिंसा हो, जनजाति की हेयता हो, दलित तिरस्कार हो या हो मानव तथा जीव हत्या सब अपनी चरम पर हैं। ऐसे में सद्पुरुषों को रामराज्य की याद तो आनी ही थी सो जन-जागरण में व्यस्त गांधीजी को रामराज्य की कामना हुई। किन्तु रामराज्य क्यों और कैसे इस पर चर्चा नहीं हुई। स्वतंत्रता प्राप्ति पर उनके आग्रह पर ही जवाहरलाल नेहरू प्रधानमंत्री बने। अंग्रेज़ियत के पैरोकार नेहरू को रामराज्य से क्या मतलब। तथापि हिन्दू मन-मस्तिष्क में राम रचे-बसे हैं, जन्म पर "राम कृपा" और शवयात्रा पर "राम नाम सत्य है"। फिर जीवन की इच्छा अयोध्या तीर्थ यात्रा। और वहाँ राम जन्मभूमि मंदिर न होने से हृदय में शूल की चुभन। मजबूर हो भाजपा को रामरथ यात्रा निकालनी पड़ी। असंख्य कारसेवकों और लाखों गाँवों से राम-ईंट आना हिन्दू और राम के एकात्मकता का बोध कराते हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में रामराज्य का सपना दिखाया विश्व हिन्दू परिषद ने। वर्षों से हम रामराज्य की चर्चा करते तो हैं किन्तु ऐसे राज्य की स्थापना हेतु श्री श्रीराम को क्या करना पड़ा था इस पर कदाचित ही कोई विचार करता हो। श्री राम के जीवन की पहली घटना है गुरु विश्वामित्र द्वारा अहिल्या के जीवन की घटना का वर्णन। इन्द्र द्वारा अहिल्या का शीलभंग हुआ जिसके कारण उसे पति ने त्याग दिया, समाज ने बहिष्कृत कर दिया। वह स्त्री नहीं शिला बन गई। श्रीराम ने उसे प्रणाम कर माता कह कर संबोधित किया तो वह भाव विह्वल हो उठी 'तुम कौन हो, मनुष्य तो हो नहीं सकते ? राम ने जनकपुरी जाकर अहिल्यापति महात्मा गौतम से चर्चा की। गौतम दूसरे दिन ही अहिल्या को आदरपूर्वक ले आए। अतएव नारी उद्धार पहला कर्म है। भ्रूण हत्या, दहेज-हत्या, नारी प्रताड़ना आदि से घोर संघर्ष भी नितान्त अनिवार्य है। अपनी संस्कृति की मान्यता है :-

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्र तास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।"

(मनुस्मृति)

श्रीराम के जीवन का दूसरा कर्म है गुरु विश्वामित्र के यज्ञ की सुरक्षा, यानी धर्माचार्यों के धर्म कर्म में अवरोध रोकना। चाहे कोई नारी ही क्यों न हो यदि वह यज्ञ नष्ट करने, धर्माचार्यों की हत्या करने आए तो वह अवध्य नहीं रहती। **मनुस्मृति** के अनुसार,

"गुरुं, वा बालबृद्धे वा ब्राह्मणं वा बहुश्रुत।
आततायियनमायान्तं, हन्यादेव विचारयन्॥

अर्थात् गुरु हो, बालक हो या वृद्ध, ब्राह्मण हो या ज्ञानी, यदि आततायी बनकर आता है तो बिना विचारे उसे समाप्त कर दो। गुरु की ताटका वध के आदेश पर श्रीराम झिझककर नारी अवध्य है इस की सोच में पड़ गए। तब विश्वामित्र जी ने कहा-

"न हि ते स्त्रीवधकृते घृणा कार्या नरोत्तम।
चातुर्वर्ण्यहितार्थं हि कर्तव्यं राजसूनुना"

(बाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड सर्ग 25 श्लोक 17)

अर्थात् नरश्रेष्ठ! तुम स्त्री हत्या का विचार करके इस पर (ताटका) दया न दिखाना। एक राजपुत्र को चारों वर्णों के हित के लिए स्त्री हत्या भी करनी पड़े तो उससे मुँह नहीं मोड़ना चाहिए। उन्होंने पृथ्वी का विनाश करने की इच्छाधारी विरोचन पुत्री मन्थरा का इन्द्र द्वारा वध करने का दृष्टांत भी दिया। तब श्रीराम ने गुरु आज्ञा का पालन कर ताटका का वध कर दिया। तीसरा महत्वपूर्ण कर्म बना, "रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्राण जाँहि पर वचन न जाहीं" के निर्वहन हेतु 14 वर्ष का वनवास सहर्ष स्वीकार करना। उनके वनों में वास काल के उनके कार्यों की जानकारी आज के रामराज आकांक्षियों के लिए बहुत जरूरी है। केवट के प्रति सहृदयता, निषादराज गुह को गले लगाना, भक्त शबरी के जूठे बेर सप्रेम खाना, वानर, रीछ एवं गरुड़ समाज के साथ वात्सल्य पूर्वक रहना। बलात्कारी बालि की हत्या कर उसके कनिष्ठ भाई सुग्रीव को उसकी पत्नी एवं राज दिलवाना तथा अनार्य कर्म में प्रेरित ही नहीं विवश करने के लिए शूर्पणखा का तिरस्कार अथवा 'नाक काटना' और मित्र हनुमान द्वारा लंका में माता सीता की खोज और विभीषण एवं मन्दोदरी के विचारों का लंकावासियों में प्रचारकर लंकादहन और अन्त में दुराचारी रावण को परास्त कर विभीषण का लंका में राज्याभिषेक कर माता सीता सहित अयोध्या वापिस लौटकर राजकर्म में व्यस्त होना और जनता में आक्रोश के उठते ही उसे समाप्त करने हेतु अपनी प्रियतमा गर्भवती सीता को वन में

छुड़वाना अर्थात् विद्रोह को फैलने से पूर्व ही समूल नष्ट कर राजधर्म का निवर्हन करना।

राम राज्य के आकांक्षी समुदाय को राम और रावण राज्य में अन्तर समझना पड़ेगा। रावण राज्य में सीता माता को ससस्मान श्रीराम को सौंप देने का आग्रह घर में मन्दोदरी और समाज में विभीषण द्वारा किया जा रहा था। रावण इसे विद्रोह समझता था। हनुमानजी द्वारा यह घर-घर फैला देने पर, जनाक्रोष की आग लंका में फैल गई। वह भाई विभीषण के घर से ही उपजी थी। जब विभीषण ने उसे राजदरबार में व्यक्त किया तो रावण ने उसे लात मार कर रामजी की शरण में भेज दिया। इसके विपरीत रामजी के राज्य में अदना-सा व्यक्ति, एक धोबी अपनी स्त्री की प्रताड़ना में माता सीता को लक्ष्य करके कहता है वह राम नहीं है जिसने सीता को रावण द्वारा अपहृत करने के बाद भी स्वीकार कर लिया। इसके पूर्व ही यह विद्रोह का रूप ले रामजी ने माता सीता को ही वन में छुड़वा दिया। अभिप्राय यह है कि कारक नहीं कारण को हटा दिया। न अपना देखा न माता सीता का। जनसुख प्रधान हुआ। पाठक विचारें दोनों में कारण हैं सीता किन्तु कारक हैं प्रतिष्ठित दरबारी भाई विभीषण और अकिंचन धोबी। रावण ने कारक को दूर किया रामजी ने कारण नहीं कारक को। सारांश यह है कि राजधर्म हेतु सर्वदा त्याग और तपस्या का जीवन बिताना। रामराज्य की कामना करने वालों को श्रीराम सरीखे व्यक्ति को उभारना होगा। क्या हिन्दू समाज हितैषी राजनेता एवं धर्माधिकारी या साधु-संत नारी उत्थान, दलित एवं वनवासी समाज को हृदय से लगाने को तैयार हैं? जात-पाँत में विभक्त हिन्दू समाज में आज भी छुआ-छूत का रोग नहीं है और विश्व हिन्दू परिषद के प्रयास से अनेक परिवार इस्लाम अथवा मसीही मजहब त्यागकर स्वधर्म में लौटै हैं किन्तु यह तो सागर में बूँद के समान है। भारत में लाखों साधु-संन्यासी हैं, मंदिरों में अपार धन है **यदि देशभक्त संन्यासी 2-2 या 5-5 मिलकर एक-एक गाँव अपना लें और वहीं वासकर रामराज्य को प्राप्त करने का उपदेश दें व मंदिर में सोने का सिंहासन न बनवाकर देशभक्त संन्यासियों की सहायतार्थ धन दें तथा राजनेता हृदय से बाबा रामदेव के भारत स्वाभिमान आन्दोलन तथा श्री श्री रविशंकर सरीखे संन्यासियों के साथ सहयोग करें तो रामराज्य अवश्य बन सकता है। रामराज्य में हिन्दुत्व की मान्यता होगी मज़हबों की नहीं।** भारत सबकी मातृभूमि, पितृभूमि और कर्मभूमि होगी। कतिपय हिन्दू नेतागण तथाकथित अल्पसंख्यकों को रिझाकर राज्याधिकारी बनने का स्वप्न देखते हैं। तथापि अल्पसंख्यक मजहबपरस्त तथा संगठित हैं उनके मौलवी-मौलाना अपना लक्ष्य शरियत को मानते हैं। रामराज्य का उपदेश महात्मा गाँधी ने दिया किन्तु उनको वह मान्य नहीं था। जब हिन्दू उनकी तरह ही संगठित होगा तब वे भी इस पर विचार करने की सोचेंगे, अन्यथा उन वर्गों की माँग कभी भी समाप्त नहीं होगी। कला की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार के दुरुपयोग में तल्लीन हुसैन और उनके हिमायती तथा हैदराबाद में मुस्लिम-मुत्ताहीद-मजलिस-ए-अमताल (अथवा मुस्लिम युनाइटेड फ्रंट) के द्वारा शनिवार 13 मार्च की महान रैली में दी गई चेतावनी इसके स्पष्ट उदाहरण हैं। नवीनतम उदाहरण है लखनऊ में आयोजित अखिल भारतीय मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के 21वां त्रिदिवसीय अधिवेशन में पारित प्रस्ताव और भाषण। बोर्ड ने खुलकर कहा कि आधुनिक विचारों को कभी भी इस्लामिक शरिया में स्थान नहीं दिया जा सकता। बोर्ड के सहायक सचिव अब्दुल रहीम कुरैशी ने स्पष्ट किया कि उनके बोर्ड की राय में दारुल-काज़ा (इस्लामिक न्यायालय) को समस्त देश में स्थापित किया जाना चाहिए।

अखिल भारतीय मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के सभापति नदवातुल उलूम मौलाना रबी हसन नदवी ने कहा कि "हम अपने धार्मिक संस्थानों में कोई हस्तक्षेप स्वीकार नहीं करेंगे।" उन्होंने स्पष्ट किया कि इस्लाम ने 800 वर्ष तक पक्षपात हीन होकर राज्य किया। यही नहीं, बोर्ड ने साम्प्रदायितकता विरोधी बिल को वापस लेने की अवस्था में आन्दोलन की धमकी दी। भारत की विदेशनीति पर आक्षेप करते हुए उन्होंने भारत की इजरायल से दोस्ती पर नाराजगी जाहिर की। इतना कुछ जानन-सुनने के बाद विचारणीय है कि क्या भारत में इस्लाम भारतीय संविधान के अनुरूप गैर मुसलमानों से सहयोग कर सकेगा? अपने पूर्वजों द्वारा हिन्दुस्थान पर राज करने, जिसे वे बड़े गौरव से बखान करते हैं इसलिए संभव हुआ क्योंकि हिन्दू विभाजित था। **आज भी कांग्रेस हिन्दू को जाति-प्रजाति, में आरक्षण या प्रान्त के आधार पर विभाजित कर ही शासक बनी बैठी है।** गरीबी हटाओ के स्थान पर गरीब हटाओ हेतु मनमानी हो रही है। यदि हिन्दू समाज अब भी नहीं जागा तो रामराज्य नहीं हिन्दू भस्मास्मि की स्थिति में पहुँच जाएगा।

**91-सेक्टर ए, पॉकेट-सी, वसंतकुंज, नई दिल्ली-110 070*

सब निर्दंभ धर्मरत पुनी। नर अरु नारि चतुर सब गुनी।
सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी। सब कृतग्य नहिं कपट सयानी।।
गोस्वामी तुलसीदास (रामचरितमानस 7/21/1-4)

जलस्रोतों की मौत

-पंकज शर्मा

जल विद्युत परियोजनाओं का सच धीरे-धीरे सामने आने लगा है। **परियोजनाओं को चलाने के लिए बनाई जा रही सुरंगे पहाड़ के प्राकृतिक जलस्रोतों की मौत का कारण बन रही हैं।** सुरंग बनाने के लिए भारी मात्रा में की जा रही ब्लास्टिंग से परियोजना क्षेत्रों में कई जलस्रोत सूख गए हैं। टिहरी जनपद में निर्माणाधीन भिलंगना पावर तृतीय परियोजना के निर्माण से भिलंगना घाटी के नौ गाँवों के पेयजल स्रोत सूख गए हैं। **जोशीमठ में तपोवन विष्णुगाड परियोजना के लिए बनाई गई सुरंग से अचानक पिछले कई दिनों से 600 लीटर प्रति सेंकड के दर से पानी निकल रहा है।** आशंका जताई जा रही है कि यह जल भूमिगत जलस्रोत का है, जिससे आने वाले समय में जोशीमठ एवं उसके आस-पास के क्षेत्रों के प्राकृतिक जलस्रोत भी सूख जाएंगे।

महानगरों की जनता को भोगवादी जीवन देने के लिए इन दिनों सरकार एवं बिजली कंपनियां पहाड़ के साथ भयानक खेल, खेल रही हैं। दूरदराज़ के पहाड़ी क्षेत्रों के लोगों को बुनियादी सुविधाएं तो सरकारों से दी नहीं जाती हैं, अलबत्ता प्रकृति प्रदत्त सुविधाओं को छीनने का काम जरूर सरकारें कर रही हैं। पेयजल के लिए पहाड़ की आबादी का एक बड़ा हिस्सा प्राकृतिक जल स्रोतों पर निर्भर है। आज तक इन गांवों के लोग सुविधाएं न सही पर स्वच्छ हवा-पानी के सहारे जीवन जी रहे थे। कम से कम उन्हें इस बात का तो संतोष था कि उनके पास शहरों जैसी सुविधाएं न सही परन्तु जीवन जीने के लिए स्वच्छ हवा पानी तो है जो शहरों में पैसे खर्च करके भी नहीं मिल पाती है। लेकिन अब तो पहाड़ से उसके प्राकृतिक स्रोत छीने जा रहे हैं। मज़ेदार बात यह है कि सरकारों को शहरों को चमकाने के लिए बिजली की तो चिन्ता है, किन्तु पहाड़ के गांवों की खेती-बाड़ी एवं पानी छीने जाने की कोई चिन्ता नहीं है। आखिर यह कहाँ का न्याय है।

इसका ताजा उदाहरण भिलंगना क्षेत्र में देखने को मिल रहा है। **पोल फैक्स कंपनी द्वारा बनाई जा रही 24 मेगावाट की घुत्तू भिलंगना पावर परियोजना के निर्माण से भिलंगना घाटी के कई गांवों का अस्तित्व खतरे में है।** क्योंकि लोगों की जीवन जीने की बुनियादी ज़रूरत पानी पर ही संकट आ गया है। इस परियोजना के निर्माण के लिए चार कि.मी. लम्बी सुरंग बनाई गई है। सुरंग बनाने के लिए कंपनी ने भारी मात्रा में विस्फोटकों का प्रयोग किया जिससे भिलंगना घाटी के वीना, चन्दला, चक्रगांव, जुग्याणा, बगर, सिन्दरवाल गांव, सरोलगांव, पनेली, अंकरवाणगांव के पेयजल स्रोत प्रभावित हुए हैं। परियोजना निर्माण से पूर्व वीना गांव में पानी के पांच, चन्दला के तीन, चक्रगांव, जुग्याणा, अंकरवाणगांव, सिदवालगांव में दो-दो तथा सरोलगांव तथा पनेली में पानी के एक-एक स्रोत थे जिनमें से अधिकांश स्रोत सूख चुके हैं और जो हैं उनमें पानी काफी कम हो चुका है। आमतौर पर पानी के लिए बेफिक्र रहने वाले गांवों के लोगों के जीवन में पानी एक बड़ी चिन्ता का प्रश्न बन गया है। **वीना गांव के हरिप्रसाद उनियाल का कहना है कि जल स्रोतों के सूखने के लिए सुरंग निर्माण के लिए गए विस्फोट जिम्मेदार हैं।**

जोशीमठ एनटीपीसी द्वारा बनाई जा रही तपोवन विष्णुगाड परियोजना के लिए बनाई गई सुरंग जोशी क्षेत्र के लिए खतरा साबित हो रही है। इस सुरंग से आश्चर्यजनक रूप से 600 लीटर प्रति सेंकड की दर से पानी निकल रहा है। जिससे क्षेत्र के लोगों में दहशत का माहौल है। माना जा रहा है कि यह भूमिगत जल है जिससे आने वाले समय में जोशीमठ एवं उसके आसपास के क्षेत्रों के प्राकृतिक जलस्रोत सूखने लगेंगे। लोग इसे मानव निर्मित आपदा बता रहे हैं जिससे निपटना मुश्किल है। इससे साबित होता है कि परियोजना निर्माण के लिए किया गया भूगर्भीय विश्लेषण या तो नज़रअन्दाज़ किया गया है या इसे सुनियोजित तरीके से परियोजना के पक्ष में तैयार किया गया है।

'नदी की पाती' पत्रिका (संवाद डेस्क, नदी की पाती, पो. बॉक्स 88, श्रीनगर, गढ़वाल, उत्तराखण्ड) के 11 फरवरी 2010 के अंक से साभार

गंगा

2510 किलोमीटर लंबी गंगा के तटों पर 29 बड़े शहर, 23 मध्यम दर्जे के शहर बसे हैं।

कल-कारखाने का कचरा और नगरों का सीवेज गंगा में प्रदूषण का प्रमुख कारण है।

इन शहरों में गंगा में 2538 एमएलडी सीवेज वाटर (मल-जल) रोज छोड़ा जाता है।

गंगा में बायोलॉजिक ऑक्सीजन स्तर 3 डिग्री सामान्य से बढ़कर 6 डिग्री हो चुका है।

सन् 1985 में 900 करोड़ रुपये की लागत से गंगा एक्शन प्लान शुरू हुआ था।

पहले चरण में 865 तथा दूसरे में 780 एमएलडी सीवेज ट्रीटमेंट की सुविधा हासिल हो पाई, जो कि सिर्फ 35 प्रतिशत है।

दूषित जल शोधित करने वाले कुल 106 एस.टी.पी. में से ज्यादातर खराब हैं।

'समष्टि संदेश' पाक्षिक, वर्ष 5 अंक 7, राँची से साभार

मंदिरों पर कब्ज़े से रोष

शिवसेना आनुषंगिक प्रकोष्ठ की बैठक की अध्यक्षता शिवसेना प्रदेश सचिव व अनुषंगिक मंडल प्रभारी लोकेश वत्स ने व संचालन भारतीय विद्यार्थी सेना जिला महासचिव धर्मेन्द्र सैनी ने किया।

इस अवसर पर **प्रदेश सचिव लोकेश वत्स** ने कहा कि कश्मीर में मंदिरों की भूमि पर कब्ज़े से लेकर होटल, मदरसे चलाने वाले तक के कार्यों को मूक दर्शक बन देख रही वहाँ की सरकार को या तो भाईचारे की बातें कहनी छोड़ देनी चाहिए या इस संदर्भ में कड़ी कार्यवाही करके वहाँ के अल्पसंख्यक हिन्दुओं की धार्मिक निष्ठा का सम्मान करके संविधान की धर्म निरपेक्षता की भावना की रक्षा करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान में जबरन हिन्दू लड़कियों को बुर्का पहनाने के खुलासे के बाद भारत सरकार को यह मुद्दा प्रमुखता से उठाना चाहिए व इसके हल बिना कोई वार्ता नहीं होनी चाहिए। उन्होंने प्रत्येक पदाधिकारी को राष्ट्रहित के समर्पित कार्य करने का आवाहन करते हुए कहा कि राज्य में सरकार की प्रत्येक अच्छी नीति का समर्थन करें। उन्होंने कहा कि नगर में खाद्य सामग्री बेचने वाली दुकानों के संबंध में योजनाबद्ध तरीकों से अफवाहें फैलाकर जिस प्रकार व्यावसायिक ध्रुवीकरण किया जा रहा है वह सामाजिक एकता के लिए खतरे की घंटी है। इस बारे में प्रशासन को उचित जाँच कर इस प्रकार की अफवाहों की पुनरावृत्ति रोकने को उचित कदम उठाना चाहिए।

भारतीय कामगार सेना के पूर्व जिला उपाध्यक्ष सरदार **सुखविंदर सिंह** ने सभी राष्ट्रभक्तों से एक साथ मिलकर कार्य करने का आवाहन किया।

भारतीय उद्योग व्यापार सेना के **विमल शर्मा** ने गैस की कालाबाजारी व सही समय पर डिलीवरी न होने पर रोष व्यक्त किया।

'गौरव टाइम्स' हिन्दी साप्ताहिक, देवबन्द (सहारनपुर) दिनांक 15 फरवरी से 21 फरवरी, 2010 से साभार

<u>छपते-छपते</u>

प्राचीन देवी मंदिर में डकैती

मसूरी थाना क्षेत्र के डासना स्थित प्राचीन देवी मंदिर में बुधवार देर रात हथियारबंद बदमाशों ने वहाँ मौजूद एक सुरक्षाकर्मी, पुजारी व दो सेवादारों से मारपीट कर उन्हें रसोईघर में बंद कर दिया। इसके बाद बदमाश मंदिर से लाखों रुपये के जेवरात व दानपात्र तोड़कर नकदी ले गए। मंदिर में डकैती की खबर लगते ही बृहस्पतिवार सुबह हिन्दू संगठनों से जुड़े लोग मौके पर एकत्र हो गए। सूचना पाकर पुलिस व प्रशासन के आलाधिकारी व महापौर भी मौके पर पहुँचे। एसएसपी रघुबीर लाल का कहना है कि डकैती का जल्द ही पर्दाफाश कर दिया जाएगा। मंदिर में तैनात सुरक्षाकर्मी कृष्णाकांत तिवारी ने बताया कि बुधवार रात करीब एक बजे करीब आधा दर्जन बदमाशों ने उसे गन प्वाइंट पर लेकर उसकी बंदूक छीन ली। इसके बाद वहाँ मौजूद पुजारी रघुवेन्द्र प्रसाद त्रिपाठी व दो सेवादार रणवीर चौधरी तथा सोमेन्द्र को भी गन प्वाइंट पर ले लिया। बदमाशों ने चारों को मंदिर के एक ओर बने रसोईघर में बंद कर दिया। करीब सवा घंटे तक बदमाश मंदिर परिसर में तांडव मचाते रहे। कई बार बदमाशों ने मंदिर के महंत **यति नरसिंहानंद** के बारे में भी पूछा। मगर महंत किसी कार्य से मंदिर से बाहर गए हुए थे। बाद में बदमाश जंगल की ओर भाग गए। बदमाशों के जाने के बाद किसी प्रकार अपने को बंधनमुक्त कर पुजारी व सेवादार पास ही स्थित श्रीराम कॉलोनी पहुँचे और डकैती की खबर लोगों को दी।

'दैनिक जागरण' दिल्ली, 16-7-2010 से साभार

<u>टिप्पणी :</u> इस समाचार के अनुसार चूंकि डकैत बार-बार मंदिर के महंत यति नरसिंहानन्द के बारे में पूछ रहे थे, इससे यह प्रकट होता है कि वे वस्तुत: कुछ इस्लामी आतंकवादी थे जो मंदिर में महंत जी की हत्या करने के इरादे से घुसे थे, जो उन दुष्टों के दुर्भाग्य से पूरा न हो सका। निष्पक्ष प्रेक्षकों ने यह संभावना भी व्यक्त की है कि चूंकि मंदिर में भगवती चण्डी की अत्यंत प्राचीन दुर्लभ बहुमूल्य प्रतिमा है, तो हो सकता है कि तथाकथित डकैत उस प्रतिमा को खण्डित करने अथवा वहाँ से हटा कर अन्यत्र ले जाने के लिए या बेच देने के लिए आए हों।

तओ दुस्सन्नप्पा दुट्ठे मूढे बुग्गाहिते

दुष्ट को, मूर्ख को और बहके हुए को समझा पाना बहुत कठिन है।

प्राकृत - स्थानांग (3/4)

विश्व सूक्ति कोश, लेखक : डॉ. श्याम बहादुर वर्मा और डॉ. मधु वर्मा, पृ. 1206 से साभार

महाभारत के बाद भारत के विभिन्न राजवंशों के राजागण

विभिन्न पुराणों में दिए गए विवरणों के अनुसार महाभारत के युद्ध के बाद अयोध्या, हस्तिनापुर और मगध राज्यों की गद्दियों पर बैठे राजाओं की वंशावली के साथ-साथ मगध की गद्दी पर बैठने वाले विभिन्न अन्य राजवंशों के राजाओं के नाम इस प्रकार हैं।

अयोध्या के सूर्यवंशी राजा

कुल 30 राजाओं के नाम मिलते हैं जो इस प्रकार हैं -

1. वृहन्क्षण/वृहद्रण/वृहत्क्षण 2. उरुक्षेण/उरुकिय/उरुयक्षण, 3. वत्सव्यू/वत्सवृद्ध/वत्सव्यूह, 4. प्रतिव्योम, 5. दिवाकर, 6. सहदेव, 7. वृहदश्व/ध्रुवाश्व, 8. भानुरथ/भानुमान, 9. प्रतिताश्व/प्रतिपाथ/प्रतिकाश्व, प्रतितस्य, 10. सप्रतीक, 11. मरुदेव, 12. सुनक्षत्र, 13. किन्नर या पुष्कर, 14. अन्तरिक्ष/अनथरक्षक, 15. सुवर्ण/सुपर्ण/सुतया, 16. अमित्रजित, 17. बृहद्राज/ब्रहद्भज, 18. धर्मी/वीर्यवान/बर्हि, 19. कृंजजय/धनंजय, 20. रणंजय, 21. संजय, 22. शाक्य, 23. शुद्धोदन, 24. सिद्धार्थ/गौतम बुद्ध (राजा नहीं बने थे) 25. राहुल/लागल/पुष्कल, 26. प्रसेनजित, 27. क्षुद्रक/विरुद्रक/कहुद्रक/विरुढक, 28. कुण्डक/रणक/कुलक, 29. सुरथ, 30. सुमित्र।

हस्तिनापुर के चन्द्रवंशी राजा

कुल 31राजाओं के नाम मिलते हैं, जो इस प्रकार हैं -

1. युधिष्ठिर, 2. परीक्षित, 3. जनमेजय, 4. शतानीक (प्रथम), 5. सहस्रानीक, 6. अश्वमेधदत्त, 7. अधिसीमकृष्ण, 8. निचक्षु/निचक्ष, 9. उष्ण या भूरि, 10. चिद्धरथ/चित्ररथ, 11. शुचिद्रथ/सुचिद्रव, 12. वृष्णिवत/वृष्णिमान्, 13. सुषेण, 14. सुनीथ या सुतीर्थ, 15. रुथ/रुच, 16. वृवधु/वृचक्षु, 17. सुखीबल, 18. परिष्णव/परिप्लव, 19. सुपतस/सुनय, 20. मेधावी/मेधाविन, 21. पुरंजय/नृपंजय, 22. उर्व/मृदु, 23. तिग्मात्मा/निग्म/निमि, 24. वृहद्रथ, 25. वसुदान /वसुदामन 26. शतानीक (द्वितीय), 27. उदयन/उद्भव, 28. वहीनर, 29. दण्डपाणि, 30. निरामित्र, 31. क्षेमक

मगध के विभिन्न राजवंश

महाभारत युद्ध के पश्चात् अर्थात् 3138 ई.पू. में मगध की गद्दी पर बार्हद्रथ वंश के मार्जारि के बैठने से लेकर गुप्त वंश से पूर्व तक के 8 वंशों के कुल 97 राजाओं ने 2811 वर्ष तक राज्य किया। अलग-अलग वंशों के राजाओं के नाम इस प्रकार हैं:-

प्रथम राजवंश : बार्हद्रथ वंश के 22 राजा (राज्यकाल 1006 वर्ष)

1. मार्जारि/सोमाधि, 2. श्रुतश्रवा/श्रुतवान, 3. अप्रतायु/अयुवायु, 4. निरामित्र/निरामित्र, 5. सुक्षत्र/सुरक्ष, 6. वृहत्कर्मा, 7. सेनाजित/सेनजित, 8. श्रुतंजय, 9. महाबल/महाबाहु, 10. शुचि, 11. क्षेम, 12. सुव्रत/अनुव्रत, 13. सुनेत्र/धर्मनेत्र, 14. निर्वृत्ति/निवृत्ति, 15. त्रिनेत्र/सुव्रत, 16. दुर्हसेन/दृढ़सेन/द्युमत्सेन, 17. सुमति/सुचल, 18. सुचल/अबल, 19. सुनेत्र, 20. सत्यजित, 21. वीरजित, 22. रिपुंजय

द्वितीय राजवंश, प्रद्योत वंश के 5 राजा (राज्यकाल 138 वर्ष)

1. प्रद्योत, 2. पालक, 3. विशाखयूप, 4. सूर्यक/राजक/जयक, 5. नंदिवर्धन/कीर्तिवर्धन

तृतीय राजवंश : शिशुनाग वंश के 10 राजा (राज्यकाल 360 वर्ष)

1. शिशुनाग, 2. काकवर्ण/काकवर्णा, 3. क्षेमधर्मा/क्षेमवर्मा, 4. क्षेत्रज/क्षेत्रज्ञ/क्षेत्रोजा, 5. बिम्बिसार, 6. अजातशत्रु, 7. दर्भक/दर्शक, 8. उदयन/उदायी, 9. नन्दीवर्धन, 10. महानन्दिन

चतुर्थ राजवंश : नन्द वंश के राजा (राज्यकाल 100 वर्ष)

1. महापद्मनन्द, 2. सुमाल्य आदि पुत्र

पंचम राजवंश : मौर्य वंश के 12 राजा (राज्यकाल 316 वर्ष)

1. चन्द्रगुप्त मौर्य, 2. बिम्बसार, 3. अशोक/अशोकवर्धन, 4. सुपार्श्व/सुयश/कुणाल, 5. दशरथ/बन्धुपालित, 6. इन्द्रपालित, 7. हर्षवर्धन, 8. संगत/सम्प्रति, 9. शालिशूलक/बृहस्पति, 10. सोमशर्मा/देवधर्मा, 11. शतधन्वा/शतधनु, 12. बृहद्रथ

षष्ठम राजवंश : शुंग-वंश के 10 राजा (राज्यकाल 300 वर्ष)

1. पुष्यमित्र, 2. अग्निमित्र, 3. वसुमित्र, 4. सुज्येष्ठ/वसुमित्र, 5. भद्रक/अन्ध्रक, 6. पुलिन्दक/पुलिन्द, 7. घोषवसु/घोष/घोषसुत, 8. वज्रमित्र, 9. भागवत, 10. देवभूति/क्षेमभूमि

सप्तम राजवंश: कण्व वंश के 4 राजा (राज्यकाल 85 वर्ष)

1. वसुदेव, 2. भूमिमित्र, 3. नारायण, 4. सुशर्मा

अष्टम राजवंश: आन्ध्रवंश के 32 राजा (राज्यकाल 506 वर्ष)

1. श्रीमुख/शिमुक/शिशुक, 2. श्री कृष्ण शातकर्णि, 3. श्रीमल्ल शातकर्णि, 4. पूर्णाल्संग, 5. श्रीशातुकर्णि, 6. स्कन्ध स्तविन/स्तम्भी, 7. लम्बोदरु, 8. अपिलक/आपितक, 9. मेघस्वाति, 10. सतस्वाति, 11. स्कन्द स्वाति/स्कन्द शातकर्णि, 12. मृगेन्द्र स्वातिकर्ण/मृगेन्द्र शातकर्णि, 13. कुन्तल शातकर्णि, 14. सौम्य शातकर्णि, 15. सतशातकर्णि/स्वातिकर्ण, 16. पुलोमन शातकर्णि/पुलोमावि, 17. मेघ शातकर्णि, 18. अरिष्ट शातकर्णि, 19. हल, 20. मन्तलक/पत्तलक, 21. पुरीन्द्रसेन/पुलिन्दसेन, 22. सुन्दर शातकर्णि, 23. चकोर शातकर्णि, 24. महेन्द्र शातकर्णि, 25. शिवशातकर्णी/स्वाति, 26. शिवश्री शातकर्णि, 27. शिवस्कन्द शातकर्णि, 28. यज्ञश्री शातकर्णि, 29. विजय श्री शातकर्णि, 30. चन्द्र श्री शातकर्णि, 31. पुलोमन/पुलोमावि-III

महाभारत के बाद भारत...

नवम राजवंश : गुप्त वंश के 7 राजा (राज्यकाल 245 वर्ष)

1. चन्द्रगुप्त-1, 2. समुद्रगुप्त, 3. चन्द्रगुप्त-II, 4. कुमारगुप्त, 5. स्कन्दगुप्त, 6. नरसिंहगुप्त, 7. कुमारगुप्त-II

उक्त वंशावली के सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है कि कई राजाओं को अलग-अलग पुराणों में अलग-अलग नाम से सम्बोधित किया गया है। यहाँ या तो अलग-अलग नाम दे दिए गए हैं या अधिकतर रचनाओं में उपलब्ध एक जैसे नाम को ले लिया है। विभिन्न पुराणों में दिए गए नामों के साथ-साथ उक्त सूची में सूर्यवंश के राजाओं के लिए श्रीराम साठे की पुस्तक 'डेट्स ऑफ बुद्ध', चन्द्रवंश के लिए आचार्य राजदेव कृत 'भारतवर्ष का इतिहास', खण्ड-2 और मगध साम्राज्य के विभिन्न वंशों के राजाओं के नामों और उनके राज्यकालों के लिए उक्त स्रोतों के अतिरिक्त पं. कोटावेंकटाचलम् की पुस्तक 'दि प्लाट इन इंडियन क्रोनोलॉजी' तथा पं. भगवद्दत्त के 'भारतवर्ष का बृहद् इतिहास' भाग-2 से भी सहयोग लिया गया है।

'अग्निगामी' साप्ताहिक, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) के दिनांक 14 दिसम्बर 2009 के अंक से साभार

संस्थान के नवीनतम प्रकाशन

गौरव घोष के प्रबुद्ध पाठकों के लिए एक शुभ सूचना। सांस्कृतिक गौरव संस्थान के प्रकाशनों में दो पुस्तकें और जुड़ गई हैं। प्रथम है **: हिन्दुस्थान में मदरसे** इस पुस्तक के लेखक श्री देवेन्द्र कुमार मित्तल हैं। पुस्तक के 208 पृष्ठ हैं तथा पुस्तक का मूल्य है 120 रुपये। यह पुस्तक हिन्दुस्थान में मदरसों के संबंध में ऐसी जानकारी उपलब्ध कराती है, जो सामान्यत: हिन्दुस्थान के निवासियों को नहीं है, क्योंकि अभी तक मदरसे रहस्य ही बने रहे हैं।

'गीतापदार्थकोष' नाम से एक और पुस्तक संस्थान के प्रकाशनों में जुड़ी है। इस पुस्तक के **लेखक राष्ट्रपिता महात्मा गांधी हैं।** गांधी जी ने यह पुस्तक सन् 1922 में यरवदा जेल में रहते हुए गुजराती में लिखी। अब इसका हिन्दी अनुवाद रेलवे बोर्ड के सेवानिवृत्त अध्यक्ष डॉ. योगेन्द्र पाल आनन्द ने किया है।

इस पुस्तक में श्रीमद्भगवद्गीता के 3839 शब्दों के हिन्दी पर्याय दिए गए हैं। गुजराती में इस पुस्तक का प्रकाशन स्व. काका साहेब कालेलकर ने 1936 में करवाया था। डॉ. आनन्द ने इसका गुजराती से हिन्दी अनुवाद करके महात्मा गांधी जी द्वारा रचित एक महान् ग्रंथ को पुन: प्रकाश में लाने का पुण्य कार्य किया है। यह पुस्तक हिन्दुस्थान के प्रत्येक निवासी के घर में सुलभ कराने के लिए इसका प्रकाशन किया गया है। इसका मूल्य रुपये 175/-रु. मात्र है।

गीतापदार्थकोष के सम्बन्ध में हिन्दू हृदय सम्राट् माननीय श्री अशोक जी सिंहल की सम्मति

'गीतापदार्थकोष' जिसका संस्कृत से गुजराती भाषा में अनुवाद महात्मा गांधी जी द्वारा किया गया था और अब डॉ. योगेन्द्र पाल आनन्द जी द्वारा किया गया संस्कृत के शब्दों का हिन्दी अनुवाद ग्रंथ प्राप्त हुआ, तदर्थ हार्दिक धन्यवाद।

यह ग्रंथ भारतीय आध्यात्मिक वांग्मय में सदैव आदरणीय और श्लाघनीय रहेगा, ऐसा विश्वास है। इस अनमोल ग्रंथ को आपने प्रकाशित करके देश की सेवा में विशेष योगदान किया है।

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक **: संस्कृति और साहित्य - संबंधों के अंत:सूत्र**
लेखक **: डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर'**
पता : 86, तिलक नगर, बाईपास रोड, फिरोज़ाबाद (उ.प्र.)

डॉ. रामसेनहीलाल शर्मा की विचाराधीन पुस्तक में संस्कृति और साहित्य दोनों विषयों का गहन और सम्यक् विवेचन किया गया है। डॉ. शर्मा के गहन अनुभव और अध्ययन के फलस्वरूप उन्हें प्राप्त अमृतकणों का उन्होंने इस पुस्तक में गंभीर पाठकों के लिए संचय कर दिया है। **'संस्कृति' शब्द का गंभीर विवेचन डॉ. रामधारी सिंह दिनकर जी ने 'संस्कृति के चार अध्याय' पुस्तक में विस्तार से किया है।** डॉ. शर्मा ने भी इस विचाराधीन पुस्तक में लिखा है कि शब्द और भाव दोनों की दृष्टि से संस्कृति एक क्रियात्मक कल्पना है। अनेक पुस्तकों का संदर्भ देकर डॉ. शर्मा ने विषय को गंभीर से गंभीरतर बनाने का यत्न किया है, जिसमें वे सफल हुए हैं। स्वयं **डी.लिट् होने के कारण डॉ. शर्मा साहित्य के तो पंडित हैं** हीं साथ ही अपने संग्रहीत निबंधों में उन्होंने इन दोनों विषयों का पारस्परिक संबंध बड़ी सूझबूझ और विवेक से स्थापित किया है।

''हिन्दू राष्ट्रवाद का व्यावहारिक रूप'' निबन्ध में डॉ. शर्मा की लेखनी ने अत्यंत आधुनिक विषय का समायानुकूल प्रतिपादन किया है। विवेचन करते हुए डॉ. शर्मा ने हिन्दुओं के तीर्थों, मंत्रों और हिन्दू संस्कृति की व्यापकता का भी उल्लेख किया है। उन्होंने लिखा है कि भारतीय राष्ट्रवाद को संघर्ष, घृणा, विध्वंस की अपेक्षा रचनात्मकता का नया आयाम मिल गया है। उन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद का राजनीतिक आदर्श भी बता दिया है।

गौरव घोष परिवार की ओर से डॉ. शर्मा को इस पुस्तक के लिए बधाई। विश्वास है कि पाठक ऐसी गंभीर पुस्तक को अवश्य पढ़ना चाहेंगे।

क्या सर्वोच्च न्यायालय की टिप्पणी प्रामाणिक है ?

दो वयस्क स्त्री-पुरुषों के साथ रहना चाहिए। इसमें विवाह का बन्धन अनिवार्य नहीं है। भारतीय इतिहास में राधा-कृष्ण का साथ रहना इसी बात का उदाहरण है। यह सर्वोच्च न्यायालय की टिप्पणी है। सर्वोच्च न्यायालय कोई बात कहे तो उसे प्रामाणिक माना जाता है।

जहाँ तक सर्वोच्च न्यायालय द्वारा श्री राधा-कृष्ण के सम्बन्ध को दो वयस्क के विवाहेतर सम्बन्धों के रूप में देखा जाता है, तब इसमें अनेक विचारणीय बिन्दु उपस्थित होंगे जिन पर निर्णय करना आवश्यक है। न्यायालय द्वारा श्री राधाकृष्ण को इस प्रकार स्वीकार करने का एक लाभ है कि न्यायालय राधा और श्री कृष्ण के अस्तित्व को स्वीकार करता है क्योंकि बहुत से इतिहासकार कृष्ण और महाभारत की वास्तविकता का ही निषेध करते हैं। यही बात भारत सरकार अपने विद्यालयों में पढ़ाती है।

दूसरी बात है श्री राधा-कृष्ण का इतिहास महाभारत का इतिहास नहीं है। राधा की कल्पना तो पुराणों की देन है। यदि न्यायालय इसे ऐतिहासिक मानता है तो इतिहास लिखने के आधार बदलने होंगे और पंचतंत्र की कहानियों को ऐतिहासिक घटना और उनके पात्रों को व्यक्तियों के रूप में देखना होगा। श्री राधा-कृष्ण के सम्बन्ध को न्यायालय द्वारा प्रामाणिक स्वीकार करने से एक संकट और समाज को झेलना पड़ेगा, अभी तो दो वयस्क अविवाहित लोगों के सम्बन्धों को मान्यता देने का प्रसंग था परन्तु न्यायालय ने राधाकृष्ण के उदाहरण से विवाहित लोगों के विवाहेतर सम्बन्धों को भी मान्यता प्रदान कर दी है। जो लोग राधा-कृष्ण के साथ को स्वीकार करते हैं वे स्वयं भी इसे दिव्य प्रेम के रूप में देखना चाहते हैं। भले ही उनके नाम पर स्वयं कितना ही अनुचित आचरण करते हों। यहाँ पर विचारणीय है कि हमारे समाज में श्री राधा-कृष्ण चाहे जितने प्रचलित हों परन्तु इतिहास में श्री राधा-कृष्ण का स्वरूप निराधार है।

आजकल कुछ लोग पाश्चात्य प्रभाव से उन्मुक्त आचरण को स्वीकार्य, स्वाभाविक और श्रेष्ठ बताना चाहते हैं परन्तु यदि सब कुछ प्राकृतिक रूप से स्वीकार करने का आग्रह मान्य कर लिया जाता है तो यह पशु समुदाय के तुल्य होगा। आजकल हम आधुनिकता के नाम पर विचित्र आचरण करते हैं जैसे रात्रि को देर से सोना आधुनिकता है और जल्दी समय पर सोना रूढ़ि है। हर समय कुछ भी खाते रहना आधुनिकता है और समय पर सात्त्विक शाकाहारी भोजन करना रूढ़ि है। भड़कीले फैशन वाले आधे-अधूरे कपड़े पहनना आधुनिकता है और सादे पूरे वस्त्र पहनना रूढ़ि है। यदि यही सब आधुनिकता है तो कुत्ते, गधे आदि पशु सबसे अधिक आधुनिक हैं। वे जो चाहे खाएं, जब चाहें खाएं, जहाँ चाहें जो हरकत करें तो कुत्ते, गधे आदि सबसे प्राकृतिक और सबसे अधिक आधुनिक हैं, क्या हम ऐसा मनुष्य समाज बनाने की कल्पना कर सकते हैं? क्या यही हमारे लिए आधुनिकता है। यहाँ सोचना चाहिए कि व्यक्ति की प्राकृतिक इच्छाएं पहले हैं या इसको लेकर बनाए गए नियम पहले हैं, इसका स्वाभाविक उत्तर होगा, इच्छाएं पहले हैं और नियम बाद में बने हैं। जब नियम बाद में बने हैं तो उन नियमों को बनाने के कारण अवश्य होंगे। पहला कारण है कि भगवान् ने मनुष्य को असीम इच्छाएं देकर इस संसार में भेजा है। यदि सभी मनुष्यों को अपनी सभी इच्छाओं को पूरा करने की छूट दी जाए तो सारे समाज में अराजकता उत्पन्न हो जाएगी। इस अराजकता को पशु तो अपने बल से नियंत्रण करता है परन्तु मनुष्य बुद्धि से नियंत्रित करता है। अतः मनुष्य ने इच्छाओं को मर्यादित करने के लिए नियम बनाए हैं। समाज में बनाए नियम समाज और व्यक्ति दोनों के लाभ के लिए बने हैं। इन नियमों के कारण मनुष्य का आचरण आदर्श बनता है और यदि आदर्श रहित समाज को स्वीकार किया जाता है तो हम अराजकता वाली स्थिति की ओर ही बढ़ेंगे। आज बिना विवाह के रहना स्वीकार किया है, कल परिवार के सदस्यों को भी यदि अमर्यादित आचरण की छूट देंगे तो पशु और मनुष्य के समाज में कोई अंतर नहीं रह जाएगा। जैसा पहले कहा गया है कि समाज में नियम बनाने के दो कारण होते हैं प्रथमतः वह नियम व्यक्ति के अपने लाभ के लिए होता है तथा समाज की व्यवस्था में सहायक होता है। नियम अपने पुराने अनुभव के आधार पर बनाए जाते हैं इस कारण नियम हमें उस हानि से बचाते हैं, जो भूतकाल में होती रही है। निकट सम्बन्धों में विवाह प्रकृति ने वर्जित नहीं कर रखा है परन्तु ऐसे विवाह करने से मनुष्य संतति की परम्परा रोग ग्रस्त होती है, उसकी संतानें बुद्धि और स्वास्थ्य से हीन होती हैं, इसलिए विवाह सम्बन्ध दूर देश और दूर परिवार में करना उचित है अतः शास्त्र में गोत्र, परिवार पीढ़ी आदि के छोड़ने की बात कही गई है। अनुभव ने इस नियम को जन्म दिया, अतः आज आप इस नियम को तोड़ते हैं तो इसकी हानि का अनुभव कुछ समय बाद समाज को होगा।

'परोपकारी' अप्रैल (द्वितीय) 2010, परोपकारिणी सभा, अजमेर-305 001 से साभार

आरक्षण का नया पिटारा

पंथ के आधार पर आरक्षण प्रदान करने के दुष्परिणामों की ओर इंगित कर रहे हैं : संजय गुप्त

आन्ध्र प्रदेश सरकार द्वारा अपने यहाँ के मुस्लिम समुदाय को चार प्रतिशत आरक्षण देने के फैसले को उच्चतम न्यायालय ने अंतरिम मंजूरी देने के साथ मामले को जिस तह संविधान पीठ के हवाले किया उससे एक नई बहस का माहौल तैयार हो गया है। आन्ध्र प्रदेश सरकार पिछले कई वर्षों से अपने यहाँ की मुस्लिम आबादी को शिक्षा और नौकरियों में आरक्षण देने के लिए प्रयासरत थी, लेकिन उसके ऐसे हर प्रयास को आन्ध्र उच्च न्यायालय ने खारिज कर दिया। वैसे तो देश के कुछ राज्यों में मुस्लिम समाज को अन्य पिछड़ा वर्ग घोषित करके आरक्षण की सुविधा दी गई है, लेकिन **यह पहली बार है जब आन्ध्र प्रदेश सरकार ने पंथ के आधार पर इस समाज को आरक्षण प्रदान किया।** यही कारण है कि उसे उच्च न्यायालय ने हर बार अमान्य किया। वैसे भी **यह समझना मुश्किल है कि आन्ध्र प्रदेश का समस्त मुस्लिम समाज पिछड़ा कैसे हो सकता है?** चूंकि भारतीय संविधान पंथ के आधार पर आरक्षण को अमान्य करता है इसलिए इस आधार पर आरक्षण देने की कोई भी कोशिश गंभीर परिणामों को जन्म दे सकती है। **ऐसा आरक्षण भारतीय समाज के लिए अत्यंत घातक भी साबित हो सकता है।**

इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि वर्तमान में औसत मुस्लिम समाज शिक्षा के मामले में अन्य दूसरे समाजों से बहुत पीछे है। इसके चलते उसे गरीबी और अभावों से जूझना पड़ रहा है। आर्थिक रूप से पिछड़े होने के कारण मुस्लिम समाज देश की मुख्य धारा में शामिल नहीं हो पा रहा है। **देश में अनेक राजनीतिक दल ऐसे हैं जो मुस्लिम समाज के हितों के प्रति खास तौर पर सचेत नज़र आते हैं, लेकिन उनकी यह सजगता सिर्फ इस समाज के वोट थोक रूप में प्राप्त करने के लिए ही अधिक है।** इन राजनीतिक दलों के रवैये के चलते मुस्लिम समाज एक प्रकार की असुरक्षा की भावना से ग्रस्त दिखता है। समस्या यह है कि खुद को उनका हितैषी बताने वाले राजनीतिक दलों की इसमें कोई दिलचस्पी नहीं कि यह समाज असुरक्षा की भावना से मुक्त हो, क्योंकि ऐसा होने पर उनके लिए मुसलमानों को वोट बैंक के रूप में एकजुट रखना और इसी आधार पर अपनी राजनीति चलाना मुश्किल हो जाएगा।

देश में लगभग 16 प्रतिशत आबादी मुस्लिम समाज की है। भारत में इंडोनेशिया के बाद सबसे अधिक आबादी मुसलमानों की है। **मुस्लिम आबादी के इतने अधिक प्रतिशत को देखते हुए उन्हें अल्पसंख्यक नहीं कहा जा सकता, लेकिन विडम्बना यह है कि आज अल्पसंख्यक और मुस्लिम एक-दूसरे के पर्याय बन गए हैं।** मुस्लिम समाज की एक समस्या यह भी है कि उसमें राष्ट्रीय नेतृत्व का अभाव है। इस अभाव के कारण यह समाज इस या उस राजनीतिक दल को अपना हितैषी मानने के लिए विवश होता रहता है। मुस्लिम समाज का शैक्षिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़ा होना कोई शुभ संकेत नहीं है, क्योंकि यह पिछड़ापन एक तो उन्हें तमाम रूढ़ियों से जकड़ रहा है और दूसरे खुद उसे तथा देश को आर्थिक तौर पर पीछे ढकेल रहा है। मुस्लिम समाज की यह स्थिति सामाजिक विषमता को बढ़ाने वाली भी है। मुस्लिम समाज के पिछड़ेपन को दूर करने के लिए कुछ ठोस कदम उठाए जाने आवश्यक हैं, **लेकिन इसमें संदेह है कि पंथ के आधार पर शिक्षा और नौकरियों में आरक्षण देने से इस समाज की समस्याओं का समाधान हो जाएगा।**

मुस्लिम समाज आजादी के बाद से ही कांग्रेस का परंपरागत वोट बैंक रहा है। बावजूद इसके कांग्रेस इस समाज की दशा सुधाारने में सहायक नहीं हो सकी। ऐसा तब हुआ जब आजादी के 40 वर्षों तक देश में कांग्रेस का ही शासन रहा। समय के साथ मुस्लिम समाज का कांग्रेस से कुछ मोह भंग हुआ और वे अन्य राजनीतिक दलों के निकट चले गए, लेकिन उनके लिए भी वे एक वोट बैंक ही रहे। वर्तमान में भाजपा और शिवसेना को छोड़कर जो भी राजनीतिक दल खुद को मुस्लिम समाज का हितैषी बताते हैं वे इस समाज को एक वोट बैंक ही मानते हैं। समाज के किसी वर्ग, समुदाय का आरक्षण के आधाार पर उत्थान करने की किसी कोशिश के पहले इस प्रश्न पर गौर किया जाना चाहिए कि क्या आरक्षण से अनुसूचित जातियों-जनजातियों का वास्तव में उद्धार हुआ है? इस प्रश्न पर इसलिए भी विचार किया जाना चाहिए, क्योंकि एक ओर जहाँ उच्चतम न्यायालय ने मुस्लिम समाज को चार प्रतिशत आरक्षण देने की आंध्र प्रदेश सरकार की मांग स्वीकार कर ली वहीं दूसरी ओर रंगनाथ मिश्र आयोग की उस रपट को लागू करने की मुहिम तेज होती दिख रही है जिसमें धाार्मिक और भाषाई अल्पसंख्यकों को आरक्षण देने की सिफारिश की गई है। पश्चिम बंगाल सरकार ने तो चुनावी लाभ लेने के लिए इस सिफारिश पर अमल की घोषणा भी कर दी है।

यह माना जा रहा है कि उच्चतम न्यायालय के फैसले के बाद केन्द्र सरकार रंगनाथ मिश्र आयोग की रपट पर अमल की संभावनाएं तलाशेगी। इसके आसार इसलिए भी अधिक हैं, क्योंकि महिला आरक्षण विधोयक में मुस्लिम महिलाओं को अलग से आरक्षण दिए जाने की व्यवस्था नहीं है और इसी कारण सपा, बसपा, राजद और कुछ अन्य दल कांग्रेस को मुस्लिम विरोधी बताने में लगे हुए हैं। यदि उच्चतम न्यायालय के इस फैसले के बाद रंगनाथ मिश्र आयोग की रपट पर अमल होता है तो आरक्षण की राजनीति एक नया रूप ग्रहण करेगी।

xxxxx स्थानाभाव के कारण आगे का भाग छोड़ दिया गया।

'दैनिक जागरण', दिल्ली, दि. 28.3.2010 से साभार

मुसलमानों के लिए एनसीएम ने मांगा आरक्षण

राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग (एनसीएम) ने सरकारी विभागों और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसयू) में अनुसूचित जाति की तरह अल्पसंख्यक समुदाय के दलित लोगों को भी आरक्षण देने की मांग की है।

एनसीएम के अध्यक्ष मोहम्मद शफी कुरैशी ने बातचीत में कहा कि सरकारी विभागों तथा पीएसयू में अल्पसंख्यक की हालत अत्यंत दयनीय है और केन्द्र सरकार द्वारा गठित रंगनाथ मिश्रा आयोग ने भी इस तथ्य को माना है। उन्होंने कहा, 'इस दिशा में हमने भी एक रिपोर्ट तैयार की है जिससे यह बात जाहिर होती है कि हिन्दू दलितों की तरह मुस्लिम दलितों और ईसाई दलितों की हालात भी बहुत खराब है। इसलिए हमारी सरकार से मांग है कि उनको भी सरकारी नौकरियों में आरक्षण दिया जाए।' उन्होंने मांग की कि 'सरकार सार्वजनिक क्षेत्र में अल्पसंख्यकों की संख्या बढ़ाने के लिए जल्द से जल्द कोटा निर्धारित करे।' कुरैशी ने कहा कि वर्ष 2001 की जनगणना के मुताबिक देश में कुल 18.4 फीसदी लोग अल्पसंख्यक समुदाय से ताल्लुक रखते हैं, लेकिन उनका सरकारी विभागों तथा सरकारी कंपनियों में बहुत कम प्रतिनिधित्व है। कुरैशी ने कहा कि प्रधानमंत्री के 15 सूत्री कार्यक्रम में अल्पसंख्यकों को भर्ती किए जाने के मामले में विशेष तवज्जो देने की बात कही थी, लेकिन अभी तक ऐसा नहीं हुआ। गौरतलब है कि 15 सूत्री कार्यक्रम में सरकार ने रोजगार देने वाले राष्ट्रीयकृत बैंक और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों से कहा था कि भर्ती करने के दौरान अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

'राष्ट्रीय सहारा' दिल्ली, 18 जून 2010 से साभार

पाठकों के लिए टिप्पणी :

1. *क्या यह मांग आयोग की अनधिकार चेष्टा नहीं है ?*
2. *क्या मानवाधिकार आयोग के होते हुए ऐसे आयोग (केन्द्र और राज्यों में) देश की गरीब जनता पर अनावश्यक भार नहीं है ?*

कुछ तड़प-कुछ झड़प

-राजेन्द्र जिज्ञासु

हज़ूर (रसूल मकबूल मुहम्मद साहब) ने फर्माया, 'मेरी यह कामना है कि मैं अल्लाह के पथ लड़ते-लड़ते शहीद हो जाऊँ। फिर जीवन मिले फिर शहीद हो जाऊँ। तीसरी बार जीवन मिले और तीसरी बार बलिदान का गौरव प्राप्त करूँ।' **कहिए प्यारे ! यह पुनर्जन्म का सिद्धांत तो आपके घर से ही निकल आया।** क्या यह कथन कुफ्र है? क्या यह आपको अमान्य है? यह आपकी लोकप्रिय पुस्तक 'दो इस्लाम' से हमने उद्धृत किया है।

कुरान का यह फर्मान तो मियां सुना ही होगा, 'अल्लाह मुर्दा से ज़िन्दा को और ज़िन्दा से मुर्दा को निकालता है।'

मियाँ जब अल्लाह रात को दिन में व दिन को रात में प्रविष्ट करता है ....इसको आप शृंखला से प्रवाह से मान रहे हो तो मुर्दे से जीवित होना और जीवित का मरण भी शृंखला के रूप में मानना पड़ेगा।

आपको क्या पता है कि आपके दरीबा के मौलाना हैरत देहलवी आदम के पुतले के अंगों का तो कुरान के आधार पर निर्माण मानते थे, जीव का नहीं। जीव तो अनादि है। ध्यान से मिर्जा हैरत का 'मुकदमा तफसीर उल-कुरान' भी देख लें। देहली के मौलाना महबूब अली भी प्रकृति व जीव को अनादि ही मानते थे।

रही वेद से पुनर्जन्म के प्रमाणों की बात तो क्या बार-बार दोहराएं। आप नई सड़क जाकर 'स्वाध्याय सन्दोह' लेकर एक नहीं कई प्रमाण देख लें। Gems of Vedic Wisdom में देख लें। 'गंगा ज्ञान सागर' में बहुत प्रमाण हमने दिए हैं।

इल्मुद्दीन का पुनर्जन्म : हमारे महाशय राजपाल जी के हत्यारे इल्मुद्दीन को फांसी दी गई। उसने मरणोपरान्त सपने में अपनी पड़ोसन चिराग बीबी को अपनी माँ के नाम सन्देश दिया कि शोक न मनाओ। रोया न करो मैं शीघ्र ही अपने घर आ रहा हूँ। थोड़े समय बाद हत्यारे के भतीजे अब्दुलरशीद के रूप में उसका आवागमन हो गया। मुसलमान भाई पुनर्जन्म की यह घटना पाकिस्तान से प्रकाशित उसकी जीवनी में पढ़ लें।

इस्लाम ने खुलकर पुनर्जन्म के सिद्धान्त को मान तो लिया।

'पाक्षिक परोपकारी' केसरगंज, अजमेर-305 001
वर्ष 51, अंक-9, मई (प्रथम) 2010 से साभार

जिन लोगों को भारत से प्यार है, या जो भारत के हितैषी हैं, वे लोग 'वन्देमातरम्' गीत को मंत्र के रूप में स्वीकार करेंगे।

-ग्रियर्सन (इंग्लैण्ड की एक सभा में भाषण)
विश्व सूक्ति कोश, लेखक : डॉ. श्याम बहादुर वर्मा और डॉ. मधु वर्मा, पृ. 962 से साभार

धर्म परिवर्तन के बाद पति की जायदाद में पत्नी का हक नहीं

यदि पत्नी अपने पति के धर्म से अलग दूसरा धर्म ग्रहण कर लेती है तो वह पति की सम्पत्ति पर अपना अधिकार खो देती है तथा दूसरा धर्म ग्रहण करते ही स्वतः विवाह विच्छेद हो जाता है। यह महत्वपूर्ण फैसला शनिवार को यहां न्यायालय सुल्तानपुर के सीनियर सिविल जज ने दिया। सुल्तानपुर में सिविल जज सीनियर महेन्द्र सिंह ने शहनाज़ बेगम की ओर से दायर वाद संख्या 194/07 एन.आर.के संदर्भ में प्रतिवादिनी अमरावती, स्व. कौशल शर्मा ग्राम हयातपुर थाना गोसाईगंज की पत्नी है तथा सभी सरकारी रिकॉर्ड में इनका नाम कौशल किशोर शर्मा के साथ उनकी धर्म पत्नी के रूप में दर्ज है, अब जबकि शर्मा का 2007 में देहान्त हो गया तो उनके फंड, पेंशन, मृतक आश्रित को नौकरी की यही हकदार है।

शहनाज़ बेगम की ओर से बहस करते हुए अधिवक्ता मो. अनीस खां ने कहा कि कौशल किशोर शर्मा ने 1975 में धर्म परिवर्तन कर लिया था तथा अपना नाम मोहम्मद कौसर रख लिया था, उसी समय उनकी पत्नी अमरावती ने भी धर्म परिवर्तन करते हुए अपना नाम मरियम रख लिया, लेकिन 1986 में इन्होंने दुबारा धर्म परिवर्तन करते हुए फिर से अमरावती बन गयी तथा साथ में दो बेटों व एक बेटी को भी अपने ही धर्म में रखा। इधर मो. कौसर ने 1986 में अपना निकाह शहनाज़ बेगम से किया, जिनसे तीन लड़कियां तथा दो लड़के हैं, मोहम्मद कौसर ने सरकारी रिकॉर्ड में अपना नाम कौशल किशोर शर्मा बदलने तथा नॉमिनी की जगह अमरावती का नाम हटाकर शहनाज़ बेगम करने के लिए मृत्यु से पहले दीवानी न्यायालय में दो वाद दायर कर रखे हैं। न्यायाधीश महोदय ने दोनों पक्षों के अधिवक्ताओं को सुनने तथा वादिनी एवं प्रतिवादिनी की ओर से भी कागजातों का अध्ययन करने के बाद यह निर्णय दिया कि अमरावती अपने बच्चों के साथ पहले ही संबंध विच्छेद कर चुकी है तथा दोबारा अपने पुराने धर्म में वापस चली गयी, जबकि शहनाज़ बेगम व उनसे पैदा बच्चे 1986 से मृत्यु तक मो. कौसर के साथ ही रहे तथा मो. कौसर ने अपना नाम बदलने एवं नॉमिनी की जगह शहनाज़ बेगम का नाम डालने के लिए वाद दायर कर रखा है। इसलिए शहनाज़ बेगम व उनसे पैदा बच्चे ही मौ. कौसर के फण्ड, पेंशन तथा मृतक आश्रित की जगह नौकरी के हकदार हैं।

'राष्ट्रीय सहारा', दिल्ली, दिनांक 25.4.2010 से साभार

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के 13 लोगों पर राष्ट्रद्रोह का मामला

मध्य प्रदेश के शाजापुर में कोतवाली पुलिस ने मंगलवार को लक्ष्मीनगर स्थित एक मकान में ठहरे 13 संदिग्ध व्यक्तियों को गिरफ्तार कर उनके खिलाफ राष्ट्रद्रोह का मामला दर्ज किया है। **पकड़े गए सभी लोग उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर और बागपत जिले के हैं।**

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रामजी श्रीवास्तव ने पत्रकारों को बताया कि कोतवाली पुलिस ने सुबह लक्ष्मीनगर डिपो के पीछे मजीद खां नामक व्यक्ति के निवास पर छापा मारकर 13 संदिग्ध व्यक्तियों को गिरफ्तार किया। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश के निवासी ये सभी व्यक्ति दरी और कम्बल बेचने के नाम पर यहाँ ठहरे थे और उसकी आड़ में ग्रामीण क्षेत्रों में धार्मिक भावनाएं भड़काने के काम में लगे हुए थे। जिन व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया उनमें रिजवान (25), सगीर (18), जावेद (20), परवेज़ (19), मो. इरशाद (22), इरफान (30), नदीम (18), इस्लाम (26), फुरकान (25), इमरान (18), इरफान (19), हफीज़ (55), गुलज़ार (19) हैं। उन्होंने बताया कि इनमें गुलजार जिला मुजफ्फरनगर के बुढ़ाना का रहने वाला है, जबकि शेष सभी आरोपित ग्राम बिजरौन थाना बड़ौत जिला बागपत के रहने वाले हैं। उन्होंने बताया कि इन व्यक्तियों के खिलाफ कोतवाली पुलिस ने धारा 153 (क) एवं (ख) तथा 34 के तहत प्रकरण पंजीबद्ध किया है। श्रीवास्तव ने बताया कि पुलिस ने गिरफ्तार व्यक्तियों के पास से 11 मोबाइल फोन ज़ब्त किए हैं। उन्होंने बताया कि साइबर अपराध विशेषज्ञों द्वारा इनके मोबाइल फोनों की गहन जांच की जा रही है।

'राष्ट्रीय सहारा' दिल्ली, दिनांक 30-6-2010 से साभार

अपनी भाषा है भली, भलो आपुनो देस।
जो कुछ अपनो है भलो, यही राष्ट्र-संदेस।।

-अज्ञात

लड़ें क्यों हिन्दुओं से हम यहीं के अन्न से पनपे हैं
हमारी भी दुआ ये है कि गंगा जी की बढ़ती हो

-अकबर इलाहाबादी

विश्व सूक्ति कोश, लेखक : डॉ. श्याम बहादुर वर्मा और डॉ. मधु वर्मा, पृ. 940, 941 से साभार

सिकुड़ती सरकार लुटती जनता

-मुद्राराक्षस

भारतीदासन विश्वविद्यालय से अवकाश प्राप्त प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रो. वेंकटेश आथ्रेया ने हाल में चेन्नै के एक सेमिनार में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के भारत में हुए दखल पर महाभारत के एक पात्र शान्तनु की कथा का उद्धरण देते हुए कहा कि शान्तनु गंगा पर मोहित हुए और उससे विवाह करना चाहते थे। गंगा ने शर्त रखी-तुम मुझसे सवाल नहीं करोगे। जिस दिन सवाल किया, मैं तुम्हें छोड़कर चली जाऊँगी। उसकी सन्तानें होती रहीं और वह हर नवजात को नदी में प्रवाहित करती रही। अन्त में शान्तनु का धीरज छूट गया। अंतिम बच्चे को प्रवाहित करने से पहले शान्तनु ने पूछ ही लिया-तुम ऐसा क्यों कर रही हो? गंगा ने उसी वक्त शान्तनु का साथ छोड़ दिया। वेंकटेश आथ्रेया ने कहा-**भारत में बहुराष्ट्रीय कंपनियां गंगा हैं। आप उनसे सवाल नहीं कर सकते। वे अपनी शर्तों पर भारत के साथ हैं।**

हमने इसी कॉलम में लिखा था कि कैसे भारत में कामगारों की जमा राशि प्राविडेंट फंड की व्यवस्था करने के लिए भारत सरकार ने बहुराष्ट्रीय कंपनियों की वे शर्तें स्वीकार की थीं जो हमारी स्वायत्तता में सुराख करती थीं। भारत में सेज नाम से जो बड़ा भूभाग पूंजीपतियों को अर्पित किया गया, उस पर ही इस देश की व्यवस्था का कितना अधिकार बाकी रखा गया है? 1996 की विश्व बैंक रिपोर्ट में यह बात साफ लफ़्ज़ों में दुहराई गई थी कि सरकारों को अपने हाथ-पैर सिकोड़ने चाहिए यानी सरकारों को चाहिए कि देश को चलाने के काम का बहुत-सा हिस्सा निजी हाथों को सौंप देना चाहिए और **हमने देखा कि आज अखबार ही नहीं रचनात्मक या वैचारिक लेखन भी विदेशी कंपनियों का मोहताज हो गया। हमारा सारा बाज़ार, साग-सब्जी की बिक्री तक हमारे हाथों से निकल गई।**

कुछ दिनों पहले बीटी बैंगन की प्रजाति भारत के जनाक्रोश के सामने खारिज हुई थी। दक्षिण भारत में विदेशी बीजों की दुकानें काफी पहले ही बंद हुई थीं और पश्चिमी तट के नमक निर्माताओं ने बहुराष्ट्रीय कंपनी को क्षेत्र से खदेड़ा था। लेकिन गंगा शांतनु से अंततः अपनी शर्तें मनवा रही है। **अब केन्द्र सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने फैसला किया है कि मंत्रालय एक कानून बनाएगा-जैव टेक्नालॉजी नियमन प्राधिकरण के गठन के लिए। इस प्राधिकरण के बाद कृषि और पर्यावरण मंत्रालय अपने हाथ समेट लेंगे यानी जैव प्रौद्योगिकी देश के फल और सब्जी उत्पादक किसानों को विदेशी कृषि उत्पादकों की सीधी गुलामी से नहीं बचाएगी।** जैव टेक्नालॉजी नियमन प्राधिकरण के गठन के बाद देश और समाज के लिए नुकसानदेह बीज या उत्पाद के विरुद्ध आन्दोलन और संघर्ष करने का हमारा अधिकार हमसे छीन लिया जाएगा। सुनते हैं कि यह विधान भी होने वाला है कि जैव प्रौद्योगिकी के बीटी बैंगन जैसे किसी भी उत्पाद के विरुद्ध आवाज़ उठाने वाले को कारावास या जुर्माने की सजा भी हो सकती है।

पिछले लगभग दो बरसों के छोटे से अरसे में हमने यह खौफनाक नज़ारा देखा कि जिस देश में तीन-चौथाई जनता की पहुँच से उसे जिन्दा रखने वाली दाल-रोटी की कीमत लगभग तीन सौ गुना बढ़ गई, वहीं कुछ करोड़ उच्च मध्य वर्ग के शौक और सुविधा की वस्तुएं लगातार सस्ती होती गई हैं। एक टीवी सेट या धुलाई की मशीन खरीदने पर डीवीडी, मिक्सी, जूते, घड़ी और धूप के चश्मे जैसी चीज़ें मुफ्त ले आएं। टीवी का जो रंगीन सेट आज से दस साल पहले आठ दस हज़ार का था अब तीन हज़ार में विज्ञापित होता है।

उम्दा, ब्रांडेड कमीज़ एक खरीदें और एक मुफ्त ले जाएं, लेकिन गरीब आदमी शीशी में पचास एमएल सरसों का तेल भरवाने की क्षमता नहीं रखता। कोई रेफ्रिजरेटर के साथ बिजली के दूसरे यंत्र मुफ्त ले सकता है पर करोड़ों लोग सौ ग्राम चीनी के लिए तरसते हैं। **एक मोटर बनाने वाली कंपनी एक लाख एकड़ में खेती करने की तैयार में है क्योकि आटा बाज़ार में बीस रुपये किलो से ऊपर हो गया है। आज भी साफ पानी से तीस करोड़ से ज़्यादा लोग वंचित हैं और देश में नदी के ठेके उन्हें मिल रहे हैं जो बोतलों में मिनरल वाटर बेच रहे हैं।**

सरकार अपने हाथ पैर सिकोड़ रही है ताकि आमजन को लूट कर विपन्न बनाने वाले लोग अवाम की हड्डियों को पीस कर स्वादिष्ट जेली तैयार कर सकें। वामपंथ पश्चिम बंगाल से आगे कहीं हस्तक्षेप की हैसियत में नहीं है और बाकी? उन्हें साठ-साठ करोड़ की कोठियां अपने लिए बनवाने से कब फुरसत है?

हमें गर्व है हम भारतीय हैं।

(प्रश्न : क्या हम यह सब देखने के लिए स्वाधीनता के लिए लड़े थे?)

राष्ट्रीय सहारा, दिल्ली, दिनांक 30 मई 2010 से साभार

हिन्दू-मुस्लिम रिश्तों की महागाथा

-संतोष तिवारी

क्या आपने यह किताब पढ़ी है ?

एमजे अपने दादा को दादू कहते थे, जिनका नाम प्रयाग था। वह जन्म से हिन्दू थे और उनका नाम पवित्र नदियों गंगा और जमुना के संगम के नाम पर रखा गया था।

बक्सर की पैतृक ज़मीन पर सन् 1870 में आए अकाल ने प्रयाग के माता-पिता को निगल लिया, तो अनाथ प्रयाग अपनी किस्मत की अनजानी मंज़िल की तरफ निकल पड़ा। उसने अपने माता-पिता से बंगाल की जूट मिलों के बारे में सुन रखा था, सो एक गाड़ी के फर्श पर सोते हुए अपनी मंज़िल यानि चंदन नगर जाकर ही उतरा। लंबी यात्रा विक्टोरिया जूट मिल के पास जाकर खत्म हुई, जहाँ भूख-प्यास का मारा प्रयाग बेहोश होकर गिर पड़ा। उस वक्त गहन रात थी और किसे मालूम था वह प्रयाग की मंज़िल नहीं, बल्कि एक नई जीवन-यात्रा की शुरुआत थी, जो न जाने नियति और इतिहास के किन-किन खूनी रास्तों से गुज़रेगी।

तो...इस तरह शुरू होती है प्रख्यात पत्रकार एम.जे. अकबर की रोमांचकारी पारिवारिक गाथा 'खून के रिश्ते'। भूख-प्यास का मारा प्रयाग रात में जिस जगह जाकर बेहोश हुआ था, वह थी कलकत्ता से करीब तीस किलोमीटर दूर हुगली नदी के किनारे तेलिनीपारा, जहाँ विशाल विक्टोरिया जूट मिल खड़ी थी और स्काटिश उद्यमी नई जूट मिलें लगाने की तैयारी कर रहे थे। 'चाय की दुकान के मालिक वली मोहम्मद ने सुबह चार बजे जब अपनी चाय की दुकान के दरवाज़े खोले, तो वहाँ बेहोश पड़े लड़के को उठाकर अंदर ले आए। उनको अकाल के मारों से सचमुच की हमदर्दी थी। उनकी पत्नी दिलजान बीबी ने उसे चावल दाल खिलाए और प्रयाग को बर्तन धोने के काम पर लगा दिया। कुछ दिनों में प्रयाग ने वली और दिलजान का दिल जीत लिया। वे नि:संतान थे और धीरे- धीरे दिलजान जहीन लड़के को चाहने लगी।'

अब ज़रा नियति को देखिए। वली मोहम्मद बिहार से आए एक रिश्तेदार से मिलने गए और वहीं हैज़े ने उनको निगल लिया। प्रयाग उनकी आखिरी इबादत के बाद वापस आया, तो दिलजान बीबी ने उससे एक बच्चा देने की फरमाइश्ा की। वह मरने से पहले घर में किलकारी सुनना चाहती थीं। बीबी ने कहा, 'मेरे खूबसूरत नौजवान, मुझे तुम्हारी जात वाली कोई लड़की देखनी होगी।' प्रयाग ने कहा, 'अगर मैं किसी से शादी करूंगा, तो वह तुम्हारी जात वाली होगी, माई।' और इस तरह **बक्सर के अकाल से भागकर तेलिनीपारा पहुँचा वह अनाथ लड़का प्रयाग से रहमतउल्लाह, यानि अल्लाह की रहमत, बन गया।** दिलजान बीबी उसके लिए पत्नी पहले ही ढूंढ चुकी थीं, जो रिश्ते की उनकी बहन सायरा की बारह साल की सबसे बड़ी बेटी थी।

(XXXXXX छोड़ दिया गया भाग)

पूरी किताब में ऐसी अनगिनत कथाएं और उपकथाएं मौजूद हैं, जो समानांतर इतिहास को दर्ज करते हुए चलती हैं। अशिक्षा और अज्ञान भी किस तरह जानलेवा हो सकता है, इसका एक रोचक प्रकरण देखिए। तेलिनीपरा में हैजा फैलने के बाद एक ऑस्ट्रेलियाई वहाँ लोगों को टीका लगाने आया। लेकिन कुछ मुसलमानों ने यह अफवाह फैला दी कि टीके तीन तरह के होते हैं । एक वे, जो अंग्रेज़ों को हैजे से बचाते हैं, दूसरे वे, जो बंगालियों को लगाए जाते हैं, जिससे तेज़ बुखार आता है और तीसरे प्रकार के टीके खासतौर पर मुसलमानों के लिए बने हैं, जिनके लगने के दो घंटे के भीतर वे मर जाते हैं। कोई मुसलमान टीका लगवाने को तैयार नहीं था, लेकिन रहमतउल्लाह ने टीका लगवाने का फैसला किया। पूरे इलाके के लोगों और परिवार में शोक की लहर फैल गई।

आखिर टीका लगा और रहमतउल्लाह जीवित रहे, सभी में टीका लगवाने की होड़ लग गई। अकबर, यानी लेखक के अब्बाजी, (पिता) को बचपन में बड़े लाड़-प्यार से पाला गया। सात साल की उम्र से ही वह हर सुबह सोने के वर्क, समुद्रतल पर पाया जाने वाला खुशबूदार पदार्थ, केवड़े के फूल का अर्क जिसे सफेद दानेदार शक्कर के साथ खासतौर से तैयार किया जाता था को सिरके, नींबू के रस और गुलाब जल के साथ पीते थे। अपनी अंग्रेज़ी पढ़ाई के साथ वह तेलिनीपारा में अंग्रेज़ी जानने वाले पहले हिन्दुस्तानी भी बन गए। ब्रितानी मिलों के कुछ अंग्रेज़ अफसरों से उनकी दोस्ती हो गई और प्रगतिशील मिजाज की एक नई पीढ़ी उनके इर्द-गिर्द जमा होती गई, जिसमें हिन्दू और मुसलमान दोनों थे। सन् 1931 में पहली बोलती भारतीय फिल्म 'आलमआरा' रिलीज़ हुई, तो अंग्रेज़ दोस्तों ने उन्हें कलकत्ता के मैट्रो थिएटर में आमंत्रित किया। यह खास मौका था, जिसके लिए तैयारियां की गईं। लेखक के पिताजी लिनेन का सूट, फेवर लियूबा की चमचमाती सफेद घड़ी और चाइना टाउन के फरमाइशी जूतों से सजे-धजे अपनी शोफर वाली राज कैडिलेक कार पर सवार होकर फिल्म देखने गए। वहाँ अंग्रेज़ दोस्तों के साथ सिगरेट के कश लगाए, लेमोनेड की चुस्कियां लीं और गाते हुए थिएटर से बाहर निकले। लेखक ने अपने पिताजी की शादी और पहली रात का बिंदास अंदाज़ में जिक्र किया है। वह किसी गोरी लड़की से शादी करना चाहते थे। 'रहमतउल्लाह के दोस्त बुखारी ने अमृतसर के एक धनी कालीन व्यापारी की सबसे छोटी बेटी इम्तियाज़ से रिश्ता जुड़वा दिया। **लेकिन पहली रात जब अकबर ने दुल्हन का चेहरा ऊपर उठाया, तो वह चीख पड़ी। लेखक लिखते हैं, 'मेरी मां ने पिताजी को सच्चाई कभी नहीं बताई। उसने उससे पहले कभी इतना काला आदमी नहीं देखा था।**

सिर्फ रिश्ते ही नहीं, इतिहास की पर्तों को भी लेखक हर पन्ने पर उघाड़ते चलते हैं। बात 1947 की। अंग्रेज़ भारत छोड़कर जाने का ऐलान कर चुके थे। जिन्ना बंटवारे की जिद्द पर कायम थे। आखिर बंटवारा हुआ और कलकत्ता में सांप्रदायिक वैमनस्य की खूनी लड़ाई शुरू हो गई।

हिन्दू-मुस्लिम रिश्तों की महागाथा ...

हालात का फायदा उठाने के लिए लुटेरे भी सक्रिय हो चुके थे। ट्रेन की बोगियां लूटने वाले राम चटर्जी की नज़रें तेलिनीपारा के सबसे समृद्ध मुस्लिम परिवार पर थीं और आखिरकार वह सफल रहा। रहमतउल्लाह के परिवार को जान बचाने के लिए भागना पड़ा। ढाका में शरण ली। बाद में लेखक की मां लाहौर चली गईं, ज़मीन से उखड़े वृक्ष की तरह रहमतउल्लाह बेजान-से हो गए और अकबर ने उनके सहित परिवार को वापस तेलिनीपारा में लाने का बीड़ा उठा लिया।

लेखक, यानी एमजे अकबर ने बहुत बाद में अपने पिताजी से एक दिन पूछा कि 1948 में वह पाकिस्तान से लौट क्यों आए, तो उनका जवाब था, 'पाकिस्तान में मुसलमान बहुत थे।' सुनने में यह बात कुछ अजीब लगती है, लेकिन भारत-पाक बंटवारे के आइने में देखें, तो इस जवाब में लेखक ने जैसे पूरी सदी के भारतीय मुसलमानों की नियति का दर्द घोल दिया है। इसके बाद की कहानी मोबाशर, यानी पुस्तक के लेखक एम.जे.अकबर, के साथ आगे बढ़ती है। कॉन्वेंट की स्कूली शिक्षा के बाद कलकत्ता में अंग्रेज़ी माध्यम वाले स्कूल में उनकी पढ़ाई ने उन्हें अलग किस्म का इंसान बना दिया, जो फर्राटेदार अंग्रेज़ी बोलता था और तेलिनीपारा की मिलों के गोरे अफ़सर मित्रता से जिसे अपने गले लगाते थे। लेकिन एक परिवार के महासंघर्ष और इंसानियत कायम करने की लंबी जद्दोजहद के समानांतर सांप्रदायिकता की विषधारा भी बहे जा रही थी। किशोरवय मोबाशर की आँखें पहली बार बिकनी पहनकर फोटो खिंचवाने वाली भारतीय हीरोइन शर्मिला टैगोर की गहरी आँखों में डूबने के सपने देख रही थीं, लेकिन उधर तेलिनीपारा में सांप्रदायिक वहशी किसी दूसरी तैयारी में लगे थे। खून के रिश्तों और रिश्तों के खून की इस महागाथा का अंत लेखक ने अपने ऊपर हुए जानलेवा हमले के जिस अंजाम के साथ किया है, शायद उसी में नए भारत में हिन्दू-मुस्लिम रिश्तों का संदेश भी छुपा है। पुस्तक में आपको इस सवाल का जवाब भी मिल जाएगा कि एम.जे.अकबर ने पत्रकारिता का रास्ता क्यों चुना?

पुस्तक में आपको इस सवाल का जवाब भी मिल जाएगा कि एम जे अकबर ने पत्रकारिता का रास्ता क्यों चुना?

किताब : खून का रिश्ता मूल्य : 250/रु.
लेखक : एम.जे.अकबर,
प्रकाशक : हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा.लि.
40 जोरबाग लेन, नई दिल्ली-3

'दैनिक जागरण' दिनांक 3 अगस्त 2009 से साभार

टिप्पणी : पाठक कृपया ''भारतीय मुसलमानों के हिन्दू पूर्वज मुसलमान कैसे बने'' पुस्तक, मूल्य-20/रु. मात्र, हिन्दू राइटर्स फोरम, 129-बी, एम.आई.जी.राजौरी गार्डन, नई दिल्ली से मंगवा कर अवश्य पढ़ें।

बाबरी विध्वंस कोई बड़ी घटना नहीं : वहीदुद्दीन

बाबरी मस्जिद के विध्वंस और पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह को लेकर मचे सियासी बवाल के बीच इस्लामी विद्वान् मौलाना वहीदुद्दीन खान ने सच्चाई का एक और आइना दिखाया है। बकौल खां, बाबरी विध्वंस इतना बड़ा मुद्दा नहीं था, जितना कि उसे बना दिया गया। दुनिया भर में सैंकड़ों बड़ी इबादतगाहें तोड़ी जा चुकी हैं, लेकिन तब कभी इतनी बात नहीं हुई।

पाकिस्तान व अफगानिस्तान में जज़िया कर देने के सवाल पर खान ने साफ अल्फाज़ में कहा कि, जज़िया इस्लाम का कोई परमानेंट कानून नहीं है।

'राष्ट्रीय सहारा' दिल्ली, दिनांक 2-5-2009 से साभार

केरल में हाइकोर्ट ने पाए 'लव जेहाद' के संकेत

केरल उच्च न्यायालय ने कहा कि राज्य में 'लव' के नाम पर जबर्दस्ती धर्म परिवर्तन कराने के संकेत मिल रहे हैं। अदालत ने सरकार को इन 'भ्रामक' हरकतों को रोकने के लिए कानून बनाने की सलाह दी। अदालत ने कहा, **'प्यार की आड़ में किसी तरह का जबर्दस्ती और भ्रामक धर्मान्तरण नहीं किया जा सकता।**

न्यायाधीश केटी शंकरण ने 'लव जेहाद' गतिविधियों में शामिल दो आरोपियों की अग्रिम जमानत याचिका को खारिज कर दिया। 'लव जेहाद' में तथाकथित तौर पर दूसरे धर्म की लड़कियों को मुस्लिम लड़कों से शादी का प्रलोभन की आड़ में धर्मान्तरण किया जाता है।

'लव जेहाद' मामलों की सुनवाई कर रही अदालत ने केस डायरी की छानबीन के बाद पाया कि जबर्दस्ती धर्म परिवर्तन के संकेत मिले हैं। न्यायाधीश ने कहा कि पुलिस की कुछ रिपोर्टों से यह बात जाहिर हुई कि एक खास धर्म की लड़कियों को कुछ संगठनों के 'आशीर्वाद' से दूसरे धर्म में परिवर्तन कराने के ठोस प्रयास हुए।

'राष्ट्रीय सहारा' दिल्ली, दिनांक 10-12-2009 से साभार

सल्तनतकाल में प्रशासनिक सेवाओं में हिंदुओं की नियुक्ति

-पूजा सिंह

सल्तनत काल में उच्च प्रशासकीय पदों पर हिन्दू धर्म परिवर्तित हिन्दुओं की नियुक्तियों के भी उदाहरण मिलते हैं। भारत जैसे गैर मुस्लिम आबादी वाले राज्य में लगातार यहाँ की जनता से तनाव और विरोध की स्थिति में अधिक नहीं रहा जा सकता था। **इस काल में हिन्दू खाँ नामक व्यक्ति का उल्लेख मिलता है। यह क्रमशः युजबान ओर शोलादार के पद से उन्नति करता हुआ खजांची के पद पर नियुक्त था।** रज़िया के शासन काल में इसने और उन्नति की। बलबन का युद्ध मंत्री इमाद-उल-मुल्क रावत के संबंध में कहा जाता था कि वह राजपूत था। **बलबन के काल में ही कोतवाल वीरजतन और हथियापायक दस हज़ार वेतन वाले अधिकारी थे।** कुछ इतिहासकारों ने तो यहाँ तक लिखा है कि सल्तनत काल के पैदल सिपाही लगभग संपूर्ण हिन्दू थे।

अलाई राज्यकाल में ठाकुर फेरी नामक व्यक्ति का उल्लेख मिलता है जो टकसाल का उच्च अधिकारी था। मंगोल नेता तारतक अलीबेग और तार्गी के आक्रमण के समय शाही सेना का नेतृत्व कदीराय नामक हिन्दू अफसर कर रहा था जो दक्षिण का वायसराय था। दक्षिण का नायक मलिक काफूर तथा खुसरो खाँ धर्म परिवर्तित मुसलमान थे।

गयासुद्दीन तुगलक के शासनकाल में मलिक यकलाखी नामक व्यक्ति का उल्लेख मिलता है जो हिन्दू था। चुनार अभिलेख से पता चलता है कि साईं नामक व्यक्ति तुगलक का वजीर था। करनाल में मेहता नामक हिन्दू के प्रतिष्ठित पद पर होने का उल्लेख मिलता है। खन्ना नामक व्यक्ति को धर्म परिवर्तित कर नायब वज़ीर के पद पर नियुक्त किया गया। रतन नामक हिन्दू को सीवान का गवर्नर बनाया गया। धार नामक हिन्दू को दक्षिण का नायब वज़ीर नियुक्त किया गया। राय बरन को गुलबर्गा का मुफ्ति बनाया गया। **इब्नबतूता अजमेर में एक मुस्लिम गवर्नर का उल्लेख करता है जो प्रारंभ में हिन्दू था। मुहम्मद तुगलक के वजीर अहमद अयाज के विषय में कहा जाता है कि वह देवगिरि का रहने वाला व्यक्ति था जिसका नाम हरपाल देव था।**

आई.एच.कुरैशी ने लिखा है कि मुहम्मद तुगलक के शासन काल में हिन्दुओं को अधिक सम्मान मिला जिसको देखकर अन्य दरबारी ईर्ष्या करने लगे। सुल्तान ने जैनियों को अधिक सम्मान दिया। आगा मेंहदी हुसैन का मत है कि मुहम्मद तुगलक की मृत्यु के बाद भी जैनियों का सम्मान बना रहा। फिरोज़ तुगलक के कट्टर धार्मिक विचारधारा के बावजूद भी जैनी विद्वान को संरक्षण प्राप्त होता रहा। बरनी ने अपनी पुस्तक 'फतवा-ए-जहाँदारी' में हिन्दुओं के ऐश्वर्य का वर्णन किया है।

फिरोज़ तुगलक हिन्दुओं को निम्नस्तर के पदों पर नियुक्त करता रहा। अजीज़ अहमद का विचार था कि फिरोज़ तुगलक की कट्टर धार्मिक नीति के बावजूद वित्त विभाग में निम्न स्तर के पदों पर हिन्दुओं की सेवाएं बनी रहीं और वे कदाचित ही ऊँचे पद प्राप्त करने में सफल हुए। फिरोज़ ने अपनी माँ के संबंधी राय भीरू भट्टी को अंगरक्षकों का प्रधान नियुक्त किया। बदाँयूनी के अनुसार एक मुस्लिम मदरसे में एक ब्राह्मण को प्रोफेसर के पद पर नियुक्त किया गया। समकालीन लेखकों के विवरणों से पता चलता है कि हिन्दू सरदार सुल्तान से बराबर संपर्क रखता था और वे राजनीति में भी दिलचस्पी लिया करते थे। आगा मेंहदी हुसैन और आई.एच. कुरैशी के अनुसार तुगलक सुल्तानों के समय हिन्दुओं को ऊँचे पदों पर रखा जाता था। यह तुगलक सुल्तानों की एक चाल थी ऐसा करके वह कभी-कभी हिन्दुओं के विद्रोहों को दबाने के लिए दूसरे हिन्दू सरदारों को प्रलोभन देकर उनका समर्थन प्राप्त करते थे।

बहलोल लोदी ने अभिजात वर्ग के विशेष अधिकारों और राजकीय चिह्न को एक हिन्दू सरदार वीर सिंह नायक को दिया और इस संबंध में दरिया खाँ लोदी के दावे को स्वीकार नहीं किया। **आर.एस.शर्मा ने लिखा है कि उस समय भूमि संबंधी अभिलेख हिन्दी में ही रखे जाते थे।** सिकंदर लोदी ने हिन्दुओं को फारसी सीखने के लिए प्रेरित किया और उसके निर्देश में बहुत से फारसी सीखे हुए हिन्दुओं को प्रशासन में सम्मिलित किया। आई.एच.कुरैशी ने लिखा है कि लोदी और सूर अफगानों के शासनकाल में हिन्दुओं को न मित्र समझा जाता था न ही शत्रु। उन्हें प्रमुख पदों पर नियुक्त किया गया।

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि दिल्ली के सुल्तानों को इस बात का आभास था कि हिन्दुओं के बिना उन्हें प्रशासन को चलाने में काफी कठिनाई का अनुभव करना पड़ेगा। इस कारण परिस्थितिवश मुस्लिम शासकों ने हिन्दुओं को निम्न श्रेणी के पदों पर बनाए रखा, जिससे प्रशासन का कार्य सुचारु रूप से चल सके और उसमें कोई व्यवधान न आए। अतः हिन्दुओं की प्रशासन में नियुक्ति उदारता या मानवतावादी दृष्टिकोण से नहीं बल्कि परिस्थितिवश थी।

'नागरी पत्रिका' वर्ष 42, अंक 3

ए-16, अरुणा आसफ अली मार्ग, नई दिल्ली-110 067 से साभार

पाठकों के पत्र

गौरव घोष के फरवरी 2010 के अंक में श्री पुष्कर भटनागर जी का आलेख है Dating the Era of Lord Ram. इसे आपने authentic scientific work माना है। यदि भगवान राम के काल को हम 7000 वर्ष ईसा पूर्व ही रखेंगे तो हमारी प्राचीन काल गणना का क्या होगा? सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर और कलियुग की एक मन्वन्तर में 71 चतुर्यगियों का क्या होगा। 5100 वर्ष तो कलियुग को ही हो गए। 14 मनवन्तरों का क्या होगा। अभी सातवां वैवस्वत मन्वन्तर ही चल रहा है। इस आलेख से हमारी प्राचीन काल गणना का सीधा तिरस्कार है। आप स्वयं विद्वान हें, विचार कीजिए।

यह वैज्ञानिक के बहाने भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्र-जीवन की आयु कम दिखाने का षड्यंत्र है।

अन्य सभी आलेख हमारी सांस्कृतिक पीड़ा के साथ वीरांगनाओं की संघर्ष गाथा को भी ओजस्विता के साथ संजोए हैं। एक अच्छे अंक के लिए बधाई।

डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'
पूर्व विधायक, पूर्व अध्यक्ष रा. साहि. अकादमी,कोटा

शोक-संदेश

अत्यंत दु:ख के साथ यह सूचित किया जाता है कि मई-जून माह में हमारे बीच से हमारे तीन आदरणीय कार्यकर्ता बन्धुओं का महाप्रयाण हो गया है।

सांस्कृतिक गौरव संस्थान की स्थापना से ही संस्थान के कार्यों से जुड़े रहे भोपाल के **श्री देवकीनंदन मिश्र जी** का स्वर्गवास हो गया है।

श्री मिश्र के निधन से हमने एक विलक्षण सामाजिक कार्यकर्ता खो दिया। वे मध्य प्रदेश पुलिस विभाग में उप पुलिस अधीक्षक के प्रतिष्ठित पद से सेवानिवृत्त हुए थे। उन्होंने लविंग जेहादियों द्वारा म.प्र. में भगाई गई और नरक में धकेल दी गईं अनेक हिन्दू कन्याओं को पुन: उनके परिवारों में आश्रय दिलवाया।

उन्होंने म.प्र. भोपाल में संस्थान के तत्वावधान में ***अग्निशिखा*** और ***अग्निमित्र*** दो विशेष परियोजनाएं क्रमश: युवतियों और युवाओं के लिए आरंभ कीं और ***हिन्दू संस्कार विधि*** नामक पुस्तक भी तैयार करवाई। उनके प्रयत्नों से अनेक बुद्धिजीवी संस्थान के सदस्य बने, फलस्वरूप म.प्र. की संस्थान की शाखा कार्य के विधिवत् प्रसार में लगी हुई है।

विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रीय मंत्री **श्री रामफल सिंह जी** एवं केन्द्रीय सह-मंत्री **श्री रामेश्वर दयाल शर्मा** जी पंचतत्त्व में विलीन हो गए। श्री रामफल सिंह जी सामाजिक समरसता के महान कार्य में लगे थे और इस विषय पर उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखीं।

श्री रामेश्वर दयाल जी तो सरकारी सेवानिवृत्ति के पश्चात् अहर्निश देश सेवा का कार्य करते रहे।

भगवान् से प्रार्थना है कि वे दिवंगत आत्माओं को शांति प्रदान करें।

प्रधानमंत्री के नाम खुला पत्र

आदरणीय प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी

जय श्रीराम / सत श्री अकाल

इस पत्र द्वारा मैं इस प्राचीन देश हिन्दुस्थान के प्रति आपकी सेवाओं को फिर से याद कर रहा हूँ। सन् **1947** में मज़हब (धर्म नहीं) के नाम पर देश के टुकड़े हो जाने के बाद अब आपने फिर से ऐसे ऐतिहासिक कदम उठाए हैं जिनसे देश में मज़हबी अलगाव उल्लेखनीय ऊँचाइयां प्राप्त कर रहा है। आपने मुसलमानों को **20** लाख छात्रवृत्तियां दिलवाईं। उनके लिए लोन देने के लिए अलग से वित्तीय संस्था बनवाई, मस्जिदों के मुफ्तियों और मुल्लाओं के लिए हज़ारों रुपये महीने का वेतन दिलवाया और अलग मंत्रालय बनवाकर अलगाव के अंकुरों के विकास के ऐसे साधन जुटा दिए हैं जिससे वे विष-वृक्ष बन जाएं। कृपया बधाई स्वीकारें।

अब आपके नेतृत्व में यह निर्णय लिया गया है कि हिन्दुओं, शायद सिक्खों की भी जनगणना **2011** के दौरान जातियां पूछी जाएंगी, जिससे हिन्दुओं में जो जातियां और उपजातियां हैं, उन सबका पूरा-पूरा विवरण जनगणना में सुलभ हो जाए। बुद्धिमान लोग यह कहते हैं कि ये जातियां और उपजातियां सैंकड़ों वर्षों के दौरान उनके आरंभिक पेशों के कारण बनी हैं फिर भी इनमें अलगाव के बीज तो हैं ही।

इस प्रसंग में हमारा यह सुझाव है कि जनगणना के दौरान मुसलमानों से भी उनकी जातियां पूछ ली जाएं। जानकारों के अनुसार वहाँ शिया, सुन्नी, बोहरे, अहमदिया, सैयद, कुरैश, कसाई, जुलाहे, पुम्बे, बढ़ई, लोहार, धोबी और अन्यान्य अनेक जातियां-उपजातियां हैं। यह अवसर है जब आप इन जातियों और उपजातियों के आधार पर उन्हें अनुसूचित जातियों में और पिछड़े वर्गों में शामिल करा सकेंगे, जिससे कांग्रेस के लिए मुसलमानों के वोट बैंक पक्का करने में आप सफल हो सकेंगे।

विश्वास है कि मेरा यह सुझाव आपको पसंद आएगा और आप इसे लागू करना चाहेंगे।

आदर सहित,

भवदीय

प्रेम सिंह 'शेर' बैकुण्ठ लाल शर्मा 'प्रेम'
पूर्व सांसद्

डॉ. मनमोहन सिंह जी
माननीय प्रधानमंत्री, भारत

*दिनांक **15** जून से **14** जुलाई **2010**, अभय भारत, अखण्ड हिन्दुस्थान भवन, एस-**562** स्कूल ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-**97** से साभार*

Bowled over by Jamaat

-Nadeem F. Paracha

Pakistani cricketers are more into preaching than playing

Much has been lamented about the Pakistan cricket team's pathetic surrender against Australia in the second Test at Sydney. Much more will be said about the lack of experience, talent and a prominent backbone in the Pakistan team. Very little however is being said about the psychology that triggers long periods of haplessness and sheer lethargy in a team culture such as Pakistan's. Gone are the days of flowing flamboyance the Pakistan cricket team became famous for, and the somewhat audacious displays of snatching victory from the figurative jaws of defeat cultivated by captains such as Mushtaq Muhammad, Javed Miandad, Wasim Akram and especially, Imran Khan.

So how did the unpredictability tag that the Pakistani cricket team holds mutate from being something exciting and gregarious into exhibitions of pitiable surrenders and sudden, disastrous falls into the pits of mediocrity? Teams under Imran, Miandad and Akram were eccentric and flamboyant; and the reason why these teams were different than what we've had in the last ten years or so was their (albeit erratic but electrifying) mindset.

At least one of the things that also helped these captains cultivate a more dynamic demeanour was a positive unfamiliarity with the concept of enforced religiosity, the sort that started to trickle into the psyche of the team at the start of the new millennium. The ethos and culture of the team that developed from this psyche has often been criticised by various ex-cricketers and team managements for neutralising the team's fighting instincts.

The fallout of this culminated in the team's disastrous show at the 2007 World Cup, when the team's media manager, PJ Mir, accused the team's captain Inzimamul Haq of being more interested in preaching than in playing cricket. So when did the Pakistan cricket team become a propaganda and preaching platform for the *Tableeghi Jamaat*? Writers like the late Khalid Hassan and Amir Mir point to the year 1999, when Wasim Akram quit as captain and was replaced by Waqar Yunus.

They lay the onus on Pakistan batsman Saeed Ahmed and stylish opener, Saeed Anwar, both of whom had become leading recruiters for the *Tableeghi Jamaat*. Ahmed had been, like most Pakistani cricketers, volatile and aggressive on the field and equally colourful off it. It won't be farfetched to suggest that captains like Imran, Mushtaq, Miandad and Akram wilfully kept the notions of morality and the social state of the team separated. They weren't bothered by who was drinking or who was frequenting nightclubs and bars, as long as the players were performing to their potential on the field.

However, according to a former Pakistani player, it was Saeed Anwar who convinced Waqar that the team would remain volatile unless team members became 'good Muslims' and 'started offering prayers.' Waqar saw this as an opportunity to rein in the notorious volatility of the team and both Saeed Ahmed and Anwar were allowed access to the dressing-room to preach the *Tableeghi Jamaat's* highly ritualistic and exhibitionistic strain of faith. Mushtaq Ahmed and Saqlain Mushtaq were two early recruits of the Jamaat, but ironically, both, along with Saeed Anwar himself, suddenly lost their form and exited from the team. However, even though the team's 2002 World Cup jamboree in South Africa was a disaster, Mushtaq and Anwar hung around as preachers and were successful in bagging flamboyant batsman, Inzimamul Haq.

It was Haq's instatement as the new captain in 2003 that opened the floodgates for the *Jamaat.* **One could now see the team being given regular lectures by leading *Jamaat* members, including Junaid Jamshed who is on record as claiming that he also wanted to convert the coach, the late Bob Woolmer. Players like Shoaib Akhtar accused Inzimamul Haq for siding with those players who sympathised with the *Jamaat* and took part in the collective religious rituals enforced by the captain.**

These players included Shoaib Malik, Salman Butt, Kamran Akmal, Yasser Hamid, Rana Naveedul Hassan (who at one point is said to have grown a beard to 'impress' Inzimam), and most of all, **Yousuf Yohanna, who converted to Islam and became Muhammad Yousuf. Today he is one of the leading members of the Jamaat and was recently reported to have even tried to convert New Zealand cricket captain Danial Vetori.** Though the bulk of the team joined the *Jamaat*, thus transforming the team culture from extrovert and flamboyant to fatalistic and (subsequently) somewhat uncompetitive, a divide soon **developed when a handful of players refused to follow Inzimam's Raiwind regime. These were Shoaib Akhtar, Muhammad Asif, Abdul Razzaq and Yunus Khan.**

Also included in this group was Shahid Afridi, but he too fell to the dictates of the Jamaat in 2005. Today, along with Yousuf, Afridi is now a leading *Jamaat* enthusiast. In a 2007 interview he proudly claimed that 'the Pakistan team has changed and no player (apart from a few), visits nightclubs and bars'. However, soon after the interview, Pakistan lost to a lowly Irish team at the 2007 World Cup!

Inzimam's exit and the delayed actions taken by the board to root out the Jamaat's weight from the team did clear the air a bit, but as is apparent, the culture of fatalistic unfolding in times of non-religious on-field pressures that the *Jamaat's* influence seems to have injected, remains.

Courtesy: The Pioneer, New Delhi

(The writer is one of the most popular Pakistani columnists. Courtesy: Dawn.)

Building Pakistan

- *Nadeem F. Paracha*

When will minorities feel at home in the country?

Some days ago, while waiting in my car for a traffic signal to turn green, a young kid nonchalantly stuck a flyer under one of the car's wipers. Usually I throw away such pieces of paper, but this time I decided to take a look at it. It was a flyer advertising a Montessori school called 'Model Islamic Montessori.'

Once home, I decided to call the school and asked to be connected to the principal.

"Hello, *Asalamwualaikum*," I said.

"*Walaikumasslam*," came the reply. It was a lady. "Is this the principal of Model Islamic Montessori?" I asked.

"Yes, how can I help you?"

"I have a three-year-old son whom I wanted admitted in your school," I said.

"Okay, he's most welcome," she replied. "But I have some questions," I said.

"Sure, you can ask us anything," she offered. "How is your school different from the non-Islamic Montessori schools?" I asked.

"What do you mean?" She responded.

"Yours is an Islamic Montessori, right?" I said. "Well, yes…" she hesitated a bit.

"So how is an Islamic Montessori different from a non-Islamic Montessori?" I asked again.

"Well… we teach children about their Islamic heritage and the basic principles of Islam, like *roza* (fasting), *salat* …"

"You mean *namaaz*?" I interrupted.

"Yes, *namaaz*, it's the same thing" she explained. "Fair enough," I said. "What else do you guys teach the children?" I asked.

"Well, we teach them good manners and…"

"Islamic manners?" I interrupted.

"Well… yes," she hesitated again.

"That's good," I said. "Islamic manners are so much better and civilised than non-Islamic manners."

"Err, sir… may I ask you a question?" She asked, politely. "Sure, madam."

"Why are you going on and on about Muslim and non-Muslim?" She protested.

"Well, I want my son to be in an Islamic school. And since yours says 'Model Islamic Montessori', I am just trying to make sure it is not like all these other non-Islamic Montessori schools out there."

"How old is your son?" She asked. "He's three."

"Why don't you come over and we'll take you around the school," she said.

"Do you teach them how to recite *naats*?" I asked.

"Yes, we do," she replied, proudly.

"And you don't teach them those stupid old English nursery rhymes that have sinister hidden Zionist messages in them, right?" I said.

She snickered: "Don't know about that, sir, but yes, we do discourage teachers from teaching children nursery rhymes."

"That's good to know," I said. "What about *qawalli*? Are the children taught any *qawalli*? I love *qawalli.*" I started to hum one, "*Bhar do jholi meri*…"

"Err… no, sir," she interrupted. "Just *naats* and basic *Islamiat*."

"But doesn't a kid usually study and learn all this in a non-Islamic school as well? How is your school Islamic?" I asked.

"Sir, why don't you come over and see for yourself," she insisted. "No other montessori has young girls in hijab and boys in traditional Islamic dress. Come and see for yourself. You'll be impressed," she explained.

"Young girls in *Hijab*!" I sounded delighted. "Wonderful. What about the young boys?"

"They are only allowed to wear *shalwar-kameez* and praying caps," she said.

"But *shalwar-kameez* is a national dress, not an Islamic dress," I said. "You should have the boys wear Arabic *choghas*! I will make sure my son wears one."

"What's his name?" She asked.

"Paul Neil Fernandes Jr.," I said. Silence.

"Hello? Madam Principal. You there?"

"Is this a joke?" She responded, somewhat sternly.

"No, madam. Not at all. I am very serious," I replied. "You are Christian. Why would you want your son in an Islamic school?" She asked.

"That's simple. Because I am Christian in an Islamic Republic. Do you know how it feels like being a religious minority in an Islamic Republic, madam?"

Silence.

"Well, I want my son to learn all the mannerisms of a good Muslim so he does not feel like a misfit!" I continued. "Why don't you convert then?" She replied, in a matter-of fact manner.

"Why should I?" I said.

"Because of the way you feel," she said.

"Why don't you change?" I replied.

"Change?" She asked.

"Yes, change the way we are sometimes treated here." I said.

"Sir, I don't want to get into all this," she announced. "And anyway, I don't think we can accommodate your child in our school."

"Just because he's Christian?" I asked.

"I'm afraid so," she said.

"But a lot of Pakistani Muslims are accommodated in Christian schools," I protested. "Why not treat my kid as a Pakistani and more so, a human being?"

"Sir, I am sorry, but we can't help you," she lamented. "What if I give you double the usual fee of your school?" I offered.

"Sir, that would be seen as a bribe," she said. "Not really," I replied. "Take it as jaziah!"

Courtesy: The Pioneer

(The writer is one of the most popular Pakistani columnists. Courtesy: Dawn.)

Hussain must not get away

-A Surya Prakash

Maqbool Fida Hussain has always been a hero for the pseudo-secular crowd in India. That is why sections of the English media are aghast at his decision to migrate to Qatar and have been blaming Hindus for "hounding him". Since some television anchors have been screaming their heads off over Hussain's decision to give up his Indian nationality but are unwilling to tell the people the truth about his artistic licence, the time has come to place some cold — or shall we call it 'hot' — facts on the table.

What has prompted Hussain to flee India? Mr Prafull Goradia and Mr KR Phanda, the authors of Anti-Hindus, published in 2003, provide us some valuable clues and answer this question substantially. This book not only reproduces a Press release issued by Mr DP Sinha of Sanskar Bharati but also photographs of some of the most repulsive paintings of Hussain. The Press release is indeed a comprehensive charge-sheet against the painter, because it provides a graphic description of eight of Hussain's paintings — each more vulgar and reprehensible than the other.

Here is the list of the eight objectionable paintings and the accusations made by the organisation. 'Durga', in which the goddess is shown in sexual union with a tiger. 'Rescuing Sita', in which the artist shows a naked Sita astride a naked Hanuman's tail — "Hanuman's tail as a phallic symbol crosses all limits of decency." Lord Vishnu is generally painted with four hands holding a shankh, a padma, a gada and a chakra, but the hands of Vishnu are shown as amputated and his legs have been cut off — a maimed, mutilated and exhausted Vishnu reclines on his spouse Lakshmi and his vahan Garuda. "Should the cutting of hands and legs of Vishnu be regarded as creative freedom or deliberate affront to Hindu sensibility?" Saraswati, whom Hindus regard as a goddess draped in a white and pure garment (ya shubhra vastravruta) is also shown naked. Goddess Lakshmi is shown naked and perched on the head of Ganesh, "a posture highlighting unmasked sexuality".

Hussain's 'Hanuman-V' shows a three-faced Hanuman and a nude couple — "The identity of the woman is not in doubt. The erect genital of Hanuman is bent in the direction of the female. The obscenity is too obvious." Another painting, 'Hanuman -13', shows a stark naked 'Sita' sitting on the thigh of an equally naked 'Ravan', while a naked Hanuman is shown attacking the latter. In 'George Washington and Arjun on the Chariot' Washington replaces Lord Krishna in the famous chariot scene from the Mahabharat! Hussain replaces Lord Krishna with Washington because "in his eyes Lord Krishna is no god and stands denigrated and reduced to the level of a mere human being — George Washington".

But, is Hussain's iconoclasm uniform? Far from it. Hussain is the very epitome of reverence when it comes to non-Hindu subjects. He paints Fatima, Prophet Mohammed's daughter, as "the embodiment of serenity and grace" and fully clothed. The artist takes no liberties here. He takes no liberties also while painting his daughter and mother. His painting of Mother Teresa is "an outstanding piece of art" which brings out the compassion of the Mother, says Mr Sinha. If this be so, why does he depict Hindu gods and goddesses in such a repulsive manner? The answer lies in yet another painting — a panel depicting Einstein, Gandhi, Mao Tse Tung and Hitler, in which only Hitler is naked. Can we then conclude that characters about whom Hussain feels repugnant are depicted in the nude by him?

While reproducing these obnoxious "works of art" and the detailed Press release by Sanskar Bharati, Mr Goradia and Mr Phanda describe Hussain as a "sexually perverse person". The photographs of these paintings originally appeared in a book that was designed by Hussain himself. The authors add three more to the eight accusations made by Mr Sinha. These relate to paintings which show a bull copulating with Parvati while Shankar looks on; a naked Hanuman with his genitals pointing towards a woman; and a naked Krishna with his feet and hands cut-off. The authors draw the distinction between nudity, pornography and perversity: "When pornography or perversity embroils deities, it is sacrilegious."

As Mr Goradia and Mr Phanda point out, it is simply not possible to give him the benefit of doubt. The panel portraying Einstein, Gandhi, Mao Tse Tung and Hitler is the clincher, they say. The first three have clothes on but Hitler is naked. "Does that mean that he painted in the nude all those he hated? ... Can any self-respecting Hindu forgive Maqbool Fida Hussain?" they ask.

The answer is obviously a big 'No'. So, what do Hindu citizens who feel offended by Hussain's art do? Barring a few vandals who took the law in their hands and disrupted a couple of the artist's exhibitions, the reaction of the large mass of Hindus was what it ought to be in a democracy. They moved courts and lodged criminal complaints against the artist. They drew on the Indian Penal Code that prohibits citizens from offending the religious sensibilities of other citizens.

There were no death threats or absurd pronouncements like the Muslim politician in Uttar Pradesh who, not very long ago, offered a prize of Rs 51 crore for the head of the Danish cartoonist accused of lampooning Prophet Mohammed. Yet, if you go by the shrill posturing of some television anchors, the Hindus deserve no marks for this lawful, democratic

response to the worst form of blasphemy. If this pseudo-secular fringe is to be believed, Hindus deserve to be condemned for "hounding" Hussain with court cases.

Whatever Hussain's friends and admirers may say, the truth is that after taking such obnoxious liberties with Hindu sentiments, he became a fugitive from the law. He has been on the run ever since the cases were filed. Many Hindus who are aware of Hussain's vile art rightly see him as a 'Qatarnak' painter. So, one supposes that Qatar was the logical destination for him!

But, if we value our secular traditions, we must not let him go. The long arm of the law must reach Qatar. We should seek his extradition and prosecute him for hurting the religious sentiments of 800 million citizens.

courtsy: The Pioneer, New Delhi, 23 March 2010

Indian calendar more accurate, say experts

-Rakesh Ranjan

Weather changes on Holi eve

As the festival of Holi is set to colour the people with joy and the bliss of nature, the festival has, as always, marked the end of the winter's chill. The festival is determined, according to the Hindu calendar, more accurately than the English calendar, wherein "the festivals and seasons are arbitrarily fixed". As the astrologers point out, the Hindu calendar or the Vikram Samvat are more accurate in determination of the Indian festivals, as it follows the annual weather cycle and the periodical movement of the Sun and Moon.

As experts say, the Indian calendar is ingeniously based on both the Sun and Moon and it uses a solar year but divides it into 12 lunar months. A lunar month has 29 days, 12 hours, 44 minutes and 3 seconds. Twelve such months constitute a lunar year of 354 days, 8 hours, 48 minutes and 36 seconds. On the other hand, the Western calendar is based on the Sun, in which a year is the time required for the Earth to complete one revolution around the Sun. This precisely measures 365 days, 5 hours, 48 minutes and 46 seconds. This, according to the Indian or the Hindu calendar, led to the occurrence of the Holi festival ten days in advance as compared to the previous year when Holi was celebrated on March 11. Notably the Holi will be celebrated on March 1 (Monday) this year.

Astrologer and spiritual counsellor Bharat Bhushan Padmadeo said that the Indian calendar has an appropriate rhyme with the nature. "The Indian calendar is based on the distance between the Sun and Moon and the periodical movement of the planets. It is also based on the annual weather cycle that matches with the festivals," Padmadeo said.

He, however, said that unlike the Indian calendar, the seasons and the festivals in the English calendar are arbitrarily fixed. The Hindu calendar on the other hand corresponds to the seasons. At the same time the seasonal influence lead to the determination of weather condition.

Padmadeo further informed that the zodiacs keep on shifting in the Indian calendar and hence occurrence of the seasons and the festivals depends on the position of the zodiacs. "Zodiac is the ring of constellations that lines the ecliptic, which is the apparent path of the Sun across the sky over the course of a year," he said and added that the Moon and the planets also lie within the ecliptic that determine the occurrence of months and seasons. In the Indian calendar, seasons follow the Sun, months follow Moon, and days, both the Sun and Moon, he added.

Another astrologer Vijay Pathak said that the Hindu calendar determines the seasons and festivals more accurately than the western calendar. Pathak said that since the Indian calendar follows the annual weather cycle, it has six seasons in the year, unlike the English calendar, which sees only three seasons. "There are six seasons in Indian calendar — Basant, Grishma, Varsha, Sharad, Hemant and Shishir," he said, adding that Basant season marks the beginning of the Hindu year. Pathak, however, said that the change in weather conditions during a given time in the year depends on the seasonal influence.

courtsy: The Pioneer, New Delhi, March 1, 2010

Delhi Metro: When the Delhi Metro will speed into Gurgaon, its first stop will be the Guru Dronacharya station

Legend has it that the Pandavas gifted the village here to their teacher Dronacharya as *gurudakshina*. It came to be called *gurugram*. Later, in its Prakrit avtar, it was rechristened Gugaon or Gurgaon.

Sweta Dutta, Indian Express

Holy Cow

With the Delhi Govt caught in a controversy regarding the serving of beef at the Commonwealth Games, The Indian Express takes a look at the position across various states with regard to cow slaughter

DELHI

The Delhi Agricultural Cattle Preservation Act was implemented in March 1994 and was framed to replace the Uttar Pradesh Prevention of Cow Slaughter Act, 1955, extended by the Centre to Delhi in 1966. The law imposes a 'total' prohibition on the slaughter of cows, calves, bulls and bullocks defined as 'agricultural cattle'. The law prohibits the transport or export, sale or purchase of agricultural cattle for slaughter. People who wish to export cattle for any other purpose to neighbouring states and Union Territories are required to take permission of the Veterinary Officer in charge, with details on purpose, age, sex and destination. The law prohibits the export of agricultural cattle to a state/ Union Territory where slaughter of agricultural cattle is not banned by law. The offences are cognisable and non-bailable. The punishment is imprisonment up to five years and a fine which may be extended to Rs 10,000.

UTTAR PRADESH

Cow slaughter has been banned in Uttar Pradesh since 1955. The law, UP Cow Slaughter (Prevention) Act, 1955, banning cow slaughter was enacted during the first Congress regime after Independence, led by the party's stalwart Pandit Govind Ballabh Pant in 1955. However, the law permitted slaughter of old and dry cows after prior permission from the Animal Husbandry Department. The BJP-led government, headed by Rajnath Singh, in 2002, introduced an amendment to the Act, imposing a blanket ban on the cow slaughter. The earlier BJP government in 1991-92, headed by Kalyan Singh, had attempted to introduce similar amendments for imposing a complete ban on cow slaughter.

RAJASTHAN

Slaughter of all bovines is prohibited in the state. Possession, sale, transport of beef and beef products is prohibited. Export of bovine animals for slaughter is prohibited. Custody of seized animals to be given to any recognised voluntary animal welfare agency, or to any goshala, gosadan. Violation of the above invites imprisonment of one to two years and a fine up to Rs 10,000.

JHARKHAND

There is no law related to beef consumption in the state, and cow slaughter is permitted.

TAMIL NADU

As per a 1976 government order, slaughter of cows and heifers is banned in all slaughter-houses in Tamil Nadu. Though this ban is not stringently implemented, there is a cultural stigma attached to consuming cow meat. Beef dishes are not available on the menu of any good restaurants.

ORISSA

Under the Orissa Prevention of Cow Slaughter Act, 1960, killing of cows is totally prohibited. It is a cognisable offence and carries penal provision of imprisonment up to maximum of two years or a fine up to Rs 1,000 or both. While the slaughter of a heifer or a calf is prohibited, that of a bull, bullock is allowed on the production of fit-for-slaughter certificate if the animal is over 14 years of age or has become permanently unfit for breeding.

MADHYA PRADESH

Madhya Pradesh, like Gujarat, has imposed a total ban on cow slaughter. The BJP government has sent the Centre a draft of the Madhya Pradesh Gauvansh Vadh Pratishedh (Sanshodhan) Vidheyak, 2007, which sought to amend an existing legislation by increasing the punishment for cow slaughter to 10 years. The Centre returned the draft asking the state to reduce the jail term saying it was too harsh.

KERALA

Beef is widely consumed in Kerala and is the cheapest meat available. As slaughter is banned in neighouring Karnataka and Tamil Nadu, a large number of cows and buffaloes are illegally smuggled into the state. According to the state economic review-2009, there is no authentic data on the cattle being slaughtered in Kerala. In a survey conducted in 2006, the government had identified 4,904 slaughter houses, of which only 30 per cent were authorised.

ASSAM

The Assam Cattle Preservation Act, 1951, (amended in 1963) prohibits slaughter of cattle.

PUNJAB

There is a complete ban on cow slaughter in Punjab. A proposal to set up a Cow Service Board is under the consideration of the state government. The Punjab Prohibition of Cow Slaughter Act, 1955, is aimed at checking cow slaughter. The police department has issued instructions to SSPs in all districts for strict implementation of the Act.

HIMACHAL PRADESH

The Himachal Pradesh (Prohibition) of Cow Slaughter Act, 1979, prescribes a punishment of up to five years' RI and a fine of Rs 5,000 or both on person involved in the crime or even abetting the slaughter of cow, bull, bullock, ox or calf. Even the person who suppresses information pertaining to such a crime is punishable with imprisonment of two years and a fine up to Rs 200 or both.

MAHARASHTRA

The Maharashtra government permits slaughtering and production of beef through authorised abbatoirs set up by local municipal corporations. Buffaloes and bullocks above the age of 12-13 years can be slaughtered. Officials say only animals which cannot reproduce or are of no use for agricultural purposes are allowed to be slaughtered.

Holy Cow ... (contd.)

JAMMU & KASHMIR

The law against cow slaughter was made way back in 1896 when the then Maharaja of Kashmir in an advertisement sanctioned by a state council resolution banned transport, slaughter and even selling of beef in the state. According to Advocate General Ishaq Qadiri, “In J-K you are not permitted to run a beef shop.”

WEST BENGAL

Under the West Bengal Animal Slaughter Act, 1950, one needs to produce a ‘fit-for-slaughter’ certificate. The animals included in the Act are bulls, bullocks, cows, calves and buffaloes of all types/ages. The certificate is given if animal is over 14 and/or unfit for work or breeding.

courtsy: The Indian Express

Beyond a two-notions theory

-Mubarak Ali

Pakistan should now re-evaluate Mohammad Ali Jinnah

When Jaswant Singh’s book Jinnah: India, Partition, Independence was published last year, among other things, it brought the question of Partition and the role of Mohammad Ali Jinnah into focus again. But the image of Jinnah is changing in India and in Pakistan for different reasons. Post-Partition, the history of the freedom movement in both countries was from the Congress or the Muslim League perspective. In India, the image of Jinnah was that of a communalist leader responsible for the vivisection of the subcontinent. He was accused of being a stubborn leader who refused to re-adjust his demands and insisted on the acceptance of his terms. On the contrary,

Mohandas Gandhi and Jawaharlal Nehru emerged as leaders who negotiated and made attempts to compromise with him.

This image of Jinnah persisted in traditional Indian historiography until the 1980s. However, some historians have raised their voices against it and presented Jinnah differently. One important study is that of Delhi University’s Ajeet Jawed, whose book Jinnah: Secular and Nationalist made an attempt to rehabilitate him as a staunch Indian nationalist. The Australian historian Jan Byrant Wells, in his Ambassador of Hindu Muslim Unity: Jinnah’s Early Politics, argues that throughout his political career, Jinnah remained a nationalist and anti-imperialist and there is no difference between his early or later periods of political life.

In Pakistan, too, the image of Jinnah is changing with political changes in the country. In the traditional portrayal, his secular and nationalist image isn’t highlighted. He has been reduced to being only a Muslim leader who struggled for the rights of Indian Muslims and created a new country for them to follow their religious teachings freely in. As the character of Pakistan became Islamic, it needed not a secular founding father but a staunchly religious man. So, stories of his religious devotion are fabricated and circulated. Stray references to religion are taken out from his speeches to prove that he wanted a welfare state based on Islamic principles. His official portrait shows him in a sherwani and cap, not in western attire, smoking a cigar.

This picture was challenged by some scholars and politicians who argued that he was against theocracy and in favour of a modern secular state. There are some circles that reject Jinnah as a competent leader and accuse him of committing political mistakes — such as his authoritarian role as governor general to dissolve the North West Frontier Provincial assembly, his act of presiding over the cabinet meetings and keeping aside the prime minister, and his dismissal of the chief minister of Sindh. As the political situation in Pakistan deteriorates, Jinnah’s image is also undergoing a distortion in which he’s blamed for leaving the country in the hands of incompetent leaders. The result is that in Pakistan, there are now two portraits of Jinnah: one, of the founder of the State based on the two-nation theory and an anti-India policy; two, of a secular Jinnah, not generally welcomed except in small circles of liberal Pakistanis.As for Partition, while a majority of scholars have no doubt written about its legitimacy, there are only a few voices determined to question it. Rubina Saigol in Knowledge and Identity challenges the concept of two nations, the very basis of the creation of Pakistan. Jaswant Singh’s book is important in this context. In India, with this change of image, Jinnah is no longer exclusively blamed for the Partition; Nehru and Patel share the responsibility. A secular Jinnah suits Pakistan, now under the grip of religious extremism, trying to get out of it through a new system based on pluralism.

Mubarak Ali is the author of Pakistan: In Search of Identity, and former Professor of History, Sindh University. The views expressed by the author are personal.

Courtsy :H.T., Delhi

Hindu and Greek civilisations -A comparative study

-M.S.N.Menon

The Hindu and Greek civilisations were the greatest among the civilisations of men.But today there is an attempt to give precedence to Greek civilisation. It is claimed that the Hindu civilisation has borrowed much from the Greek.

I admire both civilisations. But I am partial to truth. But what is the truth? The truth is:

Dharma (ethics) has been the guiding principle of Hindu life from times we know to this day. More so, when there was no code of law. But the, concept of Dharma was foreign to Greeks till Socrates (4th c BC) began to preaching had no impact on their tyrant rulers. Which explains why they condemned Socrates to death. Aristotle, the greatest philosophy of Europe, faced the same fate. He had to flee his country, although he was the teacher of Alexander, the Great. Hindus never produced tyrants. Why? Because violation of Dharma brought severe punishment on the violator.

A society without a sense of justice is barbarous. Greece was just that -a barbarous society, says Draper, author of the book *Intellectual Development of Europe Vol. II*. The idea of law was foreign to Homer (8th c BC) the epic writer. There was no morality. “The heroes of Homer are not more moral than the giants of the fairy tales,” he says. There was little respect for the gods, who were made in the image of the Greeks. Thus, Hermes was a thief, Aphrodite, voluptuous, Zeus incestuous, Aris reckless. “Homer and Hesiod” says Xenophanes, “attribute to the gods all the acts which among men are culpable and shameful.”

It is true the concept of democracy was given by the Greeks. But there was no democracy in Greece. In an Aristophanes comedy, the *Chrous* ridicules the rulers of Athens.

A new class of people arose at this time called the Sophists. They opposed the beliefs of the Greeks, said that as we cannot have a standard for truth, there can be no standard for good.” They proclaimed that might was right and that they had no faith in reasoning. They promoted rhetoric in order to win their arguments. India never produced such a class. Even the atheists of India were reasonable.

It was at this time that Greece produced its greatest moral philosopher - Socrates. He was the first Greek to bring ethics into Greece. Socrates raised the status of Knowledge among the Greeks. He said that virtue lay in knowledge. His teaching are to be found in the writings of Plato, his chief disciple, and Aristotle. Plato established an *Akademi* in Athens. His disciples founded a new philosophical system called Neo-Platonism, which was heavily influenced by Hindu philosophies, especially Vedanta.Greek was even influenced by the mystic tradition of the Hindus (Orphic movement).

The Greeks were indifferent to history. In this they were like the Hindus. But with this difference that the Greeks remembered their heroes, while the Hindus did not. They could not remember even Ashoka.

The Greeks were great lovers of drama, but of tragedy. They believed that tragedy purged the soul of its passions. The Hindus too were great lovers of drama, but they preferred comedy, because they believed that the purpose of drama was to leave the audience in a happy frame of mind.

The Greeks thought of time in cycles. In this the Hindus contribution is clear.

No study of Greek civilisation can be complete without studying the role of Asia Minor. It was the meeting point of Asia and Europe. It was under the Persian empire which extended from Punjab (India) to Asia Minor. Most of the Greek philosophers were born and brought up in Asia Minor. And one cannot forget that Alexander took with him a number of Hindu scholars on his return to his native land. Nor can we forget the influence of Indian story books like *Panchatantra* and *Dhammaapada*, which carried.

courtsy: Organiser

A Strand in Sino Indian Eco Balance Sheet

-Ashwani Mahajan

Today China is the world’s fastest growing country. Its share in global trade is a commanding six per cent. Products ranging from consumer goods to power plants, China today is producing all in mammoth quantities. India has a huge trade deficit with China and this has been growing for several years. In 2008-09, the total value of India’s imports from China touched $ 32.5 billion. Since the value of Indian exports to China was only $ 9.4 billion, the trade deficit was $ 23.1 billion in China’s favour.

But recently, the value of imports from China has started declining. In the first nine months of financial year 2009-10, it was worth only $ 21.4 billion while in the corresponding period of 2008-09 it was $ 24.9 billion. This is a climbdown of 21 per cent. Though India’s exports to China have also declined, its trade deficit with the latter is expected to be lower.

The reason is that the Chinese Government, under domestic economic pressure, has been compelled to reduce subsidies to industry and exports. As a result, imports coming from China have become expensive, reducing their demand. Also, the value of the Chinese yuan, which is artificially kept low by the Chinese Government, seems to be heading for a revaluation. For the past few months, US President Barack Obama has been constantly commenting that a revaluation of the yuan is required. European countries too have been putting pressure on China to adjust the value of the yuan.

All this pressure seems to be getting to the Chinese. Though Chinese President Hu Jintao has repeatedly said that China will not bow down to foreign pressure, the People’s Bank of China has indicated a possible appreciation of the yuan. The Chinese central bank has also hinted at a more flexible currency regime which means that we could see the value of the yuan being determined by market forces in the near future.

The US, India and many more countries have suffered heavy losses in trade with China. But with a proper revaluation of the Chinese currency, this could change. This proves that China can be flexible if it so chooses and is certainly not beyond reason and understanding.

courtsy: The Pioneer, Delhi

Diary of Events

April 2 The Centre has denied permission to Bihar Chief Minister Nitish Kumar to visit Nepal for attending the shradh ceremony former Nepalese Prime Minister Girija Prasad Koirala. Kumar was reported to have expressed his annoyance over the denial. *The Pioneer, New Delhi, p. 6.*

_________ Hindu pilgrims from Pakistan favour liberal visas to those traveling to India for a pilgrimage, said Govindram Makhija, head of a 243-member Hindhu group of pilgrims from Pakistan. *The Tribune, New Delhi, p. 5.*

April 3 The RSS has strongly come out in defence of Gujarat Chief Minister Narendra Modi, recently questioned by the SIT in the 2002 riot case, and accused a section of the media and 'Left-Islamist activists' of casting him as a villain for their 'vested interests'. *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

April 6 For the first time in the State's political history, the BJP has ended five decades of Congress dominance and captured the prestigious Bangalore Corporation and the Bruhat Bangalore Mahanagara Palika (BBMP). *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

April 7 Investigators have uncovered the extent of the spy ring, revealing that computers in the National Security Council Secretariat (NSCS) were infected, giving the hackers access to confidential documents on the security assessment of Northeastern state and Naxalite movement, besides information on missile defence systems and military equipment. *The Indian Express, New Delhi, p. 7.*

_________ Pakistan are signing up for an online campaign that is pleading Muslims to stick to "Khuda Hafiz" of Persian origin instead of the new Arabised version "Allah Hafiz" that became popular during the regime of former military ruler Zia-ul-Haq. *The Times of India, New Delhi, p. 23.*

_________ Chinese hackers have stolen classified documents from India's security, defence and diplomatic establishment, ranging from assessments of Maoist movements and the security situation in the North-East to New Delhi's ties with Russia and the Middle East, researchers in the US and Canada who tracked the cyber-espionage said. *The Times of India, New Delhi, p. 1.*

April 8 A US district court has summoned Union Minister Kamal Nath in a civil lawsuit filed against him by the New York-based "Sikhs for Justice" and two individuals over his alleged role in the 1984 anti-Sikh riots in Delhi. In a statement, the Sikh group alleged that Nath, as a member of Parliament at the time, was "witnessed leading an armed mob in which many of Sikh were burnt alive during an attack on a Sikh temple in New Delhi". *The Pioneer, New Delhi, p. 11.*

April 9 Investigating a tip-off, a Tribune team travelled across Punjab, Haryana and Chandigarh and found that theses submitted for PhD degrees in lesser-known universities in India were available for sale in "authorised" information centres of these universities. *The Tribune, New Delhi, p. 1.*

April 10 The Government of Madhya Pradesh has taken a significant step to provide good literature to educate the children with nationalist values. Leaders of RSS like Guru Golwalkar are primary to the nationalist thought. *The Indian Express, New Delhi, p. 2.*

April 12 Holding the UPA Government responsible for price rise, inflation and malnutrition. BJP president Nitin Gadkari told the media that the crisis was a result of "wrong economic policies". *The Pioneer, New Delhi, p. 6.*

April 13 An organisation of Kashmiri Pandits today demanded a law to protect their places of worship in the valley which are in a dilapidated state and prone to encroachment. *The Tribune, New Delhi.*

April 15 S Subramanian Swamy asked Prime Minister Manmohan Singh to immediately cancel the arbitrary allocation of 2G spectrum and conduct a transparent auction like the ongoing one in 3G allocation, to get maximum revenue for the public exchequer. In a letter to the Prime Minister, Swamy said the Prime Minister should act immediately as the findings of Central Vigilance Commission (CVC). *The Pioneer, New Delhi, p. 6.*

April 16 India's dream to break free from international reliance in the field of space technology suffered a major setback, as the indigenously manufactured cryogenic component of the GSLV-D3 failed to perform as expected, the launch vehicle tumbled into the deep waters of the Bay of Bengal minutes after take-off. *The Indian Express, New Delhi, p. 6.*

April 22 Juan Antonio Samaranch, a reserved but shrewd dealmaker whose 21-year term as president of the International Olympic Committee was marked by both the unprecedented growth of the games and its biggest ethics scandal, died at a hospital. He was 89. *The Indian Express, New Delhi, p. 20.*

April 24 A Pakistani parliamentary panel criticised the alleged illegal sale of agricultural land attached to two Sikh shrines in a village near Lahore to the Army-run Defence Housing Authority, saying it was not permitted under the rules. *The Pioneer, New Delhi, p. 12.*

_________ A Hindu girl from Punjab province was kidnapped and forced to convert to Islam and is currently being held in a madrassa, leading Pakistani rights activist Ansar Burney said. He said the 15-year-old Gajri, the daughter of Mengha Ram, was abducted by a Muslim neighbour from her home at Katchi Mandi, Liaquatpur, in Rahim Yar Khan district on December 21, 2009. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 17.*

Diary of Events (contd.)

April 25 Over six crore people from 140 countries converged on Haridwar. In 250 years, this was the first time that sadhus from the akharas as well as people form different religions took a holy dip peacefully. In fact, there can be no better example of peace and harmony than this -where people from different backgrounds, rich or poor, powerless and powerful bathed at the same place. A reputed management researcher from Chicago has proposed that the Kumbh should get the Nobel Prize for peace, and I endorse this. On a single day, at the last Shahi Snan on April 14, more than 1.6 crore people bathed in the Ganga at Haridwar, which is a world record. *The Times of India, New Delhi, p. 20.*

April 26 Tempers ran high and the police had to intervene when residents of Alaknanda neighbourhood in southeast Delhi voiced concern over the alleged illegal extension of a mosque in their apartment complex in violation of court orders. *The Tribune, New Delhi, p. 3.*

_________ More than 80 schoolgirls have fallen ill in three cases of mass sickness over the past week in northern Afghanistan, raising fears that militants who oppose education for girls are using poison to scare them away from school, authorities said. *The Indian Express, New Delhi, p. 2.*

April 27 The computer systems of scores of Indian embassies, military establishments and corporate bodies, as well as the email account of the Dalai Lama, have been hacked by a Chinese cyber spy ring. *H.T., New Delhi, p. 1.*

_________ Dr Babasaheb Ambedkar always worked for the unity of society and even when he converted, he converted to Buddism, and not to Christianity or Islam, said Narendra Modi. *The Pioneer, New Delhi, p. 4.*

April 28 Leader of the Opposition in Rajya Sabha Arun Jaitley saying there appeared to be “no doubt that the CBI has lost its investigative integrity and has become a political arm of the Government”. “for protection of the political interests of the party in power”. *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

_________ Melbourne: A former rightwing leader in Australia has ignited a controversy by openly declaring that she would not sell her property to Asians who lived overseas, and to Muslims who she believes are not “compatible with our culture”. *The Times of India, New Delhi, p. 17.*

_________ India and China have signed an agreement for sharing flood-related hydrological data for Brahmaputra during the monsoon season. The agreement follows the renewal of an MoU between the two countries during the visit of the then External Affairs Minister Pranab Mukherjee to Beijing in 2008. *The* Indian Express, New Delhi, p. 3.

April 30 Madhuri Gupta, the 53-year-old second secretary arrested on charges of spying for Pakistan, may have embraced Islam about six year ago, a media report has claimed. *The Pioneer, New Delhi, p. 11.*

_________ As Defence Minister AK Antony commissioned the first indigenous stealth frigate *INS Shivalik*, India entered into an elite club of seven nations which hold such a distinction. *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

May 2 RSS Sarsanghachalak Shri Mohan Bhagwat lashed out at the policy of appeasement being pursued by UPA government for vote bank politics. Addressing the Sangh Samagam organised at Morabadi Grounds in Ranchi on April 18, he said the Prime Minister Manmohan Singh’s utterance that Muslims had first right over the country’s resources was against the basic tenets of the Constitution and secular credentials of the country. *The Organiser, New Delhi.*

_________ The first European ban on wearing of the Islamic *burqa* in public is poised to come into force in Belgium. A parliamentary vote on a Bill has been passed unanimously. *The Pioneer, New Delhi, p. 7.*

May 5 Virtually supporting the ideology of notorious khap panchayat of Haryana seeking imposition of complete ban on same-*gotra* marriages and marriages within a village. Medical experts have also advised to avoid these marriages as these can become a major cause of genetic disorder in the coming generation. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

_________ Rome: Italian police fined a woman $650 for wearing a full Islamic veil - the first punishment of its kind in Italy but the latest in a wave of sanctions against the burqa in Europe. *The Times of India, New Delhi, p. 25.*

_________ Janata Party president Subramanian Swamy termed DMK chief M Karunanidhi’s attempt to play the Dalit card to defend Telecom Minister A Raja in the spectrum scam as “absurd and ridiculous”. “Being a Dalit has nothing to do with the issue. The PM’s silence has made the country a laughing stock in the comity of nations,” Swamy said, adding that Karunanidhi’s act was an attempt to hush up the involvement of his own family in the scandal. *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

_________Reports of a China-based cyber spy network targeting the Indian military and the consequent alert sounded by the Army may be only the tip of the iceberg - investigations have revealed a fully dedicated India specific espionage system aimed at business diplomatic, strategic and academic interests. *The Times of India, New Delhi, p. 1.*

May 6 Uttarakhand Chief Minister Ramesh Pokhriyal Nishank, is a happy man. The Mahakumbh 2010 has successfully concluded on April 28 setting many records. “The credit for this goes to my team and the people of Uttarakhand, especially those of Haridwar, who supported

the administration in every way," he said. *The Pioneer, New Delhi, p. 4.*

May 7 Pakistan is set to wage a proxy war of a different kind that has its roots in history. The neighbour, it is learnt, is training a group of 935 women to use them as bait to gather strategic information from Indian politicians and officials. *The Tribune, New Delhi, p. 1.*

_________ Shah Faisal, the 27-year-old put his medical career on hold to appear for the civil services examination. Today, as the results came in, his name was at the top - a giant leap for a boy from a government school in a remote village, whose father was killed by militants, and a big, big step for Kashmir. *The Indian Express, New Delhi, p. 1.*

_________ Street violence erupted in the Nepalese capital and outlying districts today as public anger grew over an indefinite strike by the Maoists that has shut down the country for the past five days, with residents clashing with the former rebels. *The Tribune, New Delhi, p. 13.*

May 9 The United States has warned Pakistan of "very severe consequences" if a successful terror attack in America was traced back to that country. The Obama administration has delivered new and stiff warnings to Pakistan after the failed Times Square terror plot that it must urgently move against the nexus of Islamic militancy. *The Indian Express, New Delhi, p. 1.*

May 10 The khap panchayats at a meeting (Mahapanchayat) held at Pai in Kaithal district on May 2 had put all elected representatives in the state on a one-month notice to support their demand for amending the Hindu marriage Act seeking a ban on same gotra marriages. *The Tribune, New Delhi, p. 18.*

May 11 After deposing before the SIT, based on a petition filed by Zakia Jafri before the Supreme Court, Togadia said he would take action against Zakia and social activist Teesta Setalvad for "dragging" him to the investigating agency. *The Indian Express, New Delhi, p. 3.*

_________ Kurukshetra Congress MP Naveen Jindal today assured Haryana khap representatives that he would raise their demand for a change in the Hindu marriage Act to disallow marriages within the same *gotra*. INLD chief Om Prakash Chautala backed Jindal and met Union Home Minister P Chidambaram to press for a change in law to ban marriages within the same *gotra*. *The Indian Express, New Delhi, p. 1.*

May 12 Allahabad: In a judgment with far-reaching implications, the Allahabad high court has ruled that a non-Muslim bride must convert to Islam to marry a Muslim. Failing that, the matrimony with a Muslim man would be void as it would contradict Islamic dicta and tenets of the Quran, the court said. *The Times of India, New Delhi, p. 17.*

_________ As a debate rages over a TOI report on the destruction of all records of the 1971 Bangladesh war at the Eastern Army Command headquarters in Kolkata, it transpires that naval authorities also destroyed records of the sinking of Ghazi in 1971. There are no records available with naval authorities on how the much-celebrated feat was pulled off. *The Times of India, New Delhi, p. 1.*

May 13 Union Minister for parliamentary Affairs and Water Resources Pawan Kumar Bansal held the DAV system of education in very high esteem and felt that DAV has contributed immensely for the cause of education. *The Pioneer, New Delhi, p. 2.*

May 14 Speaking at the discussion, Editor-in-Chief of *The Pioneer* Chandan Mitra said the report, was an attempt to divide the country on religious and caste lines. Terming it a 'political conspiracy' aimed at appeasing a particular vote bank, Mitra said the 15 per cent reservation recommended for Muslims and other minorities will be taken from the quota meant for Scheduled Castes, thus reducing their share of reservation in Government jobs and higher education. *The Pioneer, New Delhi, p. 2.*

_________ More than 40 years after it was mooted, the Union Cabinet today gave its approval to set up the nation's first defence university near Gurgaon. It would aim at imparting education on strategic challenges to armed forces officials, bureaucrats, academicians, parliamentarians and trainees at military academies. *The Tribune, New Delhi, p. 1.*

May 16 Nearly three months after the attack on Indians in Kabul, Afghan Security agencies have traced back recent anti-India operations in Afghanistan to an ISI outfit located inside a military cantonment in Kohat in the North West Frontier Province of Pakistan. *The Indian Express, New Delhi, p. 1.*

_________ Former Vice-President and senior BJP leader Bhairon Singh Shekhawat died after suffering cardiac arrest in a Jaipur hospital morning. He was 87. As news of the three-time Rajasthan Chief Minister's death spread, political leaders from all parties began arriving at Shekhawat's house in Civil Lines to pay their last respects, including state and national leaders. *The Indian Express, New Delhi, p. 6.*

May 17 Kashmiri terrorists and refugees from Jammu and Kashmir in Pakistan-occupied Kashmir have both received a pay hike. Pakistani authorities are now offering terrorists coming to fight in J&K a monthly salary in the range of Rs 8,000 to Rs 10,000. This is a huge jump from the average pay of Rs 5,000 they were getting earlier. *The Times of India, New Delhi, p. 1.*

_________ Vishwa Hindu Parishad general secretary Praveen Togadia said his organisation would launch another

Diary of Events (contd.)

round of Ayodhya agitation in August this year. He lambasted the Andhra Pradesh and West Bengal governments for recommending job reservation for religious minorities in government service. *The Indian Express, New Delhi, p. 5.*

May 18 Film star Sanjay Dutt met Gujarat chief Minister Narendra Modi and expressed his desire to set up a film city in the State. During the meeting, Dutt praised Chief Minister Narendra Modi for all-round development of Gujarat. *The Pioneer, New Delhi, p. 7.*

_________ Eminent scholars from different countries will participate in a three-day international conference on “History and Memory”, being organised by the Indian Institute of Advanced Study (IIAS). The main topics to be discussed during the conference include “Memorialisation and the Museum”, “Dreams, Memory and Remembrance”, “The Aesthetics of Memory”, Memory and Politics”, “Spectres of Memory”, “Memory and Cultural Pasts”, “Landscapes of Memory”, “Suppressed Histories”, “Archaeology of Memories”, and “Revisiting the Partition”, Prof. Margaret Levi from University of Washington will deliver the valedictory address on “The Past as a Source of Political Power in the Present”. *The Tribune, New Delhi, p. 10.*

May 20 A candlelight gathering condoning the deaths of innocent people in Dantewada was held at Jawaharlal Nehru University (JNU) last night. ABVP students condemned the Maoist violence around the country and said they would support the home minister in his steps against Naxalites. *The Tribune, New Delhi, p. 3.*

_________ Chhattisgarh Chief Minister Raman Singh described Naxals as the ‘biggest threat” and alleged they had links with the Pakistan based terror group Lashkar-e-Tayyebba (LeT). *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

May 21 North Korea has threatened to wage “all-out war” if it is punished for the sinking of a South Korean warship. *The Mail Today, New Delhi, p. 28.*

May 22 Stone inscriptions dating back to 10th and 11th century AD found recently in a nearby village have thrown light on the way records of properties were maintained during the Chola times. The stones came to light last week when an earthen mound was dug at the Sirukarumbur hamlet, fucked away from the main road 25 km from Kancheepuram. *The Pioneer, New Delhi, p. 4.*

May 23 VHP president Shri Ashok Singhal warned Union Home Minister P Chidambaram to refrain from branding the Hindu saints as ‘terrorists’ and taking action against them. “Shri Chidambaram should keep in mind that an invisible cosmological force stood behind the Ram Setu and the Jammu Kashmir Shrine Board movements that had the government on its knees. Good counsel should prevail on Shri Chidambaram to understand and appreciate this great power that stands to save the Hindu society, and it would be better on his part to withdraw his ‘Hindu terrorism’ statement that is an utter contradiction in terms.” *The Organiser, Delhi, p. 3.*

May 24 The RSS has said that caste-based census is against the idea of a casteless society envisaged by leaders like Babasaheb Ambedkar in the Constitution and will weaken the ongoing efforts to create social harmony. *The Indian Express, New Delhi, p. 1.*

May 25 After Indian National Lok Dal (INLD) and Congress leaders, BJP national secretary Capt Abhimanyu on Monday supported the demand of *khap* panchayats for a ban on same-*gotra* marriages. The Haryana BJP leader said that the *khap* panchayats drew their power from acceptance among the people and had been playing an important role in maintaining public order. The media, however, appeared to be in a great hurry to project them in a bad light, he said. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 14.*

May 26 A 58-year-old woman of Indian origin, Kamla Persad-Bissessar, was elected the first woman prime minister of Trinidad and Tobago. Persad-Bissessar’s people’s Partnership won 29 of the 41 parliamentary seats in Monday’s elections, ending the ruling party’s 43-year rule. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 1.*

_________ “If or when the Motuo project is built, China will gain significant capacity to control the Brahmaputra’s flow,” Tsering told the *Hindustan Times*. “China is likely to hold back water when it’s most needed in India during spring and release more water during the monsoon when there is excess.” *The Hindustan Times, New Delhi, p. 17.*

May 27 Millions of Pakistanis suffered abuses as a result of a sharp escalation in conflict between the Government and the armed forces, Amnesty International has said in its latest report, which also alleged that the forces were carrying out “suspected extra-judicial executions’. *The Pioneer, New Delhi, p. 11.*

May 28 More than half the of the total population is not in favour of independence. Instead 58 per cent of the Kashmiris are prepared to accept the LoC as a permanent border if it is liberalised for people’s movement and trade. While 27 per cent are in favour of it in its current form. *The Pioneer, New Delhi, p. 11.*

_________ The Armed Forces Tribunal has ruled that a former Army Commander was biased against a Brigadier under his command during the Kargil war and fudged records that now form part of the official history of the 1999 conflict. The tribunal has asked the Army to modify the official history of the war and set the record straight by giving due credit to Brigadier Devinder Singh who commanded the 70 Infantry Division which was in charge of the Batalik sector during the

war. *The Indian Express, New Delhi, p. 1.*

May 29 Terror struck Pakistan's heartland of Punjab as heavily-armed Taliban gunmen wearing suicide vests stormed two mosques packed with Friday worshippers from minority Ahmadi sect here, killing over 80 persons and injuring scores in the first major attack in Lahore since March. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

May 30 The apex court's comment, as approving and substantiating live-in-relationship by making reference to Radha and Krishna, is shocking. The Puranas never supported this sort of relationship. The earliest reference to Radha in a single stanza finds mention in the Vayu Purana. Other Puranas be a part of the Mahabharata, which never support the above age and so live-in-relationship is beyond imagination. *The Organizer, New Delhi, p. 14.*

May 31 The "dry exercises" projected computer simulations of such an attack with an assessment of a possible counterattack and the potential resistance the US troops might face if they entered the Pakistani soil. *The Tribune, New Delhi, p. 1. & 11.*

June 5 It has been said that 55,000 thoughts pass through a person's mind on an average per day. Most of them are repeats from previous days. New thoughts are born out of changing circumstances. This brings up an important question. Do we have the freedom to choose what we think? *The Pioneer, New Delhi, p. 8.*

June 6 Bharatiya Janata Party's national general secretary Varun Gandhi addressed thousands of people of Hathras via telephone after the district administration denied permission to his helicopter to land there. *The Pioneer, New Delhi, p. 6.*

June 7 The Council for Scientific and Industrial Research (CSIR) has prepared patent formats of nearly 900 yoga *asanas* (postures), to prevent European and American companies involved in fitness-related activities from claiming them as their own. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 1.*

June 8 Former Pakistan Prime Minister and PML-N chief Nawaz Sharif has created ripples in Pakistan's political and religious circles by saying that the members of the minority Ahmedi sect are his brothers and sisters and that militants should be flushed out wherever they are active. *The Indian Express, New Delhi, p. 10.*

June 9 The government is considering introducing a system of "plea bargain" for bureaucrats against whom disciplinary or vigilance proceedings are initiated. If an officer pleads guilty, he can be punished straightaway without entering into lengthy proceedings' at the cost of the public exchequer. In return, the government would consider awarding such persons lesser punishment than otherwise warranted. *The Indian Express, New Delhi, p. 7.*

_________ In the editorial in its mouthpiece *Saamna* said "The Congress has cornered him Pawar from all the sides and the person behind this is Sonia Gandhi. She has the reigns of power and she is using it politically to weaken Pawar". *The Indian Express, New Delhi, p. 4.*

June 10 A Hindu businessman was shot dead and his son kidnapped by unidentified men disguised as paramilitary personnel in the southwestern Pakistani city of Quetta, media reports said. *The Pioneer, New Delhi, p. 12.*

June 11 The Pakistan Hindu Council called on the Government of Sindh and Balochistan provinces to protect Hindus in the wake of protests in Mithi town in *Sindh* against the desecration of an *ashram* and the killing of a Hindu trader. *The Pioneer, New Delhi, p. 11.*

_________ What led to the released of Anderson. US the only surviving secretary-level officer from those present at the Madhya Pradesh Chief Secretary's all-critical meeting on December 7, 1984 confirmed that the orders did come from then Chief Minister Arjun Singh, but added that he was acting at the behest of then Prime Minister Rajiv Gandhi. *The Indian Express, New Delhi, p. 1.*

_________ Getting divorce will become a little easier under a move to include "irretrievable breakdown of marriage" as an additional ground by amending the Hindu marriage Act, 1955. Among the existing grounds for divorce are adultery, religious conversion, unsound mind, incurable form of leprosy, communicable venereal disease, renunciation by entering some religious order and whereabouts not known for seven years. *The Tribune, New Delhi, p. 13.*

June 12 The Minority Affairs Ministry will launch four new schemes this fiscal for the welfare of minorities, including a scheme for strengthening Waqf boards, including a programme to provide interest subsidy on educational loans for overseas studies. *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

June 14 Shouting slogans of "*Jat tu halla bol...*", protesters marched to the Ganga canal bank and lowered the sluice gates of Bhagirathi and Sonia Vihar regulatories to snap raw water supply. Calling it a trailer, the 10,000-strong mob threatened to disrupt the Common-wealth Games if their demand was not met. *The Times of India, New Delhi, p. 7.*

_________ 'Cong choking pluralist democracy', Drunk with power, the UPA Government has launched an all-our financial and legal war against BJP regimes. Institutions like the CBI and Planning Commission have been reduced to extension counters of the PMO and 10 Janpath. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

June 15 India stands to gain hugely in Afghanistan if its apparently huge mineral deposits are ready to be tapped. Five

Diary of Events (contd.)

Indian companies are among seven that have been shortlisted by Kabul to bid for huge Iron ore mines there. *The Times of India, New Delhi, p. 8.*

_________ The United States has discovered nearly $1 trillion in untapped mineral deposit in Afghanistan, far beyond any previously known reserves and enough to fundamentally alter the Afghan economy and perhaps the Afghan war itself, according to senior American government officials. *The Times of India, New Delhi, p. 16.*

June 16 Popular small screen artist Smriti Irani was appointed president of the BJP's Mahila Morcha (women cell). "The party has also decided to appoint Anurag Thakur, a Lok Sabha MP from Hamirpur in Himachal Pradesh, as president of the Bharatiya Janata Yuva Morcha (party's youth wing)". *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

_________ With Hindi news channels ruling the air waves, Hindi journalism has also got a boost at the college level. More than 500 aspirants have applied for the BA (Honours) Hindi Journalism programme offered by Delhi University (DU) till the last date of application. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 4.*

June 17 Pakistan's religious parties have responded with one voice to a statement of PML-N chief Nawaz Sharif that he stood by the Ahmadi community "who are like our brothers." They have condemned Sharif and questioned whether he "still is a Muslim." *The Hindustan Times, New Delhi, p. 15.*

June 18 UPA government has cautioned Beijing about the negative fall-out of nuclear deal with Pakistan on Sino-Indian relations. *The Indian Express, New Delhi, p. 1.*

June 19 Kyrgyzstan's interim president said the death toll from the ethnic clashes that have rocked the country's south could be near 2,000 Kyrgyz officials figures had put the number of killed in rampages at 191. *T.O.I., New Delhi, p. 1.*

_________ An Indian Muslim preacher Zakir Naik has been banned from entering the UK for his 'unacceptable behaviour'. Home office sources told *The Daily Telegraph* that website footage had shown the Indian preacher making the claim that every Muslim should embrace terrorism. *The Pioneer, New Delhi, p. 11.*

_________ Chief of the hardline faction of Hurriyat Conference Syed Ali Geelani has demanded that the annual Amarnath pilgrimage, the *yatra* be limited to 15 days. *The Pioneer, New Delhi, p. 7.*

June 20 Kashmiri separatist leader Syed Ali Shah Geelani's demand that the annual Amarnath pilgrimage be restricted to 15 days has outraged Hindu organisations, which asked him to "keep his mouth shut". Hindu organsiations say Geelani tries to inflame communal tensions every year by interfering in their religious affairs at the time of the pilgrimage. *The Mail Today, New Delhi, p. 4.*

June 21 The Government should shun the "policy of appeasement" in Kashmir and at all cost prevent boundaries from being redrawn, said former Jammu and Kashmir Governor SK Sinha. He insisted that the "solution" to Kashmir problem lies in South Asian Economic Union on the lines of the European Union. *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

June 22 Just three places below Afghanistan, Pakistan has been ranked the 10th most failed state in the 2010 Failed State Index released by the prestigious Foreign Policy magazine. The list is topped by Somalia, followed by Zimbabwe, Sudan, and Chad. *The Times of India, New Delhi, p. 17.*

June 24 India has won a major battle to preserve its traditional knowledge systems, thwarting a Chinese pharma company Livzon's bid to patent the medicinal properties of pudina and kalamegha for treating bird flu. *T.O.I., New Delhi, p. 16.*

_________ Finding the Higgs boson - also known as the God particle - is the primary aim of the LHC experiment because it will provide an insight into the nature of all matter. *The Pioneer, New Delhi, p. 12.*

June 27 Madhya Pradesh Chief Minister Shivraj Singh Chouhan performed *bhoomipujan* of a new Sita Mata Mandir at Capitola near Sri Lankan capital Colombo. The function, in which Chouhan was the chief guest, was presided over by Uva province Chief Minster Shasheendra Rajpakse. *The Pioneer, New Delhi, p. 6.*

June 28 Kashinath Tiwar, the 45-year-old chief of Hindu Yuva Sangh, a militant group seeking the restoration of a Hindu kingdom in Nepal, was shot dead while he was visiting a Hindu monastery to inspect the construction of a *dharamshala. The Pioneer, New Delhi, p. 11.*

_________ Pakistan's interior minister Rehman Malik has said that had the Taliban militants overrun his country, their next targets would have been India and Bangladesh. *The Times of India, New Delhi, p. 10.*

June 29 In an unprecedented move that has confirmed India's concerns about China's growing military might, the Government has for the first time given a directive in writing to the armed forces to enhance their military capabilities vis-a-vis the neighbouring country and prepare for a two-front war scenario with China and Pakistan. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

June 30 The BJP has captured power in the *zila parishads* of Gondia and Bhandara in eastern Maharashtra. Both local bodies fall in Praful Patel's constituency. *The Pioneer, New Delhi, p. 7.*

Select Articles

An era ends in diplomatic history : Reginald Dale, The Pioneer, New Delhi, April 3, 2010, p. 9.

As more and more non-Caucasians (a category to which Barack Obama belongs) grab the centre-stage of American politics, Britain matters less and less. Nothing explains the end of the London-Washington 'special relationship' better.

Devaluation, China going Soviet way : Dina Nath Mishra, The Pioneer, Foray, New Delhi, April 5, 2010, p. 5.

The Cold War seems to be returning. But this time the partners are different. The war is between the US and China. While the latter is claiming to be a superpower, the actual truth is being hidden by the ban imposed on the Press by the Communist regime.

Change system to fight terror : Joginder Singh, The Pioneer, New Delhi, April 5, 2010, p. 8.

D. Headley, The LeT agent has pleaded guilty to the following in order to secure a lighter sentence: Conspiracy to bomb public places in India. Conspiracy to murder and maim persons in India. Six counts of aiding and abetting the murder of US citizens in India. Conspiracy to provide material support to terrorism in India. Conspiracy to murder and maim persons in Denmark. Conspiracy to provide material support to terrorism in Denmark. And conspiracy to provide material support to terrorist Lashkar.

Understanding Mayawati's symbols : Santosh Desai, The Times of India, New Delhi, April 5, 2010, p. 5.

Why does Mayawati do what she does? Why does she build these enormous statues with giant elephants at a huge cost to the exchequer? Why does she have herself garlanded with obscene sums of money while claiming to represent the poorest among the poor? Why does she flaunt her power (and her handbag) in such a transparently magnifed way? The answers to these seem to clear enough. Power has gone to her head and converted her into a raving megalmaniac and has robbed her of a sense of reality.

Soft Power, Hard Battles : Ashok Malik, The Times of India, New Delhi, April 5, 2010, p. 14.

India has big power aspirations, at least regional power aspirations. Yet, it runs an astonishingly risk-averse foreign policy completely incommensurate with its ambitions. India's goodwill-hunt in Afghanistan needs a degree of hard power to complement it.

Islamism rules in Turkey : Barry Rubin, The Pioneer, New Delhi, April 6, 2010, p. 9.

Proposed changes to the Constitution militate against secularism. They are designed to strengthen Islamists. By taming the Army, subordinating the courts, taking over or intimidating the media, packing the bureaucracy with its own supporters, and using leverage over the universities, the regime intends to stay in power forever.

Obama's message from Kabul, US can't afford to lose war in Af-Pak area : K. Subrahmanyam, The Tribune, New Delhi, April 6, 2010, p. 8.

India should not fall into the trap of assuming that the US will withdraw from Afghanistan in 2011 leaving the fields open to the Pakistanis.

Let Congress explain 1984 : A Surya Prakash, The Pioneer, New Delhi, April 6, 2010, p. 8.

Congress makes selective application of constitutional principles. The Congress's shameful role in the pogrom against the Sikhs in 1984 is still fresh in our memory. The Ranganath Mishra Commission said that 3,874 people were killed in the violence, of which 2,307 were from Delhi Plus, 131 gurdwaras were destroyed or damaged in Delhi alone. It further stressed, "In these mobs were people with sympathy for the Congress (I) and associated with the party's activities."

'Foreign-origin person can't represent India' : PNS, The Pioneer, New Delhi, April 9, 2010, p. 5.

The issue of foreign-origin may not come in way of a person wanting to be India's Prime Minister, but could foil his chances of representing India in international sporting events.

China scares, India inspires : Shombit Sengupta, The Indian Express, New Delhi, April 11, 2010, p. 9.

The Western mind feels totally threatened by China. They think of China as a terror that will eat them up. The way they see it, the 51-starred flag may not rule the world anymore and the future drivers of the planet are likely to be the billion-peopled countries of China and India.

Lord Macaulay, came to India in 1834 and found that it would be difficult for the British to gain control over this highly civilised independent country unless they demoralised the masses. In his 'Minute on Indian Education' (1835) he said, "We must at present do our best to form a class who may be interpreters between us and the millions whom we govern; a class of persons, Indian in blood and colour, but English in taste, in opinions, in morals, and in intellect...".

Marketing of sports, Kabaddi catches the attention of TV channels : Prabhjot Singh, The Tribune, New Delhi, April 11, 2010, p. 13.

Depending upon the viewership figures of the inaugural World Cup in Kabaddi being organised by the Punjab government, it can usher in an era of traditional and martial sport as mainstream entertainer. It could possibly provide an alternative to the western model of WWF or its variants of show wrestling.

Select Articles (contd.)

Theatre of the absurd : Balbir K Punj, The Pioneer, New Delhi, April 12, 2010, p. 8.

The entire State Government is so infested with Marxist politics that several senior IAS and IPS officials have sought assignments at the Centre to escape the embarrassment they face in implementing the LDF Government's policies.

Love, intrigue, scandal : Moutussi Acharyya, The Pioneer, New Delhi, April 12, 2010, p. 9.

The Sania-Shoaib-Ayesha story came to an abrupt end with the Pakistani cricketer suddenly changing his tune, 'admitting' that he had married Ayesha by divorcing her under Islamic personal law. So what forced him to climb down from his high horse? There's more to the intriguing tale than meets the eye!

The myth of Mao : K. Subrahmanyam, The Indian Express, New Delhi, April 12, 2010, p. 11.

As far as possible a force to tackle Naxalites should be raised from the areas themselves. So should the security forces to guard the industrial installations and infrastructural assets. The raising of such a force and the development programmes with consequent poverty alleviation should form the grand strategy for this protracted war against the Maoists. This is the appropriate task of the National Security Council. Will it rise to the challenge?

Vatican does not deserve UN status : Sandhya Jain, The Pioneer, New Delhi, April 13, 2010, p. 8.

Now that the scandal of the sex abuse of minor boys and girls and adult men and women in virtually every country with a church presence has touched the heart of the Vatican, singeing the present Pope himself for his alleged role in the protection of guilty priests, it may be appropriate to seek a review of the unique status the Roman Catholic Church enjoys at the United Nations.

Maligning Modi : Sandeep B, The Pioneer, New Delhi, April 14, 2010, p. 9.

Bogus secularists in media derive perverse pleasure. Should Mr Modi keep indulging every whim of media kangaroo courts or govern the State? Is media's hatred of Mr Modi makes it so so blind that it thinks it's okay to resort to any vile trick to revile him time and again? Does the media even admit to the existence of judicial processes of investigation, trial, and judgement? Most importantly, does the media recognise that a Chief Minister is a constitutionally-appointed head of a State? But given its record, it's obvious that such questions pose no discomfort to the secular media, which believes that no device, no knavery is too low to bait Mr Modi.

Uncertainty over Obama policies, Dark shadow on India-US relations : G Parthasarathy, The Tribune, New Delhi, April 15, 2010, p. 10.

New Delhi should realise that in its dealings with China and while handling the situation in the AfPak region, the Obama Administration appears quite prepared to disregard Indian sensitivities and interest either when it finds China useful on issues like Iran's nuclear programme of Pakistan claims that it will facilitate the American exit strategy.

Red terrorism, war is yet to begin : Dina Nath Mishra, The Pioneer, Foray, New Delhi, April 18, 2010, p. 5.

Maoists and Naxalites have brought the ire of the nation on themselves. There can be no greater anti-national activity than what they have been doing for so long, so much so that even the PM has called it the biggest challenge to the country.

Time-The Hindus were right : MSN Menon, The Organiser, New Delhi, April 18, 2010, p. 5.

Today the world recognises the great contribution made by the Hindus to mathematics and astrology. Hindu time scale is unimaginable. The life of the universe is reckoned 4.32 billion years. It is made up of *yugas*, which move in cycles.

Here, a happy-price menu, always : Tribune News Service, The Tribune, New Delhi, April 19, 2010, p. 1.

In times of inflation, when the aam aadmi is reeling under the steep hike in prices of food items, the good-old canteens (six in number) of parliament House are dishing out delectable goodies at dirt-cheap rates.

Terror's own country : VR Jayaraj, The Pioneer, New Delhi, April 19, 2010, p. 9.

Islamist terror in Kerala has connections with several former Naxalites who are now in the business of rights protection and promotion. Moreover, the fact that more than 75 per cent of all the terror accused and suspects in the country are from the State is enough to earn Kerala the terror hub tag. That much for the myth of God's Own Country's enduring religious harmony and sociology of peace.

The crisis of western civilisation : MSN Menon, The Organiser, New Delhi, April 25, 2010, p. 6.

There was a time when the West used to boast that it has answers to all questions. But the answers have turned out to be false. The recent developments have brought to light the insufficiency of western thought. It has shaken the foundations on which the customary interpretations were based. The West has made far too many mistakes in history. It has not been able to create a better world. We can no more put our trust on the West. But do we want to put our trust on the Chinese or the Japanese? No. The Chinese are a race which has cared for itself throughout their long history. And

Select Articles (contd.)

I am afraid the Japanese are not out of their military psychosis.

Do we need foreign universities? : M V Kamath, The Organiser, New Delhi, April 25, 2010, p. 6.

Oxford can be oxford only in Oxford, and not in Noida. Tip to Kapil Sibal: help our universities and colleges to upgrade themselves on a regular basis and await results. Think it over, Mr Minister. This is a nation that once produced Nalanda.

The threat is not to Israel alone! : Barry Rubin, The Pioneer, New Delhi, April 26, 2010, p. 9.

Iran may be able to build a missile capable of striking the United States by 2015 and this is not good news for either America or West Asia.

US arms for Pakistan, India must ensure conventional superiority : Gurmeet Kanwal, The Tribune, New Delhi, May 1, 2010, p. 12.

The Indo-US strategic partnership is now on a firm footing, but developments such as the sale of major conventional arms to Pakistan run the risk of damaging the growing relationship.

New triangle of power : Minhaz Merchant, The Times of India, New Delhi, May 1, 2010, p. 18.

If it leverages its economic and demographic strengths with Chanakya's finesse, India can rapidly emerge as America's most important globle partner instead of a perennially anxious supplicant.

Why Indians are ill-treated abroad? : Dr Jay Dubashi, The Organiser, New Delhi, May 2, 2010, p. 4.

Look at the way China is behaving with the West. It is going about as if it owned the world, and one day it may. The Chinese hate Westerners and are so proud of their history and culture that they take umbrage at the slightest offensive remark from the Americans. Recently, they forces Google, the giant network company, to leave China, lock, stock and barrel and took a number of Americans to court for taking bribes from Chinese businessmen.

Revolution - An outdated concept : M V Kamath, The Organiser, New Delhi, May 2, 2010, p. 6.

How long do we have to wait for the traitorous Naxalite rebellion to be quelled? The UPA government is looking like a standing joke. The blame lies entirely on the UPA government for its soft-kneed approach towards every issue hurting the motherland.

All lines on this route are blocked : Chandan Mitra, The Pioneer, Agenda, New Delhi, May 2, 2010, p. 4.

Despite an open-and-shut case of massive corruption against him, Telecom Minister A Raja survives thanks to coalition 'compulsions'.

If the apex court lives up to its reputation, the tainted Minister's days in the Cabinet may be numbered.

Why Kasab matters : K. Subrahmanyam, The Indian Express, New Delhi, May 4, 2010, p. 10.

Kasab's capture and confession established that the facade of a civilian government in Pakistan did not in any way affect the autonomy of the army and the Inter Services Intelligence to function as sponsors of terrorism.

Quotas are legitimising casteism : CP Bhambhri, The Pioneer, New Delhi, May 5, 2010, p. 9.

Caste-based reservation policies are making ours a casteist society. It's time to break free of caste divisions and save the nation, writes CP Bhambhri.

Our Pak policy has failed : Tavleen Singh, The Indian Express, New Delhi, May 9, 2010, p. 11.

The sad truth about our attempts to deal with Pakistan since the attack on Mumbai is that we have failed on every front. We have failed to convince the United States that Pakistan is not an ally in the war against Islamist terrorism but its epicentre, and we have failed to convince the Pakistani government that we are not stupid. That whether the American president can or not we see through their web of deception and lies and that until this duplicity stops there can be no peace dialogue, no 'engagement'.

Indus like inscription on south Indian pottery from Thailand : Iravatham Mahadevan, The Organiser, New Delhi, May 9, 2010, p. 7.

A fragmentary pottery inscription indus like was found during excavations conducted by the Thai Fine Arts at Phu Khao Thong in Thailand about three years ago. (Dr. Berenice Bellina of the Centre National de la Recherche Scientifique, France, sent Iravatham Mahadevan a photograph of the object.

Faces of Fascism, 1984 Riots and Emergency : Dina Nath Mishra, The Pioneer, Foray, New Delhi, May 9, 2010, p. 5.

The Congress party has always behaved in a fascist way, be it the time of Emergency or the anti-Sikh riots. However, the party's leaders somehow still have the strength to call others fascists even after being well-read and aware of the truth.

Church Gate : S Rajagopalan & Nandini Jawli, The Pioneer, Foray, New Delhi, May 9, 2010, p. 1.

They're supposed to be sworn to celibacy and treat all as their 'children', but the clergy has put to question the very basis behind the trust in the Church. The Pope today is fighting a legal battle for the sexual abuse of deaf men, but that is not just one case. It stands for all the other almost

11,000 allegations of sex abuse of minors against 4,400 priests. S Rajagopalan from Washington and Nandini Jawli from London tell you how the Roman Catholic Church has breached the popular trust like never before

Adhik Maas in Hindu calendar : Achyut Railkar, The Organiser, New Delhi, May 9, 2010, p. 16.

The foolproof calendar system has been in existence since ancient Vedic times. It has undergone certain variations due to regionalisation but the system is faultless and is inherited from *Jyotish Vedanga* (14th century BC). It has been standardised subsequently in *Surya Siddhant* by astronomers Aryabhatta (5th century), Varahmihira (6th century) and Bhaskara (12th century). Hindu calendar system has five important parts named *panchang* consisting of *tithi, vasara, nakshatra, yog* and *karana*.

Rise and fall of the river Saraswati : Dr Ish K Arora, The Organiser, New Delhi, May 9, 2010, p. 18.

The Rig Veda, no doubt, is the most ancient epic in the world. A large fluctuations in the behaviour of the river Srasuti (Vedic name of the Saraswati) have been described in the Rig Veda in about sixteen *shlokas*, in which its heavy flow, low flow to no flow and even changes in its course have been mentioned.

As FBI lands in Pak, Now U.S. is enemy No 1 in Pakistan public's mind : Pervez Hoodbhoy, The Mail Today, New Delhi, May 9, 2010, p. 5.

As anti-US lava spews from the fiery volcanoes of Pakistan's private television channels and newspapers, a collective psychosis grips the country's youth. Murderous intent follows with the conviction that the US is responsible for all ills, both in Pakistan and the world of Islam. *The writer teaches at Quaid-i-Azam, University, Islamabad.*

Soon, rare archival records are likely to be thrown open to public : Kartikeya, The Times of India, New Delhi, May 12, 2010, p. 11.

Currently, only research scholars have access. While there are records from the 16th and 17th centuries - and in some cases even earlier - the documents are found in regular series from 1748 onwards. The documents are in English, Arabic, Hindi, Persian, Sanskrit, Urdu and also other languages. Things these records throw light on include the activities of the Mughals and the East India Company, British rule and the emergence and growth of the freedom struggle in India. Over the years, the records have been obtained from different countries such as Canada, Germany, Malaysia, Myanmar, UK, US, France and Russia. National Archives has: 38,75,332 files, 64,221 volumes, 1,10,332 maps, 3,601 bills passed by Parliament, 1,065 treaties signed by various rulers and govt.

Misogynist Mullahs and their flurry of fatwas : Yogidner Sikand, The Times of India, New Delhi, May 13, 2010, p. 13.

A whole new class of Muslim women believes that there's a need to study and interpret Islam from a feminist perspective, cleansing it of its deep-rooted patriarchal, indeed misogynist, tradition of mullah scholarship.

The advantage of being Viswanathan Anand : Jaideep Undurti, The Indian Express, New Delhi, May 14, 2010, p. 11.

Anand was defiant in defeat, resolute in the struggle and magnanimous in victory. While a stunned Topalov could barely speak, Anand complimented the organisers and called his rival a great attacking player. And it is this - that make Viswanathan Anand a true champion of our times.

Cast out caste politics : Kalyani Shankar, The Pioneer, New Delhi, May 14, 2010, p. 9.

Whether a caste-based Census will be socially divisive or help establish equality for all remains debatable. But the grounds on which Vallabhbhai Patel scrapped such an exercise holds good even today. We must go beyond caste identities and politics to establish a casteless society.

In reverse gear : Barkha Dutt, The Hindustan Times, New Delhi, May 15, 2010, p. 12.

The decision to include a caste-count in the census was taken in a hurry and under pressure from allies. But it could take India back by decades.

This is no Iron Lady : Ajey Lele, The Pioneer, New Delhi, May 15, 2010, p. 9.

Hilary Clinton's 'tough' posture vis-a-vis Pakistan in the wake of last fortnight's failed Times Square bombing comes with a ring of *deja vu*. But the 'trust deficit' in US-Pak relations is now open knowledge.

An era ends, Bhairon Singh no more : Lokpal Sethi, The Pioneer, New Delhi, May 16, 2010, p. 1.

One of the BJP's tallest leaders 87 year old Bhairon Singh Shekhawat, died after being struck by a respiratory problem. Bhairon Singh, resigned from the police after rising to the post of Assistant Sub-Inspector, met the Jana Sangh and the Sangh general secretary. Both the office-bearers were sufficiently impressed to give him the ticket for Danta Ramgarh constituency. Bhairon Singh won the election and became an MLA. He never looked back after that winning each Assembly election, except the 1972 poll, till he became Vice-President of India in 2002.

Chinese bubble may burst, US pressure on China is interesting : Ashwani Mahajan, The Organsier, New Delhi, May 16, 2010, p. 3.

Fearing possible inflation, Beijing's efforts to curb

Select Articles (contd.)

business cycles are likely to curb growth as well, because these efforts may have far reaching impact on international demand. On the one hand, Chinese Central Bank has started curbing credit and on the other hand Chinese Government has started cutting subsidies, which has caused a dip in Chinese products exports to the rest of the world. It may be noted that China has faced its first ever trade deficit to the tune of US $7.24 billion in the month of March 2010, after a gap of 6 years.

UPA is frightened about Modi : M V Kamath, The Organiser, New Delhi, May 16, 2010, p. 4.

The truth about the allegations against Modi is now coming out, as *India Today* (April 5) has noted. It is clear that many of the charges made against Modi were deliberate lies, sponsored by the so-called Human Rights activists.

This is how it all began : MSN Menon, The Organiser, New Delhi, May 16, 2010, p. 4.

Women enjoyed a very high status in Aryan society. Beauty, purity, suspiciousness - these were associated with women. Monogamy was the ideal. "May you two dwell here. Be not parted. Enjoy the full span of your life, sporting with sons and grandsons." This was the benediction to newly married couples.

Instead of fighting terrorism, UPA is busy inventing Hindu terror : Dr Pravin Togadia, The Organiser, New Delhi, May 16, 2010, p. 8.

Afzal Guru must be hanged immediately. Perhaps government would do so promptly with Kasab, but without attacking Pak (another diplomatic and vote greed double game!) but at the same time government would slap more and more cases on Hindus and Hindu organisation! Political balancing for votes is more important these days than safety of Bharat. But Bharat is watching all the double games!

Dialogue with Pakistan, will it really reduce trust deficit? : Gen V. P. Malik (retd), The Tribune, New Delhi, May 18, 2010, p.8.

Neither the government nor the public has much expectations from the India-Pakistan dialogue going to begin soon till there is a change in the Pakistani mindset and policy on cross-border terrorism.

Who are Hindus? : Jagmohan, The Pioneer, New Delhi, May 20, 2010, p. 9.

Historians, mostly Europeans, formulated and propagated the fiction that light-skinned nomadic tribes from Central Asia, known as Aryans, invaded India in 1500-1000 BC, and their descendents are known as Hindus! This fallacy now stands exposed. It was found that much before the 'Aryan Invasion" there existed a mature urban civilisation in India.

What's Gotra Got to do with it? : Chetan Bhagat, The Times of India, New Delhi, May 22, 2010, p. 20.

As if it wasn't good enough to divide people on caste, we needed one more level of sub-caste slicing to ensure as many Indians hate each other as possible.

Time Wrap : Upendra Sarup, The Pioneer, Foray, New Delhi, May 23, 2010, p. 3.

Does man pass through time or is it the other way round? The mystery surrounding it has always fascinated man. Movies have been made on time travel and how man has tried to master it. But is it possible?

The Guru's brave Banda : Maj-Gen Kulwant Singh (retd) : The Tribune, Spectrum, May 23, 2010, p. 3.

The battle of Chapper Chiri is daring saga of Sikh valour, which broke the myth of invincibility of the Mughal army. Banda Singh Bahadur's triumph was the victory of the good over the evil. The Mughal army was completely routed and Wazir Khan was killed. The Sikhs relentlessly pursued the fleeing Mughals till the gates of Sirhind, which they reached lat nightfall, killing most of the fleeing Mughal soldiers.

Most corrupt, India may soon earn this tag : Dina Nath Mishra, The Pioneer, Foray, New Delhi, May 30, 2010, p. 5.

The Government's efforts to curb corruption in the country are only limited to the creation of committees which haven't done anything concrete till date. If the current trend continues, India may soon dislodge Somalia and top the list of most corrupt countries.

India must secure its web space with right policies : Priti Bajaj, The Pioneer, New Delhi, May 30, 2010, p. 8.

Ever since India has emerged as a super power in cyber zone, the threats to its cyber world have increased manifold. The internet has bred an elite class of criminals who are organised, well-funded and far more technologically sophisticated than most law enforcement officials. The policymakers, however, seem to be oblivious of the risk that such cyber threats pose to the security of the nation which will multiply many times, once programmes such as Unique Identity (UID) project is rolled out.

Make J&K a truly Indian state : Dr. Pravin Togadia, International General Secretary, VHP, The Hindu Voice, May 2010, p. 23.

The new bill of J&K girls marrying out of J&K losing rights in J&K and Justice Shagir Ahmed's hush-hush report - autonomy to J&K - are taking the state back to per - 1953 status, which is absolute treason towards Bharat. It is a political jehad.

Select Articles (contd.)

Combating Maoist Terror : SK Sinha, The Pioneer, Agenda, New Delhi, June 6, 2010, p. 1.

Maoists kill three people every second day. Yet, our policy-makers and 'liberal' intelligentsia are busy looking out for an ever elusive 'root cause'. It is absurd to quibble over whether fighting Maoists is a centre of a state responsibility. What is required is that both the federal entities conduct operations in a coordinated manner.

SK Sinha looks into the issue and tries to find a way out of the quagmire.

Bengal has lost its taste for the Left : Monobina Gupta, The Times of India, New Delhi, June 6, 2010, p. 26.

The truth is that it's not just some sections but large sections of peasants, tribals, workers, and intellectuals - once staunchly loyal to the party - have moved away. Right now, Bengal's intellectuals are engaged in a passionate debate over *paribartan and their role in effecting transformation.*

Misplaced sympathy for Hamas : Barry Rubin, The Pioneer, New Delhi, June 7, 2010, p. 9.

A repressive fascist Hamas that has oppressed the people of the Gaza Strip, murdered Palestinian Authority supporters, used civilians as human shields, needs to be shamed rather than placated. Hamas has now ruled the Gaza Strip for about five years. Yet it has preferred continued war with Israel, a full-scale military mobilisation, and hardline policies rather than working for the development of the area and jobs for the people.

Karma catches up with US : Sandhya Jain, The Pioneer, New Delhi, June 8, 2010, p. 8.

The apocalyptic deep-sea oil spill in the Gulf of Mexico on April 20 is destined to cast a long shadow on all life in the vast biosphere. The oil spill is a severe warning from Mother Nature; an admonition to end the ceaseless exploitation of Earth and its resources, to stop the disrespectful attitude that Man has the unchallenged right to grab and consume anything and everything in the Creation, to destroy wantonly for today's enjoyment, with no thought of tomorrow, and with no sense of responsibility for the generations to come.

Decline in quality, MNCs reluctant to hire technical manpower : Vikram Chadha, The Tribune, New Delhi, June 8, 2010, p. 11.

Though we produce about 3 lakh engineers each year, not more than 25 per cent of our skilled human resources are employable.

Facing the AfPak reality, US response is confusing : G. Parthasarathy, The Tribune, New Delhi, June 10, 2010, p. 10.

The Pentagon's current Kayani-centric policy of acting as apologists for the Pakistani military establishment virtually amounts to abetment of terrorism against their army in Afghanistan and their population at home.

The first time of asking, We must learn from the history of counting caste in India : Padmanabh Samarendra, The Indian Express, New Delhi, June 10, 2010, p. 10.

Since there was no uniformity in the notion of caste, the identification, counting and classification of such groups posed insurmountable problems from its commencement till it was finally abandoned in 1931.

No military camouflage : Michael Wines, The Indian Express, New Delhi, June 10, 2010, p. 11.

"China and the US continue to have fundamentally different values, goals and capabilities," China's reluctance to press for the truth in the sinking of a South Korean ship, and attack that an international investigation determined was the work of North Korea

Marriage Act altered to aid Minister daughter's divorce? : Abraham Thomas, The Pioneer, New Delhi, June 12, 2010, p. 5.

The amendment timing hasn't been missed, especially, since the law Commission of India had way back in 1978 (in its 71st Report) recommended the inclusion of irretrievable breakdown of marriage as a separate ground for divorce.

The legacy of the Emergency : Subramanian Swamy, The Pioneer, New Delhi, June 19, 2010, p. 9.

Many people assume that the Constitutional safeguards effected in the post-1977 era make up a permanent bulwark against a repeat of June 25, 1975. But, the tradition of 'fixing' democratic dissent is a permanent legacy of the Emergency. Those in power do not have to declare an Emergency to be above the law and hollow out democracy. The struggle against the Emergency thus paradoxically has produced a complacency which will debilitate civil society and make it impotent when the *de facto* Emergency is finally acknowledged and it becomes necessary to oppose it.

Seraiki schools of terror : Imtiaz Ahmed, The Hindustan Times, New Delhi, June 20, 2010, p. 19.

Pakistan's attempts at Madrassa reform have largely ended in failure, more so because of the half-hearted attempts of the government and less because of resistance from religious quarters. This week it was revealed the the Punjab government, which is a PML-N government, gave a grant of Rs 82 million for schools run by the Jamaat-ud-Dawah (JuD), after it was banned.

Select Articles (contd.)

Speak the truth, Bhopal needs a solution : Dina Nath Mishra, The Pioneer, Foray, New Delhi, June 20, 2010, p. 5.

The truth about the Bhopal tragedy is still being shielded by the Congress. No one has revealed whether Rajiv Gandhi met Warren Anderson at the time of the tragedy and his hurried departure to the US. The truth must be revealed by the Congress at once.

Sordid tale of evil interest : Balbir Punj, The Pioneer, New Delhi, June 21, 2010, p. 8.

It is now well established that the critical command for the fast track release of Warren Anderson, among the prime accused in the 1984 Union Carbide disaster in Bhopal, came from none other than then Prime Minster Rajiv Gandhi.

A karmic comeback : Sandhya Jain, The Pioneer, New Delhi, June 22, 2010, p. 8.

Congress president Sonia Gandhi's spin doctors should advise her that when things get tough, silence it perceived as fearful complicity. Warren Anderson was given free passage to India, it was simply gross to deflect responsibility from the then Prime Minster Rajiv Gandhi.

Caste census and its implications : CP Bhambri, The Pioneer, New Delhi, June 26, 2010, p. 9.

How can counting human being as cows, buffaloes and goats lead to politico-socio-economic justice for the backward castes? Future generations will condemn today's politicians for allowing this to happen.

Big brother and two sisters : Prakash Singh, The Pioneer, Agenda, New Delhi, June 27, 2010, p. 1. & 2.

Manipur was an ancient kingdom with 2, 000 years of recorded history. No wonder Manipuris were hurt when Nagas got full-fledged statehood before them. Now, with the NSC(IM) clamouring for greater Nagaland, they fear the centre might again let them down by allowing the four Manipuri districts to be merged with Nagaland.

Rishi who foresaw the future : Claude Arpi, The Pioneer, New Delhi, June 29, 2010, p. 9.

Described by India's British rulers as the 'most dangerous man', Sri Aurobindo arrived in Pondicherry a hundred years ago with nothing more than a grand vision for humankind. Long after his death, the vision remains intact. And perhaps offers the best solution to the conflict between nations we see today.

Israel demonised by biased media : Barry Rubin, The Pioneer, New Delhi, June 30, 2010, p. 9.

Story after story appears in newspapers criticising Israel for deeds that have never been committed or are manufactured as part of the Arab propaganda to defame the jewish state. It's a throwback to medieval time, when anti-Semitism was fashionable.

Book Reviews

- 330 Truths You Must Know - Before it is Too Late. Compiled & Edited by P. Deivamuthu, Editor, Hindu Voice, 5th edition 2007, Published by Hindu Voice, 210 Abhinav, 2nd floor, Teen Dongri, Yeshwant Nagar, Goregaon West, Mumbai-400062.

The book expresses the agony of a nationalist Hindu exposing the fraud of pseudo secular Hindus who have been at the helm of affairs for most of time in post independent India. This is explained through raising simple questions which the common man is bound to ask. Hindu majority being secular is yet at across road, requiring a leadership of Arjuna the fighter and Krishna the philosopher. 330 truths are stated in interrogative formulations. Some of the questions are given below. For example:- Population explosion - In 1947, when India was partitioned, the Hindu population in Pakistan (west) was about 24%. Today it is not even 1%. In 1947, when India was partitioned, the Hindu population in East Pakistan (Now Bangladesh) was 30%. Today it is about 7%. In our own Kashmir valley, the Hindu population was 5%. Today, it is less than 1%. In many places within India - like Mallapuram, Kozhikode (both in Kerala), Tripura, Nagaland, Mizoram - Hindus are being ethnic-cleansed. Time is not far off when Hindus will be declared an "endangered species", thanks to many "over-secular" Hindus. If you want this not to happen, O Arjun*, (*Arjun is symbolic: It could be you) Arise and Awaken Your Hindu Nation.

Wilson John : Coming Blowback-How Pakistan is Endangering the World, Rupa, Rs 595/-, pp 296.

Imtiaz Gul : The Al Qaeda Connection, Penguin Viking, Rs 499/-, pp 308.

There are two jihads in Pakistan. The quiet one is the slow spread of Islamicism within Pakistani society, the primary topic of Wilson John's book. The loud one is being fought along the Afghan-Pakistan border-and is partly dissected in Imtiaz Gul's book. The first kind of jihad is more insidious. John opens by describing how the student wings of Islamicist parties slowly infuse their ideology into Pakistan's Punjab University through intimidation and recruitment. Shia students are made to offer prayers off campus, Birthday parties are trashed as "foreign" and literature of Urdu writers like Saadat Hasan Manto is suppressed.

Alongside this is the "spread of countless small and big schools, *madaris*, women and youth organisations, run by radical political groups like the Jamaat e Islami and other extremist organisations similar to the *Jamaat ud Dawa* (Lashkar-e-Tayyeba's civilian wing), all over the country'. Taking over schools is not just about recruitment, it's also

Book Reviews (contd.)

about taking over Pakistan. *Lashkar* co-founder, Zafar Iqbal, publicly says "education and *jihad*" are equally important for his organisation.

That the Pakistani State, and most notably the military, encourages this development is well-trod territory. What is less clear is "how civil society, at least a significant part of it, either knowingly or otherwise, has encouraged or actively participated in radicalising the country". In this, John probably errs in conflating the Islamicism of conservative movements like the *Jamaat* with that of radical groups like the Lashkar. They overlap, but differ in their political objectives.

John makes useful distinctions between different varieties of *jihadi* recruits. There is the poverty-driven 'bulk' terrorist. Some go to fight in Kashmir, but most, John notes, stay to fight for Islam inside Pakistan. Gul's book is half a detailed account of the battle between the Pakistan Army and the Taliban, especially the 2004 Kaloosha Operation. It is also a Taliban encyclopedia, listing key tribal and militant leaders along with potted biographies.

The Al Qaeda Connection repeats a standard Pakistani narrative: of how the United States "originally sowed the seeds of militant Islam in the region" and is now asking Pakistan to undo the resulting *jihad* harvest. More insightful bits have to be gleaned from the text: the tribal basis for the split between the Pakistan and Afghan Taliban's; the Saudi influence on the anti-Shia terrorist group *Sipah e Sahaba*, and how most tribals insist the Taliban could not have "a free run" without the okay of the Inter-Services Intelligence (ISI).

The Pakistani military is accused of being a puppet-master for the militant groups by both authors. Gul points a finger as much at the US however. But neither have thrown any new light onto the shadowy ties between military and *mullah*. What they do provide are worm's eye views of two aspects of the violence and angst that wracks Pakistan. "Pakistan", writes John, "has been at war with itself since it was carved out of the Indian subcontinent."

-Pramit Pal Chaudhuri

Courtesy - The Hindustan Times

Also Read, The Afghan: Fredrick Forsyth's gripping 2006 thriller deals with a planned al-Qaeda attack on an undisclosed target. The plot moves from Pakistan to Trinidad to Washington.

Dr. K.V. Paliwal : Atrocities on Hindus by Christian Missionaries in Goa, Hindu writers forums, 129, BSIG, Rajouri Garden, New Delhi-27.

Oppression of Hindus by Muslim invaders and by the western missionaries is a heart rending story faithfully and Researchfully narrated by the author. This booklet talks specifically of the atrocities committed by portugese Catholics in Goa. It is contrasted with the munificence they received earlier from the Hindu Rajas. It is clearly a case which proves that Indian political morality as it evolved during the ages did not stand up to the unscrupulous and Machiavellian tempers of the foreign invaders. The dreadful 'spanish inquisitions' played heavoc with the native Hindus as well as men and women of other religions. Anti Hindu laws were enacted and Hindus were tortured, performance of religious rites and ceremonies were banned. Christian sermons and practices were forced upon them and their racism was fully rampant. Hindu temples were demolished and large scale conversion took place from Hindus to Christianity. Torture and barbarism of the period has been examined and shown with all authentically by the author. Dr. Paliwal has done great service to preserve this piece of collective memory for the benefit of nation. Dr. Paliwal laments that will Hindus ever learn a lesson from the History and stand up to be counted honourably as a Hindu?

Political notes

Divide & rule, again?

Religion, language and caste are important aspects of Indian nationalism. Ved Pratap Vaidik, the famous sociologist and follower of Arya Samaj, has put many bitter facts into the current debate on caste. There was no caste system in the original *Sanatan Hindu* religion. That is why we don't find any surname or caste 2000 years back. Why do you not see any Sharma, Verma, Singh and Gupta attached to Kalidas, Kautilya, Banbhatta, Bhavbhuti, Surdas, Tulsidas, Keshav, Kabir, Bihar and Bhushan? There was no surname attached to them. Actually, the British put the poison of caste into the Indian society in 1857 when there was national unity in the country for the first time. To defeat the unexpected rise of nationalism, the British prepared a stratagem and started dividing society on the lines of caste and religion. That is why in 1871, the British included the question of caste into census so that there would be continuous division in society. Today Lalu, Mulayam and Sharad Yadav are doing the same type of politics as the British had done in the past and with the same intention. Their political poison will destroy the India of the 21st century and caste-based census is the first step towards this direction.

-Hari Shankar Vyas

Courtesy - Pioneer

Vital statistics

Khap Row, Why Jat's the way look at The Maths

The Jats constitute 28-30 per cent of voters, make a difference in almost 40 per cent seats. Have long supported Devi Lal Clan. The surprise 2005 victory of Congress (67 of 90 seats) was on account of Jats shifting allegiance. 29 of 33 Jat MLAs who won belonged to the party. INLD got 9 seats. Chautalas bounced back 2010, got 32 sets to Congress's 40. Jat vote, it was clear, had moved back to the INLD.

RNI No. 72478/99

सांस्कृतिक गौरव संस्थान के प्रकाशन

	पुस्तक का नाम	मूल्य
	श्री रघुनन्दन प्रसाद शर्मा द्वारा लिखित पुस्तकें	
1.	**विश्वव्यापी भारतीय संस्कृति**	95.00
2.	**स्मृतियों में भारतीय जीवन पद्धति**	90.00
	श्री पुरुषोत्तम द्वारा लिखित पुस्तकें	
3.	**इस्लाम के सैनिक**	20.00
4.	**मुस्लिम राजनीतिक चिंतन और आकांक्षाएं**	30.00
5.	**तालिबान इस्लाम और शान्ति**	25.00
6.	**भारत में पाकिस्तान की आइ.एस.आई. की घातक गतिविधियां**	15.00
	लेखक.: कर्नल श्याम कुमार,अनुवाद:डॉ. युद्धवीर सिंह	
7.	**हमारे मूल कर्तव्य**	80.00
	लेखक : डॉ. विजयनारायण मणि त्रिपाठी	
8.	**भारत में सेक्युलर राजनीति**	60.00
9.	**हिन्दुत्व के स्वर : सत्य के दर्पण में**	75.00
	लेखक : डॉ. कैलाश चन्द्र	
10.	**राम वन गमन स्थल : *डॉ. राम अवतार शर्मा***	25.00
11.	**हिन्दुस्थान में मदरसे : *श्री देवेन्द्र कुमार मित्तल***	120.00
12.	**गीतापदार्थकोष**	175.00
	ले. महात्मा गाँधी जी एवं डॉ. योगेन्द्र पाल आनन्द	
13.	**The Nefarious Activities of Pak's I.S.I.**	15.00
	लेखक : कर्नल श्याम कुमार	
	श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल द्वारा रचित पुस्तकें	
14.	**Minorities and Social Justice: Problems&Policy Options**	20.00
15.	**The Glory that is Hindutva**	10.00
16.	Striving for progress of self destruction	10.00
17.	And You shall be set free (हिन्दी-अंग्रेजी)	20.00

अन्य प्रकाशन

1.	माँ की पुकार : श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल	
2.	छद्म सेक्यूलरवादियों और इस्लाम का असली चेहरा : *श्री कृष्णस्वामी*	15.00
3.	हिन्दू नाम-तथ्य और सत्य : *स्वामी विज्ञानानंद*	20.00
4.	क्या हिन्दू मिट जाएगा : *श्री सच्चिदानंद चतुर्वेदी*	90.00
5.	राष्ट्रवाद और भारतीय इतिहास का विकृतिकरण : *डॉ. नवरतन एस. राजाराम*	15.00
6.	ईसाइयत का भारत को निगलने का कुचक्र : *डॉ. नवरतन एस. राजाराम*	10.00
7.	आधुनिक युग में इस्लाम : भ्रम और सच : *डेविड फ्राउले (वामदेव शास्त्री)*	10.00
8.	हिन्दुत्व और राष्ट्रोत्थान : *डेविड फ्राउले (वामदेव शास्त्री)*	10.00
9.	सफेद चोला काला दिल : *श्री मोहन जोशी*	40.00
10.	Secularism Betrayed Secularism distorted Hypocrisy of Secularism : *Sh. Anandshankar Pandya*	70.00
11.	Muhammad and the rise of Islam : *Sh.D.S.Margoliouth*	60.00
12.	Select Hindu name : *Sh. Hari Babu Kansal*	90.00
13.	Imperialist Character of Islam : *Sh. P.R.Kundu*	20.00
14.	Vandematrum Album : *Mrs. Padma Sundaram*	75.00
15.	Don't say we didn't warn you great thinkers on Islam : *Rana Pratap Roy*	60.00
16.	Muslim Politics in Secular India : Hamid Dalwai	60.00
17.	The real patriots of Hindustan - *Dr. Madhuri Madhok & Dr. R.N.Gupta*	30.00

श्री अनवर शेख द्वारा रचित पुस्तकें :-	
इस्लाम : कामवासना और हिंसा (हिन्दी अनुवाद)	100.00
इस्लाम-अरब साम्राज्यवाद	60.00
जिहाद के प्रलोभन : सैक्स और लूट	10.00
Why Muslims Destroy Hindu Temples	10.00
Islam, Sex & Violence	85.00
Islam	15.00
Islam The Arab Imperialism	60.00
Quran	25.00
Islam & Terrorism	195.00
श्री जयदीप सेन द्वारा रचित पुस्तकें :-	
भारत में जिहाद	15.00
Jihad in India	25.00
श्री रघुनन्दन प्रसाद शर्मा द्वारा रचित पुस्तकें :-	
भारतीय इतिहास का विकृतिकरण	60.00
श्री कृष्णवल्लभ पालिवाल द्वारा रचित पुस्तकें :-	
इस्लाम ईसाइयत और हिन्दू धर्म	20.00
हिन्दू जागरण -क्यों और कैसे ?	60.00
आओ राष्ट्र रक्षा में जुट जाएं	2.00
भारतीय महापुरुषों की दृष्टि में इस्लाम	25.00
जिहादियों को जन्नत-केवल कियामत बाद	20.00
मैक्समूलर द्वारा वेदों का विकृतिकरण : क्या, क्यों और कैसे	40.00
जिहाद	30.00
Challenges before the Hindus	20.00
Two faces of Jihad	20.00
The meaning of Jihad	10.00
Max Muller- A Secular Christian Missionary & Distorter of Vedas	20.00
Jannat - A miracle for Muslims	5.00
Jehad in the way of Allah	30.00
Jehad and Jannat in Hadiths	30.00
Eminent Indians on Islam	40.00
श्री पुरुषोत्तम द्वारा रचित पुस्तकें :-	
भारतीय मुलसमानों के हिन्दू पूर्वज मुसलमान कैसे बने	25.00
सूफियों द्वारा भारत का इस्लामीकरण	10.00
भारत के इस्लामीकरण के चार चरण	100.00
Islamisation of India by the Sufis	30.00

बुक-पोस्ट

सेवा में,

____

____

____

____

____

____

प्रेषक : सांस्कृतिक गौरव संस्थान
डाक पेटी संख्या 5016, रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110 022

संस्थान की वेबसाइट देखें - <www.hindusthangaurav.com>